Centre for Distance & Online Education
(CDOE)

BACHELOR OF ART

Introduction to Military History

C24MDC108T



Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar - 125001

CONTENTS

इकाई Lesson No.	Title of the Lesson	Page No.	
		From	To
1.	प्राचीन भारत में सैन्य व्यवस्था: एक विकास-यात्रा	3	30
2.	मध्यकालीन भारत में सैन्य व्यवस्था	31	57
3.	औपनिवेशिक काल में सैन्य व्यवस्था	58	82
4.	उपनिवेश काल में भारतीय सिपाहियों द्वारा लड़ी गई लड़ाइयों का मूल्यांकन	83	106
5.	1857 का विद्रोह एवं भारतीय सेना के सुधार	107	130
6.	विश्वयुद्धों के दौरान भारतीय सेना	131	155

Subject: Introduction to Military History	Author: Dr. Mahender Pal
Subject Code: C24MDC108T	Vetter:

इकाई 1

(LESSON-1)

प्राचीन भारत में सैन्य व्यवस्था: एक विकास-यात्रा

(MILITARY IN ANCIENT INDIA: AN EVOLUTION)

इकाई की संरचना (Structure)

1.0 अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

1.1.1 सैन्य शब्द का अर्थ

1.1.2 सेना के गठन का दायरा और कारण

1.1.3 प्राचीन सैन्य इतिहास (Military History) के स्रोत

1.1.4 सेना का महत्त्व

1.2 वैदिक काल में सैन्य संगठन (Military Organisation in the Vedic Period)

1.2.1 कबीलाई युद्ध: गण और विश

1.2.2 सेनानायक के रूप में राजा

1.2.3 आरंभिक हथियार और लड़ने के ढंग

1.2.4 धर्मयुद्ध (Righteous War) की धारणा

1.2.5 ऋग्वैदिक लड़ाइयाँ और दाशराज्ञ युद्ध

1.2.6 उत्तर-वैदिक काल के बदलाव

1.3 महाजनपद काल की सैन्य व्यवस्था (Military System in the Mahajanapada Period)

1.3.1 सोलह महाजनपद और स्थायी सेनाएँ

1.3.2 मगध का उभार: गणराज्य (Republic) और राजतंत्र (Monarchy)

1.3.3 आरंभिक किलेबंदी (Fortification) और नगरों की रक्षा

1.3.4 सिकंदर का आक्रमण और भारतीय प्रतिरोध

1.3.5 नंदों की सैन्य शक्ति

1.4 मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था (Mauryan Military System)

1.4.1 मौर्य सेना की बनावट

1.4.2 प्रशासन और भर्ती (Recruitment)

1.4.3 गुप्तचर, रसद (Logistics) और युद्ध-विभाग

1.4.4 हाथी सेना: भारत की अपनी देन

1.4.5 कौटिल्य के छह प्रकार के बल

1.4.6 मेगस्थनीज़ की बताई युद्ध-परिषद

1.4.7 व्यूह-रचना

1.4.8 कलिंग युद्ध और अशोक की धम्म नीति

1.5 मौर्यों के बाद सैन्य विकास (Post-Mauryan Military Developments)

1.5.1 हिंद-यूनानी, शक और कुषाण प्रभाव

1.5.2 व्यापार और आक्रमण के रास्तों से तकनीक का लेन-देन

1.5.3 शुंग, सातवाहन और खारवेल

1.5.4 संगम युग के दक्षिण भारत की सैन्य परंपरा

1.6 गुप्तकालीन सैन्य व्यवस्था (Gupta Military System)

1.6.1 सेना में सामंती (Feudal) तत्त्व

1.6.2 हाथियों और पैदल सेना पर भरोसा

1.6.3 उत्तर गुप्त काल में ढीली पड़ती केंद्रीय कमान

1.6.4 समुद्रगुप्त की दिग्विजय (Conquest of All Directions)

1.6.5 गुप्तकाल के सैन्य अधिकारी

1.6.6 हूणों के हमले और स्कन्दगुप्त

1.6.7 हर्षवर्धन की सेना

1.7 अलग-अलग युगों के हथियार और सैन्य तकनीक (Weapons and Military Technology through the Ages)

1.7.1 काँसे से लोहे तक

1.7.2 धनुष, तलवार, गदा और घेराबंदी (Siege) के यंत्र

1.7.3 किलेबंदी की तकनीक

1.7.4 धनुर्वेद (Science of Archery) और सैनिक शिक्षा

1.7.5 अर्थशास्त्र और मनुस्मृति में किलों के प्रकार

1.8 चतुरंगबल: एक समग्र धारणा (Chaturangabala: An Integrated Concept)

1.8.1 अलग-अलग राजवंशों में इसकी निरंतरता

1.8.2 फ़ारसी, यूनानी और चीनी सेनाओं से तुलना

1.9 प्राचीन भारत की नौ-शक्ति (Naval Power of Ancient India)

1.9.1 नदियों और तटों पर नौसैनिक गतिविधियाँ

1.9.2 व्यापार और समुद्र की सुरक्षा

1.10 सैन्य चिंतन और ग्रंथ (Military Thought and Texts)

1.10.1 कौटिल्य का अर्थशास्त्र

1.10.2 कूटनीति (Diplomacy) और अंतिम उपाय के रूप में युद्ध

1.10.3 महाभारत और रामायण का सैन्य चिंतन

1.10.4 कौटिल्य का मंडल सिद्धांत (Mandala Theory)

1.10.5 कौटिल्य के अनुसार युद्ध के प्रकार

1.11 निष्कर्ष: क्या बदला और क्या बना रहा (Conclusion: Change and Continuity)

1.11.1 विकास की मुख्य दिशाएँ

1.11.2 आरंभिक मध्यकाल के लिए छोड़ी गई विरासत

1.12 अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

1.13 सारांश (Summary)

1.14 शब्दावली (Key Terminology)

1.15 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

1.16 अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1.17 संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

1.0: अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई को पढ़ लेने के बाद आप:

- 'सैन्य' शब्द का अर्थ, उसका दायरा और सेना की ज़रूरत क्यों पड़ी, यह समझा सकेंगे।
- प्राचीन भारत की सैन्य व्यवस्था (Military System) जानने के मुख्य स्रोतों को पहचान सकेंगे।
- वैदिक युग से गुप्त युग तक सेना के संगठन में आए बदलावों को क्रम से बता सकेंगे।
- मौर्यों के सैन्य प्रशासन, उनके गुप्तचर (Spy / Intelligence) तंत्र और हाथी सेना की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे।
- उस समय के हथियारों, लड़ने के तरीकों और किलों की बनावट का विश्लेषण कर सकेंगे।
- चतुरंगबल (Four-fold Army) की धारणा और सदियों तक उसके बने रहने का कारण स्पष्ट कर सकेंगे।
- प्राचीन भारत की नौ-शक्ति और कौटिल्य जैसे चिंतकों के सैन्य विचारों से परिचित हो सकेंगे।

1.1: प्रस्तावना (Introduction)

समाज जब से बना है, अपनी रक्षा का सवाल भी तभी से उसके साथ है। छोटे-छोटे कबीले आगे चलकर जनपद बने, जनपदों से बड़े राज्य बने और राज्यों से साम्राज्य। हर कदम पर एक संगठित, हथियारबंद दल की ज़रूरत बढ़ती गई। भारत में यह सफ़र ऋग्वेद के कबीलाई संघर्षों से शुरू होता है और मौर्य तथा गुप्त राजाओं की सुगठित सेनाओं तक पहुँचता है। इस इकाई में हम इसी लंबी यात्रा के प्रमुख पड़ावों को देखेंगे।

1.1.1. सैन्य शब्द का अर्थ

'सैन्य' शब्द संस्कृत के 'सेना' से बना है। सेना से आशय उस प्रशिक्षित और अनुशासित समूह से है जिसे राज्य या समुदाय अपनी रक्षा करने, हमलों को रोकने और ज़रूरत पड़ने पर शत्रु को हराने के लिए तैयार रखता है। पर सेना केवल लड़ने वाले लोगों की भीड़ नहीं होती। उसके पीछे हथियार, प्रशिक्षण, अनुशासन (Discipline), नेतृत्व, प्रशासन और युद्ध की नीति, ये सब मिलकर काम करते हैं। प्राचीन ग्रंथों में सेना के लिए 'बल', 'दण्ड' और 'चतुरंगिणी' (Four-limbed) जैसे शब्द भी मिलते हैं।

1.1.2. सेना के गठन का दायरा और कारण

सेना बनने के पीछे कई कारण रहे। कबीलों के बीच पशुओं, चरागाहों और पानी के स्रोतों को लेकर झगड़े होते रहते थे, इसलिए हथियारबंद लोगों का होना ज़रूरी था। जब राज्य बनने लगे तो राजा को अपना अधिकार जमाने और सीमाएँ बढ़ाने के लिए सेना चाहिए थी। भीतर के विद्रोह (Revolt) दबाने और कानून का पालन कराने में भी सेना काम आती थी। व्यापार के रास्तों, नगरों और सीमाओं की चौकसी भी उसी के ज़िम्मे थी।

धीरे-धीरे सेना का दायरा रणभूमि से बाहर फैल गया। प्रशासन, अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था, तीनों उससे जुड़ गए।

1.1.3. प्राचीन सैन्य इतिहास (Military History) के स्रोत

साहित्यिक स्रोत: सबसे ज़्यादा जानकारी ग्रंथों से मिलती है। ऋग्वेद समेत वेद, दोनों महाकाव्य, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, कामन्दक का नीतिसार, पुराण और बौद्ध-जैन साहित्य इसमें आते हैं। बाहर से आए लेखकों को भी नहीं भूलना चाहिए। मौर्य सेना की जो तस्वीर हमारे पास है, उसका बड़ा हिस्सा मेगस्थनीज़ की 'इंडिका' और बाद के यूनानी-रोमन लेखकों से आता है।

पुरातात्त्विक स्रोत: खुदाई में मिले हथियार, किलों के खंडहर, मुहरें, सिक्के और भित्तिचित्र। इनसे हमें उस समय की युद्ध-तकनीक का ठोस प्रमाण मिलता है।

अभिलेख (Inscription) और सिक्के: अशोक के शिलालेख (Rock Edict), समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति जैसे गुप्तकालीन लेख और अलग-अलग राजाओं के सिक्कों पर बने सैनिक चिह्न भी उपयोगी स्रोत हैं।

1.1.4. सेना का महत्त्व

प्राचीन भारत में सेना कई स्तरों पर काम करती थी। राजनीति में वह राज्य की स्थिरता का आधार थी। समाज में वह सुरक्षा का भरोसा देती थी। अर्थव्यवस्था में वह व्यापार-मार्गों और संसाधनों की रखवाली करती थी। और धर्म की दृष्टि से उसे राजधर्म का रक्षक माना जाता था। कौटिल्य ने राज्य के सात अंगों वाले सप्तांग सिद्धांत (Saptanga Theory) में 'बल' यानी सेना को भी गिना है।

1.2: वैदिक काल में सैन्य संगठन (Military Organisation in the Vedic Period)

वैदिक काल (लगभग 1500 से 600 ई.पू.) का समाज कबीलों में बँटा था। उस समय की सैन्य व्यवस्था सीधी-सादी थी, पर अपने काम में कारगर थी। उसकी जड़ में कबीले की एकता, पशुओं की रक्षा और नई ज़मीन पाने की चाह थी।

1.2.1. कबीलाई युद्ध: गण और विश

ऋग्वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार यानी 'कुल' थी। कुल से ऊपर 'ग्राम', फिर 'विश' और सबसे ऊपर 'जन' आता था। 'गण' शब्द किसी सामूहिक दल के लिए आता है, जो लड़ाई के समय एकजुट होकर सेना का रूप ले लेता था। 'विश' कबीले की एक शाखा थी और उसका मुखिया 'विशपति' लड़ाई में अपनी शाखा की अगुवाई करता था। ऋग्वेद में वर्णित दस राजाओं का युद्ध, जिसे दाशराज्ञ युद्ध (Battle of Ten Kings) कहते हैं, इस दौर की लड़ाइयों का सबसे अच्छा उदाहरण है। इसमें राजा सुदास ने दस कबीलों के गठजोड़ को हराया था।

1.2.2. सेनानायक के रूप में राजा

वैदिक राजा को 'गोप्ता' अर्थात् रक्षक कहा गया है। युद्ध छिड़ने पर वह खुद सेना के आगे रहता और प्रायः रथ पर सवार होकर लड़ता था। उसकी मदद के लिए 'सेनानी' नाम का अलग अधिकारी भी होता था, जिसका नाम रत्नियों (राजा के ख़ास सहयोगियों, Royal Officials) की सूची में आता है। लड़ाई से जुड़े फ़ैसलों पर सभा और समिति राजा को सलाह देती थीं।

1.2.3. आरंभिक हथियार और लड़ने के ढंग

वैदिक योद्धा धनुष-बाण, भाला (शक्ति), गदा और फरसा (परशु) चलाते थे। सबसे अहम साधन रथ था। घोड़े उसे खींचते थे और उस पर एक सारथी तथा एक योद्धा सवार रहता था। लड़ाइयाँ अक्सर खुले मैदान में होती थीं और ज़्यादातर गायों तथा ज़मीन के लिए लड़ी जाती थीं।

1.2.4. धर्मयुद्ध (Righteous War) की धारणा

भारतीय परंपरा में युद्ध को ताक़त दिखाने का साधन भर नहीं माना गया। उसके साथ नैतिक कर्तव्य का भाव भी जुड़ा था। धर्मयुद्ध के कुछ नियम तय थे: निहत्थे, घायल या शरण माँगने वाले पर वार नहीं

होगा, सूरज ढलने पर लड़ाई रुकेगी और आम लोगों को नुकसान नहीं पहुँचाया जाएगा। महाभारत में यह विचार सबसे विस्तार से मिलता है।

1.2.5. ऋग्वैदिक लड़ाइयाँ और दाशराज्ञ युद्ध

ऋग्वेद में युद्ध के लिए 'गविष्टि' (Search for Cows) शब्द आता है, जिसका सीधा अर्थ है 'गायों की खोज'। इसी एक शब्द से पता चल जाता है कि उस दौर में धन का सबसे बड़ा रूप पशु थे। चरागाह, नदी का पानी और उपजाऊ ज़मीन झगड़ों की आम वजहें थीं। ये संघर्ष केवल आर्यों और दास-दस्युओं के बीच नहीं थे। आर्य कबीले आपस में भी लड़ते थे।

ऋग्वेद के सातवें मण्डल में दाशराज्ञ युद्ध का वर्णन है। यह परुष्णी नदी (आज की रावी) के किनारे भरत कबीले के राजा सुदास और दस राजाओं के संघ के बीच हुआ। सुदास के पुरोहित वसिष्ठ थे, जबकि विरोधी पक्ष को विश्वामित्र का साथ मिला था। विरोधी संघ में पुरु, यदु, तुर्वश, अनु और द्रुह्यु जैसे कबीले थे। जीत सुदास की हुई और भरत कबीला आगे आ गया। बाद में भरतों और पुरुओं के मेल से कुरु जन बना।

इस लड़ाई से तीन बातें सीखी जा सकती हैं। पहली, संख्या कम हो तब भी अच्छे नेतृत्व वाली संगठित सेना जीत सकती है। दूसरी, नदी जैसी प्राकृतिक रुकावट को लड़ाई में हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है। तीसरी, पुरोहित केवल पूजा नहीं कराते थे, वे योद्धाओं का मनोबल (Morale) बढ़ाने और सलाह देने का काम भी करते थे।

1.2.6. उत्तर-वैदिक काल के बदलाव

उत्तर-वैदिक काल (लगभग 1000 से 600 ई.पू.) में आर्य पंजाब से आगे बढ़कर गंगा-यमुना के दोआब तक पहुँच गए। कुरु, पांचाल, कोशल, काशी और विदेह जैसे बड़े राज्य बने। सेना के ढाँचे में भी कई बदलाव आए।

- **राजा का बढ़ता रुतबा:** राजसूय, वाजपेय और अश्वमेध (Horse Sacrifice) जैसे यज्ञ राजा की शक्ति दिखाने का ज़रिया बन गए। अश्वमेध का घोड़ा जिन इलाक़ों से बिना रोक-टोक गुज़र जाता, उन्हें राजा के अधीन मान लिया जाता था।
- **रत्नी:** सेनानी (सेनापति), संग्रहीता (ख़ज़ांची), सूत (सारथी) और भागदुघ (कर वसूलने वाला) जैसे अधिकारी राजा के क़रीबी सहयोगी थे। इनमें सेनानी का पद ख़ास था।

- **लोहे का आगमन:** इस समय लोहे (श्याम अयस) की जानकारी हो चुकी थी। पहले इससे जंगल साफ़ हुए और खेती फैली, फिर धीरे-धीरे हथियार भी लोहे के बनने लगे।
- **सभा-समिति का कमज़ोर पड़ना:** राजा जितना ताक़तवर हुआ, ये संस्थाएँ उतनी कमज़ोर हुईं। युद्ध के फ़ैसले अब ज़्यादातर राजा ही लेने लगा।

कुल मिलाकर उत्तर-वैदिक काल वह दौर था जब कबीलाई सेना धीरे-धीरे राज्य की सेना में बदल रही थी। महाजनपदों की स्थायी सेनाओं की नींव यहीं पड़ी।

1.3: महाजनपद काल की सैन्य व्यवस्था (Military System in the Mahajanapada Period)

1.3.1. सोलह महाजनपद और स्थायी सेनाएँ

छठी सदी ई.पू. के आसपास राज्य स्थायी और वेतन पाने वाले सैनिक रखने लगे। मगध, कोशल, वत्स और अवन्ति जैसे बड़े महाजनपदों के पास पैदल सैनिकों, घुड़सवारों और रथों वाली नियमित सेनाएँ थीं।

1.3.2. मगध का उभार: गणराज्य (Republic) और राजतंत्र (Monarchy)

मगध के पास कई फ़ायदे थे। उसकी भौगोलिक स्थिति सुरक्षित थी, पास में लोहे की खानें थीं और उसके शासकों की सैन्य नीति साफ़ थी। बिम्बिसार और अजातशत्रु ने आक्रामक नीति अपनाकर दूसरे महाजनपदों को हराया और साम्राज्य की राह खोली। उसी समय वज्जि संघ जैसे गणराज्य भी थे, जहाँ सेना के फ़ैसले सामूहिक रूप से होते थे। अनुभव ने दिखाया कि राजतंत्र की एक हाथ वाली कमान गणराज्यों की सामूहिक व्यवस्था से तेज़ फ़ैसले ले पाती थी, और यही उसकी जीत का बड़ा कारण बना।

1.3.3. आरंभिक किलेबंदी (Fortification) और नगरों की रक्षा

नगरों को बचाने के लिए पहले मिट्टी और लकड़ी की चारदीवारी बनी, फिर उसे ईंट और पत्थर से पक्का किया गया। दीवार के बाहर खाई (परिखा) खोदी जाती थी और फाटकों पर पहरा बैठाया जाता था।

1.3.4. सिकंदर का आक्रमण और भारतीय प्रतिरोध

326 ई.पू. में मकदूनिया का सिकंदर उत्तर-पश्चिम भारत में घुसा। तक्षशिला के राजा आम्भि ने बिना लड़े हार मान ली, लेकिन झेलम (वितस्ता) के पार राज करने वाले पोरस (पुरु) ने डटकर मुकाबला किया। यूनानी लेखक इस नदी को हाइडेस्पीज़ कहते थे, इसलिए यह लड़ाई इसी नाम से जानी जाती है।

पोरस की सेना में पैदल सैनिक, घुड़सवार, रथ और बहुत से युद्ध-हाथी थे। सिकंदर ने बरसाती रात का फ़ायदा उठाया और नदी को एक दूसरी जगह से पार करके पोरस पर ऐसी दिशा से हमला किया जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी। बारिश से ज़मीन दलदली हो गई थी। भारी रथ कीचड़ में धँस गए और धनुर्धर अपने लंबे धनुष ज़मीन पर टिकाकर ठीक से नहीं चला पाए। घायल और डरे हुए हाथी उल्टे अपनी ही सेना को कुचलने लगे। पोरस हार गया, पर उसकी बहादुरी से प्रभावित होकर सिकंदर ने उसका राज्य उसे लौटा दिया।

इस लड़ाई ने भारतीय सेना की कुछ कमज़ोरियाँ सामने रख दीं: रथों पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा, हाथियों का बेकाबू हो जाना और तेज़ घुड़सवार दस्तों की कमी। आगे चलकर सिकंदर के सैनिकों ने व्यास नदी के किनारे आगे बढ़ने से मना कर दिया। माना जाता है कि मगध के नंदों की विशाल सेना का डर भी इसकी एक वजह था।

1.3.5. नंदों की सैन्य शक्ति

नंद राजाओं के समय मगध उत्तर भारत की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति बन गया था। पुराण महापद्मनंद को 'सर्वक्षत्रान्तक' और 'एकराट्' कहते हैं। यूनानी विवरणों के अनुसार नंदों के पास लगभग दो लाख पैदल सैनिक, बीस हज़ार घुड़सवार, दो हज़ार रथ और तीन हज़ार से ज़्यादा हाथी थे। इतनी बड़ी स्थायी सेना (Standing Army) को पालना अच्छी कर-व्यवस्था और भरे ख़ज़ाने के बिना संभव नहीं था। यही ढाँचा बाद में मौर्यों के हाथ आया।

1.4: मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था (Mauryan Military System)

1.4.1. मौर्य सेना की बनावट

मेगस्थनीज़ लिखता है कि मौर्य सेना के चार अंग थे: पैदल, घुड़सवार, रथ और हाथी। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पास क़रीब छह लाख पैदल सैनिक, तीस हज़ार घुड़सवार और नौ हज़ार हाथी थे।

1.4.2. प्रशासन और भर्ती (Recruitment)

अर्थशास्त्र की रचना परंपरा के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु और मंत्री कौटिल्य ने की थी, इसलिए इसे मौर्य काल की व्यवस्था का आईना माना जाता है। इसमें सेना के प्रबंधन का बारीक ब्योरा मिलता है। सबसे ऊँचा सैन्य पद 'सेनापति' का था। सैनिक वंश-परंपरा से भी आते थे और वेतन पर भी रखे जाते थे। इसी वजह से मौर्यों के पास एक स्थायी और पेशेवर सेना बन सकी।

1.4.3. गुप्तचर, रसद (Logistics) और युद्ध-विभाग

मौर्यों का गुप्तचर तंत्र बहुत फैला हुआ था। अर्थशास्त्र की 'अध्यक्ष' व्यवस्था में रथ, घोड़े, हाथी और पैदल सेना (Infantry), हर एक के लिए अलग अधिकारी होता था। आज की भाषा में कहें तो यह एक तरह का युद्ध-कार्यालय था। रसद पहुँचाना, हथियार बनाना और उन्हें गोदामों में रखना भी तय नियमों से चलता था।

1.4.4. हाथी सेना: भारत की अपनी देन

गजसेना को भारतीय सैन्य परंपरा की मौलिक पहचान माना जाता है। सिकंदर के अभियान (Campaign) के बाद यूनानी सेनाओं ने भी हाथियों को अपनाया। हाथी शत्रु की कतारें तोड़ते, किलों के फाटक गिराते और भारी सामान ढोते थे।

1.4.5. कौटिल्य के छह प्रकार के बल

अर्थशास्त्र सैनिकों को इस आधार पर छह वर्गों में बाँटता है कि वे कहाँ से आए और उन पर कितना भरोसा किया जा सकता है। इन्हें 'षड्बल' (Six Types of Forces) कहते हैं। सूची भरोसे के घटते क्रम में है:

- **मौल बल:** पीढ़ियों से राजा की सेवा करती आई वंशानुगत सेना। इसे सबसे भरोसेमंद माना गया।
- **भृत बल:** वेतन पर रखे गए सैनिक।
- **श्रेणी बल:** व्यापारियों और कारीगरों के संघों (श्रेणियों) द्वारा खड़ी की गई टुकड़ियाँ।
- **मित्र बल:** दोस्त राजाओं की भेजी हुई सेना।
- **अमित्र बल:** हारे हुए शत्रु राजा से मिली सेना।
- **आटविक बल:** जंगलों में रहने वाले समुदायों के लड़ाके, जो वन में लड़ने और रास्ता दिखाने में माहिर थे।

कौटिल्य की सलाह थी कि राजा मुख्य रूप से मौल और भृत बल पर टिके। अमित्र और आटविक बल से सावधानी के साथ और छोटे कामों में ही मदद ली जाए।

1.4.6. मेगस्थनीज़ की बताई युद्ध-परिषद

मेगस्थनीज़ के अनुसार मौर्य सेना का कामकाज तीस सदस्यों की एक परिषद देखती थी। यह परिषद पाँच-पाँच सदस्यों वाली छह समितियों में बँटी थी:

समिति	ज़िम्मेदारी
पहली	जल सेना
दूसरी	रसद, ढुलाई और सामान की आपूर्ति
तीसरी	पैदल सेना
चौथी	घुड़सवार सेना
पाँचवीं	रथ सेना
छठी	हाथी सेना

इससे पता चलता है कि मौर्य काल में सेना का प्रबंधन अलग-अलग विशेष विभागों के ज़रिए होता था, जो आज की सेनाओं की शाखा-व्यवस्था से काफ़ी मिलता है।

1.4.7. व्यूह-रचना

लड़ाई के मैदान में सेना को किसी ख़ास आकार में सजाने को 'व्यूह' (Battle Formation) कहते थे। अर्थशास्त्र चार बुनियादी व्यूह बताता है। **दण्ड व्यूह** में सेना सीधी पंक्ति में खड़ी होती थी, **भोग व्यूह** साँप की तरह घुमावदार होता था, **मण्डल व्यूह** गोल घेरे का होता था जो चारों ओर से बचाव के लिए अच्छा था, और **असंहत व्यूह** में टुकड़ियाँ अलग-अलग बिखरी रहती थीं। महाभारत में इनके अलावा चक्र, क्रौंच, गरुड़, मकर, पद्म और सूची जैसे कई व्यूहों का ज़िक्र है। हर व्यूह में अगला हिस्सा (उरस्), दोनों बगलें (कक्ष और पक्ष) और पिछला हिस्सा (प्रतिग्रह) साफ़ तय रहते थे।

1.4.8. कलिंग युद्ध और अशोक की धम्म नीति

लगभग 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। तेरहवें शिलालेख में अशोक ख़ुद बताता है कि इस युद्ध में क़रीब एक लाख लोग मारे गए, डेढ़ लाख बंदी बने और इससे कई गुना लोग बाद के दुष्परिणामों से मरे। यह विनाश देखकर अशोक का मन बदल गया। उसने 'भेरीघोष' यानी युद्ध के नगाड़े की जगह 'धम्मघोष' यानी धर्म की घोषणा को अपनाया।

ध्यान देने की बात यह है कि अशोक ने सेना ख़त्म नहीं की, उसने केवल विस्तार के लिए युद्ध करना छोड़ा। हेमचंद्र रायचौधुरी जैसे कुछ इतिहासकार मानते हैं कि इस शांति-नीति से मौर्य सेना की तैयारी ढीली पड़ी और आगे चलकर साम्राज्य कमज़ोर हुआ। बहुत से दूसरे इतिहासकार इस राय से सहमत नहीं हैं।

1.5: मौर्यों के बाद सैन्य विकास (Post-Mauryan Military Developments)

1.5.1. हिंद-यूनानी, शक और कुषाण प्रभाव

मौर्य साम्राज्य बिखरा तो उत्तर-पश्चिम में हिंद-यूनानी, शक और कुषाण शासक आए। वे अपने साथ घोड़े पर सवार तीरंदाज़ों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल, बेहतर कवच और भारी कवचधारी घुड़सवार सेना (Cavalry) जैसी नई चीज़ें लेकर आए।

1.5.2. व्यापार और आक्रमण के रास्तों से तकनीक का लेन-देन

रेशम मार्ग और उत्तर-पश्चिम के व्यापारिक रास्तों से केवल माल ही नहीं आया-गया। हथियार बनाने के तरीके, घोड़ों की नस्ल सुधारने की विधियाँ और युद्ध की चालें भी एक-दूसरे तक पहुँचीं।

1.5.3. शुंग, सातवाहन और खारवेल

लगभग 185 ई.पू. में सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने सेना का निरीक्षण करते हुए अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ को मार डाला। इस घटना से अंदाज़ा लगता है कि तब तक सेनापति का पद कितना ताक़तवर हो चुका था। पुष्यमित्र ने हिंद-यूनानी हमलों का सामना किया और दो अश्वमेध यज्ञ किए।

उड़ीसा की उदयगिरि पहाड़ी पर खुदा हाथीगुम्फा अभिलेख कलिंग नरेश **खारवेल** के अभियानों की कहानी कहता है; उसकी सेनाएँ मगध तक और दक्षिण के राज्यों तक गई थीं। दक्कन में यही भूमिका

सातवाहनों ने निभाई। गौतमीपुत्र शातकर्णि ने शक क्षत्रपों को पीछे धकेला, और उसकी माँ के नासिक अभिलेख में उसे शक, यवन और पह्लव, तीनों का संहारक कहा गया है।

1.5.4. संगम युग के दक्षिण भारत की सैन्य परंपरा

संगम साहित्य हमें चोल, चेर और पांड्य राज्यों की सेनाओं के बारे में बताता है। इनकी सेनाओं में भी पैदल, घोड़े, रथ और हाथी थे। जो योद्धा लड़ते हुए मारे जाते, उनकी याद में 'वीरकल' या 'नडुकल' नाम के स्मारक पत्थर खड़े किए जाते थे, जो दक्षिण में वीरों की पूजा की परंपरा दिखाते हैं। चोल राजा करिकाल की वेण्णि की लड़ाई में जीत संगम कविताओं में ख़ूब गाई गई है। इन राज्यों ने समुद्री व्यापार बचाने के लिए जहाज़ों और बंदरगाहों, जैसे पुहार (कावेरीपट्टनम) और मुजिरिस, का भी विकास किया।

1.6: गुप्तकालीन सैन्य व्यवस्था (Gupta Military System)

1.6.1. सेना में सामंती (Feudal) तत्त्व

गुप्त राजाओं ने जीते गए इलाक़ों के स्थानीय शासकों को हटाने के बजाय उन्हें सामंत बनाकर रहने दिया। बदले में ये सामंत ज़रूरत पड़ने पर सैनिक भेजते थे। इसी से सामंती सेनाओं की अहमियत बढ़ने लगी।

1.6.2. हाथियों और पैदल सेना पर भरोसा

इस दौर में भी हाथी और पैदल सैनिक ही सेना की असली ताक़त बने रहे। समुद्रगुप्त की जीतों का ब्योरा प्रयाग-प्रशस्ति में मिलता है।

1.6.3. उत्तर गुप्त काल में ढीली पड़ती केंद्रीय कमान

हूणों के हमलों और भीतर से मज़बूत होते सामंतों ने केंद्र की सैन्य पकड़ को धीरे-धीरे कमज़ोर कर दिया। यही कमज़ोरी गुप्त साम्राज्य के बिखरने की एक बड़ी वजह बनी।

1.6.4. समुद्रगुप्त की दिग्विजय (Conquest of All Directions)

समुद्रगुप्त (लगभग 335 से 375 ई.) गुप्त वंश का सबसे प्रतापी योद्धा राजा था। उसके दरबारी कवि हरिषेण, जो संधिविग्रहिक के पद पर थे, ने प्रयाग-प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख) में उसकी जीतों का वर्णन किया है। उसकी नीति को चार हिस्सों में समझा जा सकता है:

- **आर्यावर्त में:** उत्तर भारत के लगभग नौ राजाओं को हराकर उनके राज्य सीधे साम्राज्य में मिला लिए गए। इसे 'प्रसभोद्धरण' यानी बलपूर्वक उखाड़ फेंकने की नीति कहा गया।
- **दक्षिणापथ में:** दक्षिण के बारह राजाओं को पहले पकड़ा गया (ग्रहण), फिर छोड़ा गया (मोक्ष) और उनका राज्य लौटाकर (अनुग्रह) उन्हें अधीन बना लिया गया। इसी को **ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह** की नीति कहा जाता है।
- **आटविक राज्यों में:** जंगली इलाक़ों के राजाओं को सेवक बनने पर मजबूर किया गया।
- **सीमांत राज्यों और गणराज्यों में:** समतट, कामरूप, नेपाल जैसे सीमांत राज्यों और मालव, यौधेय, आर्जुनायन जैसे गणराज्यों ने कर देकर और आदेश मानकर अधीनता स्वीकार की।

समुद्रगुप्त के अभियानों का दायरा इतना बड़ा था कि अंग्रेज़ इतिहासकार वी.ए. स्मिथ ने उसकी तुलना यूरोप के विजेता नेपोलियन से कर डाली। अपनी सर्वोच्चता जताने के लिए उसने अश्वमेध यज्ञ किया और ऐसे सोने के सिक्के चलवाए जिन पर यज्ञ का घोड़ा बना है।

1.6.5. गुप्तकाल के सैन्य अधिकारी

गुप्त अभिलेखों में कई सैन्य पदों के नाम आते हैं। इनसे सेना के प्रशासन की बनावट समझ में आती है:

पद	काम
महाबलाधिकृत	सेना का सबसे बड़ा अधिकारी
महादण्डनायक	न्याय और सेना से जुड़ा ऊँचा अधिकारी
संधिविग्रहिक	युद्ध और संधि के मामलों का मंत्री
रणभाण्डागारिक	सैनिक भंडार और रसद का प्रभारी
भटाश्वपति	पैदल और घुड़सवार सेना का अधिकारी
पीलुपति	हाथी सेना का अधिकारी

1.6.6. हूणों के हमले और स्कन्दगुप्त

पाँचवीं सदी के बीच में मध्य एशिया से आए हूणों ने गुप्त साम्राज्य की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर हमले शुरू किए। स्कन्दगुप्त (लगभग 455 से 467 ई.) ने उन्हें खदेड़ दिया, जिसकी चर्चा भितरी स्तंभ लेख और जूनागढ़ अभिलेख में है। लेकिन लगातार लड़ाइयों ने ख़ज़ाना ख़ाली कर दिया। बाद में तोरमाण और मिहिरकुल के नेतृत्व में हूण फिर आए। मालवा के यशोधर्मन और नरसिंहगुप्त बालादित्य ने

मिहिरकुल को हराया, पर तब तक गुप्त साम्राज्य की सैन्य और आर्थिक ताक़त को गहरी चोट लग चुकी थी।

1.6.7. हर्षवर्धन की सेना

गुप्तों के बाद थानेश्वर (आज के हरियाणा में) और कन्नौज के शासक हर्षवर्धन (606 से 647 ई.) ने उत्तर भारत में बड़ा राज्य खड़ा किया। चीनी यात्री ह्वेनसांग लिखता है कि शुरू में हर्ष के पास पाँच हज़ार हाथी, दो हज़ार घुड़सवार और पचास हज़ार पैदल सैनिक थे। बाद में हाथियों की संख्या साठ हज़ार और घुड़सवारों की एक लाख हो गई। दक्षिण की ओर बढ़ते हर्ष को बादामी के चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा के किनारे रोक दिया। ऐहोल अभिलेख इस जीत की गवाही देता है। इसके बाद नर्मदा उत्तर और दक्षिण की शक्तियों के बीच एक तरह की प्राकृतिक सीमा बन गई।

1.7: अलग-अलग युगों के हथियार और सैन्य तकनीक (Weapons and Military Technology through the Ages)

1.7.1. काँसे से लोहे तक

शुरुआती दौर में हथियार काँसे और ताँबे के होते थे। लगभग 1000 ई.पू. के आसपास लोहे की तकनीक फैली, और तब ज़्यादा पैने, हल्के और टिकाऊ हथियार बनने लगे।

1.7.2. धनुष, तलवार, गदा और घेराबंदी (Siege) के यंत्र

धनुष-बाण सबसे ज़्यादा चलने वाला हथियार था। तलवार (असि), गदा, त्रिशूल, भाला (कुन्त) और फरसा भी आम थे। किलों पर हमले के लिए ख़ास घेराबंदी यंत्रों का भी ज़िक्र मिलता है।

1.7.3. किलेबंदी की तकनीक

किले बनाने की कला समय के साथ निखरती गई। मिट्टी की दीवारों से शुरुआत हुई और बात ईंट-पत्थर के मज़बूत किलों तक पहुँची। खाई, बुर्ज (Bastion) और सुरक्षित फाटक किलों का ज़रूरी हिस्सा बन गए।

1.7.4. धनुर्वेद (Science of Archery) और सैनिक शिक्षा

प्राचीन भारत में युद्ध-विद्या को 'धनुर्वेद' कहा जाता था और इसे यजुर्वेद का उपवेद (Subsidiary Veda) माना गया। इसमें धनुष चलाने के साथ बाकी हथियारों, शरीर को साधने और लड़ने के कौशल की शिक्षा है। हथियारों को आम तौर पर चार वर्गों में रखा गया:

- **मुक्त:** फेंककर चलाए जाने वाले, जैसे बाण और चक्र।
- **अमुक्त:** हाथ में पकड़कर चलाए जाने वाले, जैसे तलवार और गदा। इन्हें अमुक्त शस्त्र कहा जाता था।
- **मुक्तामुक्त:** जो फेंके भी जा सकें और हाथ में भी रहें, जैसे भाला।
- **यंत्रमुक्त:** किसी यंत्र की मदद से छोड़े जाने वाले अस्त्र।

राजकुमार और क्षत्रिय युवक गुरुकुल में धनुर्विद्या, घुड़सवारी, रथ और हाथी चलाना तथा कुश्ती सीखते थे। महाभारत में द्रोणाचार्य का कौरव और पांडव राजकुमारों को शिक्षा देना इसी परंपरा का जाना-माना उदाहरण है।

1.7.5. अर्थशास्त्र और मनुस्मृति में किलों के प्रकार

कौटिल्य ने प्राकृतिक स्थिति के हिसाब से चार तरह के किले बताए हैं: **औदक** (पानी से घिरा), **पार्वत** (पहाड़ पर बना), **धान्वन** (रेगिस्तान में) और **वन** (घने जंगल से घिरा)। मनुस्मृति छह प्रकार गिनाती है: धनुर्दुर्ग (मरुस्थल का), महीदुर्ग (मिट्टी का), अब्दुर्ग (पानी का), वार्क्षदुर्ग (जंगल का), नृदुर्ग (सैनिकों से रक्षित) और गिरिदुर्ग (पहाड़ी)। मनु गिरिदुर्ग को सबसे अच्छा मानते हैं। सप्तांग सिद्धांत में भी 'दुर्ग' राज्य का एक अंग है, जिससे किलों का सैन्य महत्त्व साफ़ हो जाता है।

1.8: चतुरंगबल: एक समग्र धारणा (Chaturangabala: An Integrated Concept)

1.8.1. अलग-अलग राजवंशों में इसकी निरंतरता

पैदल, घोड़ा, रथ और हाथी, इन चार अंगों वाला चतुरंगबल वैदिक काल से गुप्त काल और उसके बाद तक भारतीय सैन्य सोच के केंद्र में रहा। समय के साथ रथ पीछे छूटते गए और घुड़सवारों का महत्त्व बढ़ता गया, फिर भी चार अंगों वाला मूल ढाँचा बना रहा।

1.8.2. फ़ारसी, यूनानी और चीनी सेनाओं से तुलना

फ़ारसी सेना में पैदल, घुड़सवार और रथ तो थे, पर हाथी सेना जैसी कोई इकाई नहीं थी। यूनानियों की ताक़त उनकी फैलेंक्स (Phalanx) पद्धति थी, जिसमें भालेधारी पैदल सैनिक सटकर कतारों में चलते थे। चीन में पहले रथों का बोलबाला रहा, फिर विशाल पैदल और घुड़सवार सेनाएँ खड़ी हुईं। हाथियों का इस्तेमाल भारतीय सेना को इन सबसे अलग पहचान देता है।

1.9: प्राचीन भारत की नौ-शक्ति (Naval Power of Ancient India)

1.9.1. नदियों और तटों पर नौसैनिक गतिविधियाँ

अर्थशास्त्र में 'नावाध्यक्ष' (Superintendent of Ships) नाम के अधिकारी का ज़िक्र है, जो नदी परिवहन, नावें बनाने और जल-सीमा की रखवाली का काम देखता था। गंगा जैसी बड़ी नदियाँ सैनिकों और रसद को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने में बहुत काम आती थीं।

1.9.2. व्यापार और समुद्र की सुरक्षा

चोल, पांड्य और सातवाहन राजाओं ने समुद्री व्यापार की हिफ़ाज़त के लिए जहाज़ी बेड़े खड़े किए। दक्षिण-पूर्व एशिया और रोम से होने वाले व्यापार के रास्तों पर नज़र रखने के लिए तट पर चौकियाँ बनाई गई थीं।

1.10: सैन्य चिंतन और ग्रंथ (Military Thought and Texts)

1.10.1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र

राजनीति और युद्ध पर प्राचीन भारत में जितना कुछ लिखा गया, उसमें कौटिल्य (चाणक्य) का अर्थशास्त्र सबसे सुगठित है। राज्य के सात अंग, विदेश नीति के छह उपाय (संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, समाश्रय), पड़ोसी राज्यों का मंडल और सेना को खड़ा करने तथा चलाने के नियम, ये सब विषय इसमें बारीकी से समझाए गए हैं।

1.10.2. कूटनीति (Diplomacy) और अंतिम उपाय के रूप में युद्ध

कौटिल्य कहते हैं कि पहले साम, दाम, भेद जैसे उपाय आज़माए जाएँ। जब ये काम न करें, तभी दण्ड यानी युद्ध का सहारा लिया जाए। यह सोच बताती है कि प्राचीन भारतीय सैन्य चिंतन कितना परिपक्व था।

1.10.3. महाभारत और रामायण का सैन्य चिंतन

महाभारत को पढ़ें तो लगता है जैसे किसी सेनापति की नियम-पुस्तिका सामने हो। सेना की गिनती सबसे छोटी टुकड़ी 'पत्ति' से शुरू होती है, जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पैदल होते थे। फिर सेनामुख, गुल्म, गण, वाहिनी, पृतना, चमू और अनीकिनी की सीढ़ी चढ़ते हुए हम **अक्षौहिणी** (Largest Army Unit) तक पहुँचते हैं, जो दस अनीकिनी के बराबर थी। एक अक्षौहिणी में 21,870 रथ और इतने ही हाथी, 65,610 घोड़े और 1,09,350 पैदल गिने गए हैं। महाकाव्य के अनुसार कुरुक्षेत्र में ऐसी अठारह सेनाएँ उतरीं, जिनमें से सात पांडवों के पास थीं और ग्यारह कौरवों के पास।

शान्तिपर्व में राजधर्म, युद्ध के नियमों और राजा के कर्तव्यों पर लंबी चर्चा है। रामायण में लंका-विजय की कथा के भीतर भी कई सैन्य पहलू छिपे हैं: समुद्र पर सेतु बनाना, गुप्तचरों से शत्रु का भेद लेना, अंगद और हनुमान को दूत बनाकर भेजना और सेना की व्यूह-रचना।

1.10.4. कौटिल्य का मंडल सिद्धांत (Mandala Theory)

मंडल सिद्धांत राज्यों के आपसी रिश्तों को समझाने का तरीका है। इसके बीच में 'विजिगीषु' (Aspiring Conqueror) है, यानी वह राजा जो जीतना चाहता है। उसकी सीमा से सटा राज्य उसका स्वाभाविक शत्रु ('अरि') है, और अरि की सीमा से सटा राज्य स्वाभाविक मित्र। सीधी भाषा में, दुश्मन का दुश्मन दोस्त। इसी तरह आगे अरिमित्र, मित्रमित्र और अरिमित्रमित्र आते हैं। विजिगीषु के पीछे की ओर पार्ष्णिग्राह (पीछे का शत्रु), आक्रन्द (पीछे का मित्र), पार्ष्णिग्राहासार और आक्रन्दासार होते हैं। इनके अलावा 'मध्यम' है, जिसकी सीमा विजिगीषु और अरि दोनों से लगती है, और 'उदासीन' है, जो सबसे दूर बैठा बहुत शक्तिशाली तटस्थ राजा है। कुल मिलाकर बारह राजाओं का यह घेरा बनता है। विद्वान इसे आज के 'शक्ति-संतुलन' (Balance of Power) विचार का प्राचीन भारतीय रूप मानते हैं।

1.10.5. कौटिल्य के अनुसार युद्ध के प्रकार

- **प्रकाश युद्धः** पहले से घोषणा करके तय जगह और समय पर लड़ा जाने वाला खुला युद्ध, जो धर्मयुद्ध के क़रीब है।
- **कूट युद्धः** अचानक हमला, घात लगाना, रात में धावा बोलना और शत्रु को भ्रम में डालने वाली चालें।
- **तूष्णीं युद्धः** गुप्तचर, विष, षड्यंत्र और गुप्त हत्या जैसे उपायों से बिना खुली लड़ाई के शत्रु को कमज़ोर करना।

कौटिल्य यथार्थवादी थे। उनका मानना था कि हालात देखकर युद्ध का तरीका चुना जाए। कमज़ोर राजा को संधि करनी चाहिए और ताक़तवर को विग्रह, यह बात आज भी रणनीति (Strategy) के अध्ययन में पढ़ाई जाती है। कामन्दक का नीतिसार और शुक्रनीति इसी परंपरा को आगे ले जाने वाले ग्रंथ हैं।

1.11: निष्कर्ष: क्या बदला और क्या बना रहा (Conclusion: Change and Continuity)

1.11.1. विकास की मुख्य दिशाएँ

वैदिक युग की बिखरी कबीलाई टोलियों से चलकर महाजनपदों की अर्ध-स्थायी सेनाओं तक, और वहाँ से मौर्य और गुप्त राजाओं की सुगठित सेनाओं तक, इस पूरी यात्रा में सेना का आकार, संगठन, हथियार और प्रशासन, सब बदले और बेहतर हुए।

1.11.2. आरंभिक मध्यकाल के लिए छोड़ी गई विरासत

गुप्तों के बाद सामंती सेनाएँ, स्थानीय सामंतों पर निर्भरता और केंद्रीय कमान का धीरे-धीरे कमज़ोर होना, ये तीनों बातें आरंभिक मध्यकालीन भारत की सैन्य व्यवस्था की नींव बन गईं।

1.12: अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

1. वैदिक काल में 'गण' और 'विश' से क्या समझा जाता था?
2. मौर्य सेना के चार अंगों का वर्णन कीजिए।
3. गुप्त काल में सेना में सामंती तत्त्वों के आने का क्या अर्थ है?
4. अर्थशास्त्र की षाड्गुण्य नीति (Sixfold Policy) के छह अंगों के नाम लिखिए।

1.13: सारांश (Summary)

इस इकाई में हमने देखा कि भारत की सेना वैदिक कबीलों की साधारण टोलियों से शुरू होकर मौर्य काल की विशाल चतुरंगिणी सेना तक कैसे पहुँची, और फिर गुप्त काल में उस पर सामंती रंग कैसे चढ़ा। दाशराज्ञ युद्ध, सिकंदर से पोरस की टक्कर, कलिंग युद्ध और समुद्रगुप्त के अभियान इस यात्रा के अहम पड़ाव रहे। कौटिल्य के षड्बल, मंडल सिद्धांत और युद्ध के प्रकारों ने हमें दिखाया कि उस

समय युद्ध के बारे में सोचने का ढंग कितना गहरा था। हथियार, तकनीक और प्रशासन लगातार बदलते रहे, पर चतुरंगबल की धारणा और धर्मयुद्ध जैसे नैतिक नियम लंबे समय तक बने रहे।

1.14: शब्दावली (Key Terminology)

- **गविष्टि** (Search for Cows / War) : ऋग्वेद में युद्ध के लिए आया शब्द, जिसका अर्थ है गायों की खोज।
- **चतुरंगिणी सेना** (Four-limbed Army) : पैदल, घोड़े, रथ और हाथी, इन चार अंगों वाली प्राचीन भारतीय सेना।
- **गण** (Tribal Group) : लड़ाई के लिए एकजुट होने वाला कबीले का सामूहिक दल।
- **सेनानी** (Army Leader) : वैदिक काल में सेना की अगुवाई से जुड़ा अधिकारी।
- **रत्नी** (Royal Officials) : उत्तर-वैदिक राजा के ख़ास सहयोगी अधिकारी, जिनमें सेनानी भी था।
- **दाशराज्ञ युद्ध** (Battle of Ten Kings) : रावी (परुष्णी) के किनारे राजा सुदास और दस राजाओं के संघ के बीच हुई लड़ाई।
- **अश्वमेध** (Horse Sacrifice) : वह यज्ञ जिसमें छोड़ा गया घोड़ा राजा के अधिकार-क्षेत्र का प्रतीक होता था।
- **महाजनपद** (Great Territorial States) : छठी सदी ई.पू. के आसपास उभरे सोलह बड़े राज्य।
- **सप्तांग सिद्धांत** (Saptanga Theory of State) : कौटिल्य के अनुसार राज्य के सात अंग: स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र।
- **षड्बल** (Six Types of Forces) : कौटिल्य के बताए सेना के छह प्रकार: मौल, भृत, श्रेणी, मित्र, अमित्र और आटविक।
- **मौल बल** (Hereditary Troops) : पीढ़ियों से सेवा करती आई वंशानुगत सेना, जिसे सबसे भरोसेमंद माना गया।
- **भृत बल** (Mercenary Troops) : वेतन पर रखे गए सैनिक।
- **आटविक बल** (Forest Tribal Troops) : जंगलों में रहने वाले समुदायों से लिए गए लड़ाके।
- **षाड्गुण्य नीति** (Sixfold Foreign Policy) : विदेश नीति के छह उपाय: संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और समाश्रय।
- **मंडल सिद्धांत** (Circle of States Theory) : विजिगीषु को केंद्र मानकर बारह राज्यों के आपसी रिश्तों की व्याख्या।

- **विजिगीषु** (Aspiring Conqueror) : जीत की इच्छा रखने वाला राजा, जो मंडल के केंद्र में है।
- **व्यूह** (Battle Formation) : लड़ाई में सेना को किसी तय आकार या क्रम में सजाने की पद्धति।
- **अक्षौहिणी** (Akshauhini, Largest Army Unit) : महाभारत की सबसे बड़ी सैन्य इकाई, जिसमें 21,870 रथ, 21,870 हाथी, 65,610 घोड़े और 1,09,350 पैदल सैनिक होते थे।
- **पत्ति** (Smallest Army Unit) : महाभारत की सबसे छोटी सैन्य इकाई: एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल सैनिक।
- **धनुर्वेद** (Science of Archery and Warfare) : युद्ध-विद्या का शास्त्र, जिसे यजुर्वेद का उपवेद माना जाता है।
- **मुक्त और अमुक्त शस्त्र** (Missile and Hand-held Weapons) : फेंककर चलाए जाने वाले हथियार मुक्त और हाथ में पकड़कर चलाए जाने वाले अमुक्त कहलाते थे।
- **प्रकाश युद्ध** (Open Warfare) : घोषणा करके तय जगह और समय पर लड़ा जाने वाला खुला युद्ध।
- **कूट युद्ध** (Deceptive Warfare) : छल, घात और अचानक हमले से लड़ा जाने वाला युद्ध।
- **तूष्णीं युद्ध** (Silent or Covert Warfare) : गुप्तचरों और छिपे उपायों से बिना खुली लड़ाई के शत्रु को कमज़ोर करना।
- **धर्मयुद्ध** (Righteous War) : नैतिक नियमों के भीतर लड़ा जाने वाला युद्ध।
- **नावाध्यक्ष** (Superintendent of Ships) : अर्थशास्त्र में नावों और जल-परिवहन का प्रभारी अधिकारी।
- **महाबलाधिकृत** (Commander-in-Chief) : गुप्त काल में सेना का सर्वोच्च अधिकारी।
- **संधिविग्रहिक** (Minister of War and Peace) : युद्ध और संधि के मामलों का मंत्री; हरिषेण इसी पद पर थे।
- **प्रयाग-प्रशस्ति** (Allahabad Pillar Inscription) : हरिषेण का लिखा इलाहाबाद स्तंभ लेख, जिसमें समुद्रगुप्त की जीतें दर्ज हैं।
- **ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह** (Capture, Release and Reinstatement) : समुद्रगुप्त की दक्षिण नीति: राजा को पकड़ना, छोड़ना और राज्य लौटाकर अधीन बनाना।
- **भेरीघोष और धम्मघोष** (Sound of War Drums and Proclamation of Dhamma) : कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने युद्ध के नगाड़े की जगह धर्म की घोषणा को अपनाया।
- **वीरकल या नडुकल** (Hero Stones) : दक्षिण भारत में लड़ाई में मारे गए योद्धाओं की याद में खड़े स्मारक पत्थर।
- **गिरिदुर्ग** (Hill Fort) : पहाड़ पर बना किला, जिसे मनु ने सबसे अच्छा माना।

1.15: स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्राचीन भारत की सैन्य व्यवस्था को जानने के मुख्य स्रोतों पर चर्चा कीजिए।
2. मौर्य काल के सैन्य प्रशासन, भर्ती और गुप्तचर व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
3. चतुरंगबल की धारणा समझाइए और उस समय की दूसरी सभ्यताओं की सेनाओं से उसकी तुलना कीजिए।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. धर्मयुद्ध की धारणा को स्पष्ट कीजिए।
2. हाथी सेना को भारतीय सेना की विशेष देन क्यों कहा जाता है?

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: हर प्रश्न के नीचे चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से सही विकल्प चुनिए।

1. अर्थशास्त्र के अनुसार राज्य के अंगों की संख्या कितनी है?

(अ) पाँच (ब) छह

(स) सात (द) आठ

2. दाशराज्ञ युद्ध का वर्णन किस ग्रंथ में है?

(अ) सामवेद (ब) ऋग्वेद

(स) अथर्ववेद (द) महाभारत

3. दाशराज्ञ युद्ध किस नदी के किनारे हुआ?

(अ) परुष्णी (रावी) (ब) सरस्वती

(स) गंगा (द) सिंधु

4. दाशराज्ञ युद्ध में किस राजा की जीत हुई?

(अ) पुरु (ब) दिवोदास

(स) सुदास (द) यदु

5. 'गविष्टि' शब्द का अर्थ क्या है?

(अ) ज़मीन की खोज (ब) गायों की खोज

(स) पानी की खोज (द) घोड़ों की खोज

6. चतुरंगिणी सेना में इनमें से कौन-सा अंग नहीं था?

(अ) पैदल (ब) रथ

(स) हाथी (द) जल सेना

7. मेगस्थनीज़ की किताब का नाम क्या है?

(अ) इंडिका (ब) अर्थशास्त्र

(स) मुद्राराक्षस (द) राजतरंगिणी

8. मेगस्थनीज़ के अनुसार मौर्य सेना की परिषद में कितने सदस्य थे?

(अ) 18 (ब) 24

(स) 30 (द) 36

9. कौटिल्य किस बल को सबसे भरोसेमंद मानते थे?

(अ) भृत बल (ब) मौल बल

(स) मित्र बल (द) आटविक बल

10. 'आटविक बल' किसे कहा गया है?

(अ) वेतन वाले सैनिक

(ब) मित्र राजा की सेना

(स) जंगल के समुदायों से लिए लड़ाके

(द) व्यापारी संघों की सेना

11. अर्थशास्त्र में जल-परिवहन का अधिकारी कौन था?

(अ) नावाध्यक्ष (ब) अश्वाध्यक्ष

(स) सीताध्यक्ष (द) पण्याध्यक्ष

12. षाड्गुण्य नीति में कौन-सा उपाय शामिल नहीं है?

(अ) संधि (ब) विग्रह

(स) दण्ड (द) आसन

13. मंडल सिद्धांत के केंद्र वाले राजा को क्या कहते हैं?

(अ) उदासीन (ब) मध्यम

(स) विजिगीषु (द) पार्ष्णिग्राह

14. कलिंग युद्ध किस मौर्य राजा ने लड़ा?

(अ) चन्द्रगुप्त मौर्य (ब) बिन्दुसार

(स) अशोक (द) बृहद्रथ

15. कलिंग युद्ध के विनाश का ज़िक्र अशोक के किस शिलालेख में है?

(अ) पहले (ब) पाँचवें

(स) तेरहवें (द) चौदहवें

16. झेलम के किनारे सिकंदर से किसने लोहा लिया?

(अ) आम्भि (ब) पोरस

(स) धननंद (द) चन्द्रगुप्त

17. पुराणों में किसे 'सर्वक्षत्रान्तक' कहा गया है?

(अ) बिम्बिसार (ब) अजातशत्रु

(स) महापद्मनंद (द) पुष्यमित्र शुंग

18. प्रयाग-प्रशस्ति किसने लिखी?

(अ) कालिदास (ब) हरिषेण

(स) बाणभट्ट (द) रविकीर्ति

19. किस राजा को 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है?

(अ) चन्द्रगुप्त मौर्य (ब) अशोक

(स) समुद्रगुप्त (द) हर्षवर्धन

20. स्कन्दगुप्त की हूणों पर जीत किस लेख में दर्ज है?

(अ) भितरी स्तंभ लेख (ब) हाथीगुम्फा अभिलेख

(स) ऐहोल अभिलेख (द) नासिक अभिलेख

21. गुप्त काल में सेना के सबसे बड़े अधिकारी का पदनाम क्या था?

(अ) पीलुपति (ब) महाबलाधिकृत

(स) रणभाण्डागारिक (द) भटाश्वपति

22. गुप्त काल में हाथी सेना का अधिकारी क्या कहलाता था?

(अ) पीलुपति (ब) अश्वपति

(स) नावाध्यक्ष (द) दण्डपाशिक

23. नर्मदा के किनारे हर्षवर्धन को किसने रोका?

(अ) पुलकेशिन द्वितीय (ब) शशांक

(स) नरसिंहवर्मन (द) यशोधर्मन

24. धनुर्वेद को किस वेद का उपवेद माना गया है?

(अ) ऋग्वेद (ब) सामवेद

(स) यजुर्वेद (द) अथर्ववेद

25. हाथ में पकड़कर चलाए जाने वाले हथियार क्या कहलाते थे?

(अ) मुक्त (ब) अमुक्त

(स) यंत्रमुक्त (द) मुक्तामुक्त

26. मनु ने किस किले को सबसे अच्छा माना?

(अ) जल दुर्ग (ब) वन दुर्ग

(स) गिरिदुर्ग (द) महीदुर्ग

27. एक अक्षौहिणी में पैदल सैनिक कितने होते थे?

(अ) 65,610 (ब) 21,870

(स) 1,09,350 (द) 2,18,700

28. कुरुक्षेत्र में पांडवों की ओर कितनी अक्षौहिणी सेना थी?

(अ) 5 (ब) 7

(स) 11 (द) 18

29. कौटिल्य का 'तूष्णीं युद्ध' क्या है?

(अ) खुला युद्ध (ब) जल युद्ध

(स) छिपे उपायों से मौन युद्ध (द) धर्मयुद्ध

30. हाथीगुम्फा अभिलेख किस राजा से जुड़ा है?

(अ) गौतमीपुत्र शातकर्णि (ब) खारवेल

(स) रुद्रदामन (द) कनिष्क

(ब) रिक्त स्थान भरिए

1. ऋग्वैदिक कबीले की शाखा _____ कहलाती थी, जिसका मुखिया विशपति होता था।

2. चार अंगों वाली होने के कारण मौर्य सेना को _____ सेना कहा गया।

3. मौर्य काल में सेना का सबसे ऊँचा पद _____ का था।

4. महाभारत की सबसे छोटी सैन्य इकाई _____ थी।

5. समुद्रगुप्त की दक्षिण नीति _____ की नीति कहलाती है।

6. कलिंग के बाद अशोक ने भेरीघोष छोड़कर _____ अपनाया।

7. दक्षिण भारत में वीर योद्धाओं की याद में _____ खड़े किए जाते थे।

8. अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ को उसके सेनापति _____ ने मारा।

9. कौटिल्य ने प्राकृतिक स्थिति के आधार पर _____ तरह के किले बताए हैं।

10. प्राचीन भारत में युद्ध-विद्या का शास्त्र _____ कहलाता था।

(स) सही या गलत बताइए

1. हाथी सेना को भारतीय सेना की विशेष देन माना जाता है।

2. दाशराज्ञ युद्ध में सुदास हार गया था।

3. सप्तांग सिद्धांत में सेना भी राज्य का एक अंग है।

4. गुप्त काल में सामंतों से सैनिक सहायता लेने का चलन बढ़ा।

5. धर्मयुद्ध के नियम निहत्थे शत्रु पर वार की अनुमति देते थे।

6. मेगस्थनीज़ चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया यूनानी राजदूत था।

7. मंडल सिद्धांत में पड़ोसी राज्य को स्वाभाविक मित्र माना गया है।

8. तक्षशिला के राजा आम्भि ने सिकंदर से कड़ा मुकाबला किया।

9. अर्थशास्त्र में नावाध्यक्ष नाम के अधिकारी का ज़िक्र है।

10. हर्षवर्धन के समय का ब्योरा चीनी यात्री ह्वेनसांग ने दिया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. (स) सात	2. (ब) ऋग्वेद	3. (अ) परुष्णी (रावी)
4. (स) सुदास	5. (ब) गायों की खोज	6. (द) जल सेना
7. (अ) इंडिका	8. (स) 30	9. (ब) मौल बल
10. (स) जंगल के समुदायों से लिए लड़ाके	11. (अ) नावाध्यक्ष	12. (स) दण्ड
13. (स) विजिगीषु	14. (स) अशोक	15. (स) तेरहवें
16. (ब) पोरस	17. (स) महापद्मनंद	18. (ब) हरिषेण
19. (स) समुद्रगुप्त	20. (अ) भितरी स्तंभ लेख	21. (ब) महाबलाधिकृत
22. (अ) पीलुपति	23. (अ) पुलकेशिन द्वितीय	24. (स) यजुर्वेद
25. (ब) अमुक्त	26. (स) गिरिदुर्ग	27. (स) 1,09,350
28. (ब) 7	29. (स) छिपे उपायों से मौन युद्ध	30. (ब) खारवेल

(ब) रिक्त स्थान:

1. विश	2. चतुरंगिणी
3. सेनापति	4. पत्ति
5. ग्रहण-मोक्ष-अनुग्रह	6. धम्मघोष
7. वीरकल या नडुकल	8. पुष्यमित्र शुंग
9. चार	10. धनुर्वेद

(स) सही या गलत:

1. सही	2. गलत	3. सही	4. सही	5. गलत
6. सही	7. गलत	8. गलत	9. सही	10. सही

1.16: अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

उत्तर 1: 'गण' कबीले का सामूहिक दल था, जबकि 'विश' कबीले की एक शाखा थी जिसका मुखिया 'विशपति' कहलाता था (देखें 1.2.1)।

उत्तर 2: मौर्य सेना पैदल, घुड़सवार, रथ और हाथी, इन चार अंगों से बनी थी (देखें 1.4.1)।

उत्तर 3: गुप्त राजाओं ने स्थानीय शासकों को सामंत के रूप में मान्यता दी और बदले में उनसे सैनिक सहायता ली (देखें 1.6.1)।

उत्तर 4: संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव और समाश्रय (देखें 1.10.1)।

1.17: संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

1. कौटिल्य, अर्थशास्त्र (अनुवाद: आर. शामशास्त्री अथवा कोई प्रामाणिक हिंदी अनुवाद)।
2. आर.सी. मजूमदार, प्राचीन भारत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
3. आर.एस. शर्मा, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, नई दिल्ली।
4. उपिन्दर सिंह, ए हिस्ट्री ऑफ़ एंशिएंट एंड अर्ली मेडिवल इंडिया, पियर्सन, दिल्ली।
5. एच.सी. रायचौधुरी, पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ एंशिएंट इंडिया, कलकत्ता विश्वविद्यालय।

Subject: Introduction to Military History	Author: Dr. Mahender Pal
Subject Code: C24MDC108T	Vetter:

इकाई-2

(LESSON-2)

मध्यकालीन भारत में सैन्य व्यवस्था

(Military during Medieval India)

इकाई की संरचना (Structure)

2.0 उद्देश्य (Learning Objectives)

2.1 प्रस्तावना और काल-विभाजन (Introduction and Periodisation)

2.1.1 मध्यकालीन भारत की समय-सीमा (लगभग 1200 से 1750 ई.)

2.1.2 मध्यकालीन सैन्य इतिहास (Military History) के स्रोत

2.2 दिल्ली सल्तनत की सैन्य व्यवस्था (Military System of the Delhi Sultanate)

2.2.1 तुर्क विजय और तराइन के युद्ध

2.2.2 इक्ता व्यवस्था और उसका सैन्य महत्त्व

2.2.3 बलबन, अलाउद्दीन और मुहम्मद बिन तुग़लक़ की सेना

2.2.4 अलाउद्दीन के सुधार: बाज़ार पर नियंत्रण और सेना का पोषण

2.2.5 घुड़सवार, पैदल और हाथी सेना

2.2.6 सल्तनत सेना की श्रेणियाँ

2.2.7 फ़िरोज़ तुग़लक़ के समय सेना का गिरना और तैमूर का हमला

2.3 मंगोल आक्रमण और उनका असर (Mongol Invasions and their Impact)

2.3.1 सुल्तानों की सीमा-रक्षा नीति

2.3.2 मंगोलों से मिली सीख

2.3.3 प्रमुख मंगोल हमले: एक कालक्रम

2.4 मुगलों की सैन्य व्यवस्था (Military System of the Mughals)

2.4.1 मनसबदारी: जात (Personal Rank) और सवार

2.4.2 मुगल सेना के अंग

2.4.3 बारूद और तोपखाना: पानीपत (1526) और खानवा (1527)

2.4.4 अकबर के सैन्य सुधार

2.4.5 मुगल सेना के सैनिकों की श्रेणियाँ और प्रशासन

2.4.6 मुगलों का युद्ध-व्यूह

2.5 हथियार और सैन्य तकनीक (Weapons and Military Technology)

2.5.1 पारंपरिक हथियारों से बारूद की ओर

2.5.2 बंदूकों का आना और फैलना

2.5.3 तोपखाने का विकास: उस्मानी और यूरोपीय तोपची

2.5.4 किले और घेराबंदी की तकनीक

2.5.5 हाथियों की घटती उपयोगिता

2.6 क्षेत्रीय सैन्य शक्तियाँ (Regional Military Powers)

2.6.1 राजपूत सैन्य परंपरा और शौर्य-संहिता (Code of Chivalry)

2.6.2 विजयनगर की सैन्य व्यवस्था

2.6.3 शिवाजी की मराठा सेना: गनीमी कावा (Guerrilla Tactics), किले और नौसेना

2.6.4 सिख सैन्य परंपरा: खालसा

2.6.5 मराठा घुड़सवार और नौसेना का आगे का विकास

2.6.6 अहोम सेना और सराईघाट की लड़ाई

2.6.7 महाराजा रणजीत सिंह की फ़ौज-ए-ख़ास

2.7 सैन्य अभियान और युद्ध: तुलनात्मक अध्ययन (Military Campaigns and Battles: A Comparative Study)

2.7.1 पानीपत के तीन युद्ध

2.7.2 हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.)

2.7.3 रणनीति, कूटनीति (Diplomacy) और नेतृत्व

2.7.4 तालीकोटा का युद्ध (1565 ई.)

2.7.5 युद्धों की तुलनात्मक सारणी

2.8 मध्यकालीन सैन्य व्यवस्था का पतन (Decline of Medieval Military Systems)

2.8.1 अठारहवीं सदी तक मुगल सेना की कमज़ोरियाँ

2.8.2 यूरोपीय ढंग की लड़ाई की ओर बदलाव

2.8.3 नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के हमले

2.9 अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

2.10 सारांश (Summary)

2.11 शब्दावली (Key Terminology)

2.12 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

2.13 अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

2.14 संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

2.0: उद्देश्य (Learning Objectives)

इस इकाई को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

- मध्यकालीन भारत की समय-सीमा और उसकी सैन्य व्यवस्था (Military System) जानने के स्रोतों को समझ सकेंगे।
- दिल्ली सल्तनत की सेना, इक्ता (Revenue Assignment) प्रणाली और अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य सुधारों को समझा सकेंगे।
- मंगोल हमलों के असर और सल्तनत की सीमा-रक्षा नीति का विश्लेषण कर सकेंगे।
- मनसबदारी (Mansabdari System) व्यवस्था, तोपखाने (Artillery) के विकास और बारूद के इस्तेमाल को जान सकेंगे।
- इस दौर के हथियारों और सैन्य तकनीक में आए बदलावों को पहचान सकेंगे।
- राजपूत, विजयनगर, मराठा, सिख और अहोम सैन्य परंपराओं की तुलना कर सकेंगे।
- पानीपत, हल्दीघाटी, तालीकोटा जैसे युद्धों का रणनीतिक मूल्यांकन कर सकेंगे।
- अठारहवीं सदी में मुगल सेना के पतन के कारण और यूरोपीय युद्ध-पद्धति की ओर हुए बदलाव को समझ सकेंगे।

2.1: प्रस्तावना और काल-विभाजन (Introduction and Periodisation)

भारतीय इतिहास में मध्यकाल वह दौर है जब पुराने भारतीय राजवंशों की जगह पहले तुर्क-अफ़गान और फिर मुगल सत्ताएँ आईं। सेना के इतिहास के लिहाज़ से यह समय बहुत दिलचस्प है। इसी दौरान तुर्क-मंगोल ढंग की लड़ाई, घुड़सवार तीरंदाज़ों का दबदबा और बारूद तथा आग्नेयास्त्र (Firearms) भारत पहुँचे, और इन्होंने लड़ने का पूरा तरीका बदल दिया।

2.1.1. मध्यकालीन भारत की समय-सीमा (लगभग 1200 से 1750 ई.)

इतिहासकार प्रायः 1200 ई. के आसपास से, जब मुहम्मद गोरी की जीतों के बाद दिल्ली सल्तनत बनी, लेकर 1750 ई. तक, जब मुगल साम्राज्य टूटने लगा और क्षेत्रीय शक्तियाँ उभरीं, के समय को मध्यकाल मानते हैं। इसके दो बड़े भाग हैं:

1. सल्तनत काल (1206 से 1526 ई.): इसमें दिल्ली पर पाँच वंशों ने राज किया, यानी ग़ुलाम, खिलजी, तुग़लक़, सैयद और लोदी।

2. मुगल काल (1526 से लगभग 1750 ई.): बाबर की जीत से लेकर मुगल केंद्र के कमज़ोर पड़ने तक।

इस दौर की ख़ास बात यह है कि यहाँ भारतीय, तुर्क-अफ़गान, मंगोल और यूरोपीय, चारों तरह की युद्ध-परंपराएँ आपस में घुलती-मिलती दिखाई देती हैं।

2.1.2. मध्यकालीन सैन्य इतिहास (Military History) के स्रोत

समकालीन इतिहास-ग्रंथ: मिनहाज-उस-सिराज की तबक़ात-ए-नासिरी, ज़ियाउद्दीन बरनी की तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही और अबुल फ़ज़ल की अकबरनामा तथा आइन-ए-अकबरी में सेना के संगठन, युद्धों और सैनिकों की संख्या का विस्तार से वर्णन है।

फ़रमान और सरकारी कागज़ात: सुल्तानों और बादशाहों के फ़रमान, मनसब देने के आदेश और राजस्व से जुड़े दस्तावेज़ इक्ता और मनसबदारी को समझने में मदद करते हैं।

विदेशी यात्रियों के वृत्तांत: मोरक्को का इब्न बतूता, निकोलो कोंटी, अब्दुर रज़्ज़ाक़, विजयनगर आए डोमिंगो पेइस और फ़र्नाओ नूनिज़, और मुगल काल के बर्नियर तथा टैवर्नियर ने उस समय की सेना, हथियारों और लड़ाई के ढंग के बारे में बहुत कुछ लिखा है।

पुरातात्त्विक प्रमाण: चित्तौड़गढ़, दौलताबाद और गोलकुंडा जैसे किले, बची हुई तोपें और हथियार तथा युद्धस्थलों से मिली चीज़ें इतिहास की बातों की पुष्टि करती हैं।

2.2: दिल्ली सल्तनत की सैन्य व्यवस्था (Military System of the Delhi Sultanate)

सल्तनत के साथ भारत में तुर्की सैन्य परंपरा आई। इसकी तीन मुख्य बातें थीं: केंद्र के हाथ में सेना, घुड़सवारों की प्रधानता और ज़मीन के राजस्व के बदले सैनिक सेवा।

2.2.1. तुर्क विजय और तराइन के युद्ध

सल्तनत बनने से पहले मुहम्मद गोरी और चौहान राजा पृथ्वीराज तृतीय के बीच तराइन के मैदान में, जो आज हरियाणा में थानेसर के पास है, दो बड़ी लड़ाइयाँ हुईं। **तराइन की पहली लड़ाई (1191 ई.)** में पृथ्वीराज ने गोरी को हरा दिया। अगले ही साल, **तराइन की दूसरी लड़ाई (1192 ई.)** में गोरी ने अपनी चाल बदली और पृथ्वीराज को निर्णायक रूप से हराया।

दूसरी लड़ाई में गोरी की जीत के पीछे कई सैन्य कारण थे। उसके पास घोड़े पर सवार तीरंदाज़ों की तेज़ टुकड़ियाँ थीं। उसने सेना को कई अलग दस्तों में बाँटकर बार-बार हमले कराए और पीछे हटने का दिखावा करके राजपूत सेना को थका दिया। राजपूत सेना भारी और धीमी थी, जो हाथियों और पैदल सैनिकों पर ज़्यादा निर्भर थी। ऊपर से राजपूत राजाओं में आपसी एकता भी नहीं थी। इन लड़ाइयों के बाद उत्तर भारत में तुर्कों के पाँव जम गए और 1206 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।

सल्तनत की सेना में तुर्की ग़ुलाम-सैनिक (बंदगान), घुड़सवार तीरंदाज़ और तुर्क, ताजिक, अफ़गान, खलजी जैसे कई समुदायों के सिपाही थे। सुल्तान की अपनी केंद्रीय सेना 'हश्म-ए-क़ल्ब' कहलाती थी, जबकि सूबों की सेनाएँ इक्तादारों के अधीन रहती थीं।

2.2.2. इक्ता व्यवस्था और उसका सैन्य महत्त्व

इक्ता व्यवस्था सल्तनत के प्रशासन और सेना, दोनों की रीढ़ थी। सुल्तान अपने अधिकारियों (मुक़्ती या वली) को किसी इलाक़े का राजस्व वसूलने का हक़ देता था। इसके बदले उन्हें तीन काम करने होते थे:

- तय संख्या में घुड़सवार सैनिक तैयार रखना।
- अपने इलाक़े में शांति बनाए रखना।

- ज़रूरत पड़ने पर सुल्तान की सेना के साथ लड़ने जाना।

इल्तुतमिश ने इस व्यवस्था को पक्का रूप दिया। बलबन और अलाउद्दीन खिलजी ने इस पर केंद्र की पकड़ और कसी। ज़मीन के राजस्व और सेना को एक साथ बाँधने वाली यही व्यवस्था आगे चलकर मुगलों की मनसबदारी का आधार बनी।

2.2.3. बलबन, अलाउद्दीन और मुहम्मद बिन तुग़लक़ की सेना

बलबन (1266 से 1287 ई.) ने केंद्रीय सेना को मज़बूत किया। वह सैनिकों की शारीरिक क्षमता और उम्र पर ख़ास नज़र रखता था। बूढ़े और कमज़ोर सैनिकों को उसने सेवा से हटाया और सैन्य विभाग 'दीवान-ए-अर्ज़' (Military Department) को असरदार बनाया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 से 1316 ई.) पहला सुल्तान था जिसने नक़द वेतन पाने वाली एक बड़ी स्थायी केंद्रीय सेना खड़ी की। फ़र्ज़ी भर्ती (Recruitment) और धोखाधड़ी रोकने के लिए उसने घोड़ों को दाग़ने (दाग़) और सैनिकों का हुलिया (Descriptive Roll) लिखने (हुलिया) की प्रथा शुरू की।

मुहम्मद बिन तुग़लक़ (1325 से 1351 ई.) ने सेना बढ़ाई और ख़ुरासान जीतने के लिए एक बड़ी फ़ौज तैयार की। लेकिन दोआब में कर बढ़ाने और राजधानी बदलने जैसे उसके फ़ैसले नाकाम रहे, जिसका बुरा असर सेना पर भी पड़ा।

2.2.4. अलाउद्दीन के सुधार: बाज़ार पर नियंत्रण और सेना का पोषण

अलाउद्दीन के सुधारों में सबसे अनोखी बात यह थी कि उसने बाज़ार के नियंत्रण को सीधे सेना के ख़र्च से जोड़ दिया। अनाज, कपड़ा, पशु और रोज़मर्रा की चीज़ों के दाम तय कर दिए गए, और इन पर नज़र रखने के लिए शहना-ए-मंडी जैसे अधिकारी और सराय-ए-अदल जैसे बाज़ार बनाए गए। मक़सद साफ़ था: सैनिक को जो सीमित नक़द वेतन मिलता है, उसमें भी उसका गुज़ारा चल जाए, ताकि ख़ज़ाने पर बोझ बढ़ाए बिना एक बड़ी सेना पाली जा सके। गुप्तचर (बरीद, Spy / Intelligence) बाज़ार और दामों की लगातार ख़बर देते थे।

इसलिए अलाउद्दीन की आर्थिक नीति को असल में एक सैन्य नीति ही समझना चाहिए। उसका लक्ष्य मंगोलों के सामने एक स्थायी, हथियारबंद और वेतनभोगी (Salaried / Paid) सेना खड़ी रखना था।

2.2.5. घुड़सवार, पैदल और हाथी सेना

सल्तनत की सेना के तीन मुख्य अंग थे। **घुड़सवार** सबसे अहम और सबसे प्रतिष्ठित थे। तुर्की और मध्य एशिया की नस्ल के घोड़े तेज़ चाल और अचानक हमलों के लिए काम आते थे। **पैदल सेना** (Infantry) में धनुर्धर, भालाधारी और साधारण सिपाही थे, जो ज़्यादातर घेराबंदी (Siege) और बचाव में लगाए जाते थे। **हाथियों** से शत्रु पर दबाव बनाया जाता, भारी सामान ढोया जाता और किलों के फाटक तोड़े जाते, हालाँकि मंगोल घुड़सवारों के सामने उनकी कमज़ोरियाँ भी खुलकर दिखीं।

2.2.6. सल्तनत सेना की श्रेणियाँ

उस समय के इतिहासकारों के अनुसार सल्तनत की सेना दस-दस के क्रम में बँटी हुई थी:

पद	अधीन इकाई
सर-ए-ख़ेल	10 घुड़सवार
सिपहसालार	10 सर-ए-ख़ेल
अमीर	10 सिपहसालार
मलिक	10 अमीर
ख़ान	10 मलिक

सैन्य विभाग 'दीवान-ए-अर्ज़' का मुखिया 'आरिज़-ए-मुमालिक' कहलाता था। सैनिकों की भर्ती, उनकी जाँच, घोड़ों का निरीक्षण और वेतन तय करना उसी का काम था। अलाउद्दीन के समय एक घोड़े वाले सैनिक (यक-अस्पा) को साल में 234 टंका मिलते थे और दूसरा घोड़ा रखने वाले को 78 टंका ज़्यादा।

2.2.7. फ़िरोज़ तुग़लक़ के समय सेना का गिरना और तैमूर का हमला

फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ (1351 से 1388 ई.) ने सैनिकों को नक़द की जगह ज़मीन के राजस्व के रूप में वेतन ('वजह') देने का चलन बढ़ाया और सैनिक सेवा को पुश्तैनी बना दिया। बूढ़े सैनिक की जगह उसका बेटा, दामाद या ग़ुलाम तक भर्ती हो जाता था। घोड़ों की जाँच में भी भ्रष्टाचार फैल गया। नतीजा यह हुआ कि सेना की लड़ने की क्षमता बहुत गिर गई।

इसका असर 1398 ई. में दिखा, जब मध्य एशिया का शासक तैमूर भारत आया। सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद तुग़लक़ की सेना उसका सामना नहीं कर सकी। तैमूर ने दिल्ली को लूटा और भारी तबाही

मचाई। इसके बाद तुग़लक़ वंश का अंत तय हो गया और सल्तनत कई छोटे क्षेत्रीय राज्यों में बिखर गई।

2.3: मंगोल आक्रमण और उनका असर (Mongol Invasions and their Impact)

तेरहवीं और चौदहवीं सदी में मंगोल बार-बार आए, और इन हमलों ने सल्तनत की सैन्य नीति की दिशा तय की।

2.3.1. सुल्तानों की सीमा-रक्षा नीति

उत्तर-पश्चिमी सीमा को बचाने के लिए सुल्तानों ने कई कदम उठाए। बलबन ने पंजाब में मज़बूत सैनिक चौकियाँ बनाईं और अपने बेटे मुहम्मद को सीमा की रखवाली सौंपी। अलाउद्दीन ने सीमा के किलों की मरम्मत कराई, नई चौकियाँ बनवाईं और गुप्तचर तंत्र मज़बूत किया। सिंधु के इलाक़े में स्थायी टुकड़ियाँ रखी गईं, जो हमले की पहली ख़बर देतीं और शुरुआती रोक लगाती थीं।

2.3.2. मंगोलों से मिली सीख

मंगोलों से लड़ते-लड़ते सल्तनत की सेना ने बहुत कुछ सीखा। तेज़ चाल और अचानक हमले की रणनीति (Strategy) अपनाई गई। धनुर्विद्या और घोड़े पर सवार होकर तीर चलाने को पहले से ज़्यादा गंभीरता से लिया गया। शत्रु की ख़बर पहले से मिल सके, इसके लिए गुप्तचर तंत्र (बरीद-ओ-मुनहियान) को और व्यवस्थित किया गया। सबसे बड़ी सीख यह थी कि एक स्थायी, वेतनभोगी और अनुशासित सेना के बिना काम नहीं चलेगा। अलाउद्दीन के सुधारों के पीछे यही सोच काम कर रही थी।

2.3.3. प्रमुख मंगोल हमले: एक कालक्रम

मंगोलों से पहली टक्कर टल गई। 1221 ई. में चंगेज़ ख़ान ख़्वारिज़्म के भागे हुए शासक जलालुद्दीन मंगबरनी के पीछे-पीछे सिंधु के किनारे तक आ पहुँचा था। जलालुद्दीन ने इल्तुतमिश से पनाह माँगी, पर सुल्तान ने विनम्रता से मना कर दिया, और चंगेज़ लौट गया। असली दबाव अलाउद्दीन के समय आया, जब मंगोल लगभग हर कुछ साल में आक्रमण करने लगे:

वर्ष	मंगोल नेता	परिणाम

वर्ष	मंगोल नेता	परिणाम
1299 ई.	क़ुतलुग़ ख़्वाजा	किली की लड़ाई; मंगोल लौट गए, सेनापति ज़फ़र ख़ान मारे गए
1303 ई.	तरग़ी	दिल्ली घेरी गई; बाद में सीरी का किला बना
1305 ई.	अली बेग और तरतक़	अमरोहा के पास मंगोल हारे
1306 ई.	कबक	रावी के किनारे मंगोल हारे

इन्हीं हमलों के कारण अलाउद्दीन को बड़ी स्थायी सेना (Standing Army) रखनी पड़ी, सीमा पर किलों की कतार खड़ी करनी पड़ी और बाज़ार पर नियंत्रण जैसे उपाय करने पड़े। 1306 ई. के बाद मंगोलों का दबाव धीरे-धीरे कम हो गया।

2.4: मुगलों की सैन्य व्यवस्था (Military System of the Mughals)

मुगलों ने मध्य एशियाई परंपरा, बारूद की तकनीक और एक सुव्यवस्थित प्रशासन को जोड़कर भारतीय सैन्य इतिहास में एक नया अध्याय शुरू किया।

2.4.1. मनसबदारी: जात (Personal Rank) और सवार

मनसबदारी अकबर की बनाई व्यवस्था थी। इसमें हर अधिकारी को एक 'मनसब' यानी पद या दर्जा दिया जाता था, जो दो अंकों में लिखा जाता था। **जात** से अधिकारी का निजी दर्जा, वेतन और दरबार में उसकी हैसियत तय होती थी। **सवार** बताता था कि उसे कितने घुड़सवार रखने हैं, और उनके ख़र्च के लिए उसे अलग से पैसा मिलता था।

इसका सैन्य मतलब यह था कि मुगलों की कोई एक बड़ी स्थायी केंद्रीय सेना नहीं थी। सेना असल में मनसबदारों (Rank-holders) की टुकड़ियों का जोड़ थी। इससे बादशाह को बड़ी और लचीली फ़ौज मिल जाती थी, लेकिन समय के साथ इसमें भ्रष्टाचार घुस आया। दाग़ की प्रथा ढीली पड़ी और काग़ज़ पर दिखाए गए सैनिकों से असली सैनिक कम रहने लगे।

2.4.2. मुगल सेना के अंग

मुगल सेना में चार मुख्य अंग थे। **घुड़सवार**, जो मनसबदारों के अधीन थे, सेना की सबसे बड़ी और प्रतिष्ठित शाखा थे। **तोपखाने** में बैलों या हाथियों से खींची जाने वाली भारी तोपें भी थीं और ऊँटों पर रखी हल्की घूमने वाली तोपें (ज़म्बूरक या शुतुरनाल) भी। **पैदल सेना** में बंदूकची (बरक़ंदाज़), धनुर्धर और भालाधारी थे। **हाथी** सामान ढोने, शान दिखाने और लड़ाई में मदद के काम आते थे।

2.4.3. बारूद और तोपखाना: पानीपत (1526) और खानवा (1527)

भारत में बारूद और आग्नेयास्त्रों के व्यवस्थित सैन्य उपयोग का श्रेय बाबर को जाता है। उसने उस्मानी तुर्कों के तरीके से प्रभावित होकर उस्ताद अली क़ुली और मुस्तफ़ा रूमी जैसे तोपचियों की मदद से अपना तोपखाना खड़ा किया। **पानीपत की पहली लड़ाई (1526 ई.)** में उसने इब्राहीम लोदी के सामने गाड़ियों की कतार बाँधी, जिसके पीछे तोपें रखी गईं (अरबा), और घुड़सवार दस्तों को बगल से घुमाकर शत्रु के पीछे भेजा (तुलुग़मा)। जीत बाबर की हुई। अगले साल **खानवा (1527 ई.)** में राणा सांगा के नेतृत्व वाले राजपूत संघ के सामने भी उसने यही तोपखाना और व्यूह (Battle Formation) इस्तेमाल किया और फिर जीता।

इन दोनों लड़ाइयों ने साफ़ कर दिया कि भारतीय रणभूमि पर बारूद का युग आ चुका है, और पुराने ढंग की लड़ाई उसके सामने टिक नहीं पाएगी।

2.4.4. अकबर के सैन्य सुधार

अकबर ने साम्राज्य बढ़ाने के साथ-साथ सेना का ढाँचा भी सुधारा। मनसबदारी को उसने संस्था का रूप दिया। दाग़ और चेहरा (सैनिकों का ब्योरा) की प्रथा को सख़्ती से फिर लागू किया। तोपखाने पर ख़ास ध्यान दिया और शाही कारख़ाने बनवाए। राजपूत राजाओं से वैवाहिक और राजनीतिक रिश्ते जोड़कर उसने उनकी ताक़त को भी मुगल सेना का हिस्सा बना लिया।

2.4.5. मुगल सेना के सैनिकों की श्रेणियाँ और प्रशासन

मुगल सेना में केवल मनसबदारों के सैनिक ही नहीं थे। उसमें ये श्रेणियाँ भी थीं:

- **मनसबदारों के सैनिक:** मनसबदारों के भर्ती किए और पाले गए घुड़सवार, जो सेना का सबसे बड़ा हिस्सा थे।

- **अहदी (Gentleman Troopers):** इन्हें बादशाह सीधे भर्ती करता था और ये किसी मनसबदार के अधीन नहीं होते थे। इन्हें बहुत भरोसेमंद माना जाता था।
- **दाख़िली:** राज्य के भर्ती किए और वेतन पाने वाले सैनिक, जिन्हें मनसबदारों के साथ लगाया जाता था।
- **सहायक सेनाएँ:** अधीन राजाओं और ज़मींदारों की वे टुकड़ियाँ, जो ज़रूरत पड़ने पर भेजी जाती थीं।

सैन्य विभाग का मुखिया **मीर बख़्शी** था। मनसबदारों की नियुक्ति की सिफ़ारिश, सैनिकों की जाँच और लड़ाई के समय सेना को सजाना उसकी ज़िम्मेदारी थी। मनसब 10 से 10,000 तक के होते थे, हालाँकि बाद में शहज़ादों और बहुत भरोसेमंद सरदारों को इससे भी ऊँचे मनसब मिले। जहाँगीर ने 'दु-अस्पा सिह-अस्पा' प्रथा चलाई, जिसमें चुने हुए मनसबदार अपना जात बढ़ाए बिना ज़्यादा घुड़सवार रख सकते थे।

2.4.6. मुगलों का युद्ध-व्यूह

बाबर मध्य एशिया की परंपरा वाला व्यूह भारत लाया, जिसे बाद के मुगलों ने भी अपनाए रखा। इसके हिस्से इस प्रकार थे:

हिस्सा	अर्थ और काम
हरावल	सबसे आगे का दस्ता, जो पहले भिड़ता था
क़ोल या ग़ोल	बीच का भाग, जहाँ बादशाह या मुख्य सेनापति रहता था
बरानग़ार	दाहिना हिस्सा
जुवानग़ार	बायाँ हिस्सा
इल्तमश	आरक्षित या मदद वाली टुकड़ी
चंदावल	पीछे की रक्षा करने वाला दस्ता
तुलुग़मा	बगल से घूमकर शत्रु के पीछे हमला करने वाले दस्ते

तोपें सबसे आगे रहती थीं और गाड़ियों की कतार उन्हें बचाती थी, जबकि तुलुग़मा (Flanking Tactic) दस्ते शत्रु को घेर लेते थे। पानीपत में बाबर की जीत इसी व्यूह की देन थी।

2.5: हथियार और सैन्य तकनीक (Weapons and Military Technology)

2.5.1. पारंपरिक हथियारों से बारूद की ओर

मध्यकाल की शुरुआत में तलवार, धनुष-बाण और भाला ही मुख्य हथियार थे। धीरे-धीरे इनके साथ बारूद वाले हथियार आए, जैसे तोप, बंदूक और रॉकेट। रॉकेटों का सबसे प्रसिद्ध इस्तेमाल बाद में मैसूर के हैदर अली और टीपू सुल्तान ने किया। यह बदलाव धीमा था, पर निर्णायक साबित हुआ।

2.5.2. बंदूकों का आना और फैलना

सोलहवीं-सत्रहवीं सदी में बत्ती से दागी जाने वाली बंदूक, जिसे यहाँ 'तुफ़ंग' (Matchlock) कहते थे, और फिर मस्कट का चलन बढ़ता गया। मुगल पैदल सेना में बरक़ंदाज़ (Musketeers) एक ज़रूरी हिस्सा बन गए। फिर भी भारतीय सेनाओं ने घुड़सवारों की तुलना में बंदूकधारी पैदल सैनिकों को कम महत्त्व दिया।

2.5.3. तोपखाने का विकास: उस्मानी और यूरोपीय तोपची

भारत में तोपखाना विदेशी जानकारों की मदद से बढ़ा। बाबर के समय उस्मानी तोपची उस्ताद अली क़ुली तोप ढालने और लड़ाई में चलाने की कला लेकर आया। सोलहवीं सदी से पुर्तगाली और दूसरे यूरोपीय तोपची विजयनगर, गुजरात और दक्कनी सल्तनतों की नौकरी करने लगे और बेहतर तोपें बनाने का हुनर साथ लाए। अठारहवीं सदी तक फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ प्रशिक्षकों के असर से भारतीय तोपखाना धीरे-धीरे यूरोपीय स्तर की ओर बढ़ा।

2.5.4. किले और घेराबंदी की तकनीक

मध्यकाल में किले ही ताक़त के केंद्र थे। चित्तौड़गढ़, रणथम्भौर, ग्वालियर, कालिंजर, दौलताबाद (देवगिरि), गोलकुंडा और असीरगढ़ अपनी मज़बूती के लिए जाने जाते थे। दौलताबाद को देखिए: गहरी खाई, अँधेरा और घुमावदार रास्ता और ऊँची चट्टान पर बसा होना, इन सबने उसे लगभग अजेय बना दिया था।

सल्तनत के समय घेराबंदी में **मंजनीक** (पत्थर फेंकने वाला यंत्र, Mangonel) और **अर्रादा** जैसे यंत्र चलते थे। मुगल काल में तोपों के आने से दीवारें गिराना आसान हो गया। अकबर ने चित्तौड़ की घेराबंदी (1567-68 ई.) में **साबात** (Covered Approach) बनवाए, यानी ऊपर से ढके सुरक्षित रास्ते

जिनसे सैनिक दीवार तक पहुँच सकें, और दीवारों के नीचे सुरंगें खुदवाईं। जवाब में किले बनाने वालों ने मोटी दीवारें, बुर्ज (Bastion) और तोपों के लिए अलग जगहें बनानी शुरू कीं।

2.5.5. हाथियों की घटती उपयोगिता

प्राचीन काल से भारतीय सेना की शान रहे युद्ध-हाथी मध्यकाल में धीरे-धीरे पीछे छूटते गए। तुर्क घुड़सवार तीरंदाज़ों के तेज़ हमलों और फिर तोपों तथा बंदूकों के धमाकों से हाथी घबराकर अपनी ही सेना को रौंद देते थे। पानीपत (1526) और खानवा (1527) में ठीक यही हुआ। फिर भी मुगल काल में हाथी भारी तोपें खींचने, किलों के फाटक तोड़ने, सेनापतियों के ऊँचे हौदे और शाही वैभव दिखाने के काम आते रहे।

2.6: क्षेत्रीय सैन्य शक्तियाँ (Regional Military Powers)

2.6.1. राजपूत सैन्य परंपरा और शौर्य-संहिता (Code of Chivalry)

राजपूतों की सैन्य परंपरा बहादुरी, कुल की इज़्ज़त (Honour) और एक ख़ास शौर्य-संहिता पर टिकी थी, जिसमें हार से मौत बेहतर मानी जाती थी। आख़िरी दम तक लड़ने वाला 'साका' और स्त्रियों का 'जौहर' इसी संहिता के हिस्से थे। राजपूत सेना मुख्य रूप से घुड़सवारों पर निर्भर थी और चित्तौड़ तथा कुम्भलगढ़ जैसे किलों के सहारे अपनी रक्षा करती थी।

2.6.2. विजयनगर की सैन्य व्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य (1336 से 1646 ई.) में नायंकार व्यवस्था थी, जिसमें नायकों को ज़मीन देकर उनसे सेना रखवाई जाती थी। विदेशी यात्री बताते हैं कि विजयनगर की सेना बहुत बड़ी थी और उसमें घुड़सवार, पैदल, हाथी और आग्नेयास्त्र, सब थे। राजा अरब और फ़ारस से घोड़े मँगवाने और विदेशी, ख़ासकर मुस्लिम और पुर्तगाली, तोपचियों को नौकरी पर रखने पर बहुत ध्यान देते थे।

2.6.3. शिवाजी की मराठा सेना: गनीमी कावा (Guerrilla Tactics), किले और नौसेना

छत्रपति शिवाजी ने एक नई और बहुत असरदार युद्ध-पद्धति खड़ी की। इसकी पहली ख़ासियत **गनीमी कावा** थी, यानी छापामार युद्ध (Guerrilla Warfare)। इसका मतलब था पहाड़ी और दुर्गम इलाक़ों का फ़ायदा उठाकर अचानक हमला करना, तेज़ी से लौट जाना और शत्रु को थका देना। दूसरी ख़ासियत **किले** थे। रायगढ़, प्रतापगढ़ और सिंहगढ़ जैसे पहाड़ी किले उन्होंने बनवाए या फिर से सँवारे, जो प्रशासन और सेना दोनों के केंद्र बने। तीसरी ख़ासियत **नौसेना** थी। कोंकण तट और समुद्री व्यापार

की रक्षा के लिए शिवाजी ने एक संगठित बेड़ा बनाया, जिसे भारतीय नौसेना के इतिहास में अग्रणी प्रयास माना जाता है।

2.6.4. सिख सैन्य परंपरा: खालसा

गुरु गोबिंद सिंह ने 1699 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की और सिख समुदाय को एक दृढ़ सैनिक चरित्र दिया। पाँच ककार, यानी केश, कड़ा, कृपाण, कच्छा और कंघा, धारण करना ज़रूरी हुआ। इससे अनुशासन (Discipline) और साझी पहचान दोनों मज़बूत हुए। आगे चलकर खालसा ने मुगल और अफ़गान हमलों का विरोध किया, सिख मिसलें बनीं और फिर महाराजा रणजीत सिंह की सेना खड़ी हुई।

2.6.5. मराठा घुड़सवार और नौसेना का आगे का विकास

शिवाजी के घुड़सवार दो तरह के थे। **बारगीर** (State-mounted Cavalry) को घोड़ा और हथियार राज्य देता था, जबकि **शिलेदार** (Self-mounted Cavalry) अपना घोड़ा और हथियार ख़ुद लाते थे। अष्टप्रधान में सेनापति को **सर-ए-नौबत** कहा जाता था। किलों की ज़िम्मेदारी हवलदार, सबनीस और सरनौबत जैसे अधिकारियों में इस तरह बाँटी गई थी कि कोई एक व्यक्ति धोखा न दे सके। अठारहवीं सदी में **कान्होजी आंग्रे** के नेतृत्व में मराठा नौसेना पश्चिमी तट पर इतनी ताक़तवर हो गई कि अंग्रेज़, पुर्तगाली और डच जहाज़ उससे घबराते थे।

2.6.6. अहोम सेना और सराईघाट की लड़ाई

असम के अहोम राज्य ने **पाइक व्यवस्था** (Paik System) के ज़रिए मज़बूत सेना बनाई। हर वयस्क पुरुष (पाइक) को कुछ समय राज्य के लिए श्रम या सैनिक सेवा देनी होती थी, और पाइक 'गोट' नाम के समूहों में बँटे रहते थे। 1671 ई. में ब्रह्मपुत्र पर **सराईघाट की लड़ाई** हुई, जिसमें अहोम सेनापति **लाचित बड़फुकन** ने राजा रामसिंह के नेतृत्व वाली मुगल सेना को हरा दिया। नदी में लड़ने और स्थानीय भूगोल को हथियार बनाने का यह शानदार उदाहरण है। लाचित की याद में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के सबसे अच्छे कैडेट को स्वर्ण पदक दिया जाता है।

2.6.7. महाराजा रणजीत सिंह की फ़ौज-ए-ख़ास

खालसा परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महाराजा रणजीत सिंह (1799 ई. में लाहौर पर अधिकार; शासन 1801 से 1839 ई.) ने उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में यूरोपीय ढंग की आधुनिक सेना बनाई। फ़्रांसीसी और इतालवी अधिकारियों, जैसे वेंचुरा और एलार्ड, की मदद से 'फ़ौज-ए-ख़ास' नाम की आदर्श ब्रिगेड

तैयार हुई, जिसमें अनुशासित पैदल सेना, आधुनिक तोपखाना और यूरोपीय कवायद (Drill) थी। अंग्रेज़ों के सामने खड़ी होने वाली यह भारत की आख़िरी बड़ी देसी सैन्य शक्ति थी।

2.7: सैन्य अभियान और युद्ध: तुलनात्मक अध्ययन (Military Campaigns and Battles: A Comparative Study)

2.7.1. पानीपत के तीन युद्ध

पहला युद्ध (1526 ई.) बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच हुआ। तोपखाने और नए व्यूह के बल पर मुगल जीते और दिल्ली सल्तनत ख़त्म हो गई। **दूसरा युद्ध (1556 ई.)** अकबर की ओर से बैरम ख़ाँ और हेमू के बीच हुआ, जिससे मुगल सत्ता फिर से जमी। **तीसरा युद्ध (1761 ई.)** अहमदशाह अब्दाली और मराठों के बीच हुआ। मराठों को गहरी चोट लगी और उत्तर भारत में जो सत्ता-शून्य (Power Vacuum) बना, उसका फ़ायदा आगे चलकर अंग्रेज़ों ने उठाया।

2.7.2. हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.)

यह युद्ध महाराणा प्रताप और मुगल सेनापति मानसिंह के बीच लड़ा गया और राजपूत वीरता तथा प्रतिरोध का प्रतीक बन गया। किसी पक्ष को पूरी और निर्णायक जीत नहीं मिली, पर प्रताप ने छापामार ढंग से जो संघर्ष जारी रखा, उसका ऐतिहासिक महत्त्व बहुत बड़ा है।

2.7.3. रणनीति, कूटनीति (Diplomacy) और नेतृत्व

इन युद्धों को साथ रखकर देखें तो कुछ बातें साफ़ उभरती हैं। बाबर के तोपखाने जैसी तकनीकी बढ़त अक्सर संख्या पर भारी पड़ी। अकबर और बैरम ख़ाँ जैसे नेतृत्व और तेज़ फ़ैसलों ने नतीजे बदल दिए। पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों के भीतर तालमेल की कमी हार का बड़ा कारण बनी। और राजपूतों तथा मराठों की पारंपरिक वीरता नई सैन्य तकनीक के बिना लंबे समय तक काफ़ी नहीं रही।

2.7.4. तालीकोटा का युद्ध (1565 ई.)

1565 ई. में विजयनगर और दक्कन की चार सल्तनतों, यानी बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और बीदर, के संयुक्त मोर्चे के बीच **तालीकोटा का युद्ध** हुआ। इसे राक्षसी-तंगड़ी या बन्निहट्टी का युद्ध भी कहते हैं। विजयनगर की सेना की कमान आलिय रामराय के हाथ में थी। लड़ाई के बीच रामराय पकड़ा गया और मार डाला गया, जिससे उसकी सेना में भगदड़ मच गई। जीतने वाली सेनाओं ने विजयनगर (हम्पी) शहर को लूटकर उजाड़ दिया।

इस युद्ध से कुछ सैन्य सबक़ निकलते हैं। दक्कनी सल्तनतों का तोपखाना बहुत कुशल था। कुछ वृत्तांतों के अनुसार विजयनगर की सेना के कुछ मुस्लिम सेनानायकों ने ऐन मौक़े पर पाला बदल लिया। और मुख्य सेनापति की मौत से पूरी सेना बिखर गई। मध्यकालीन सेनाओं में एक व्यक्ति के नेतृत्व पर कितना कुछ टिका होता था, यह युद्ध उसका जीता-जागता उदाहरण है।

2.7.5. युद्धों की तुलनात्मक सारणी

युद्ध	पक्ष	परिणाम	सैन्य महत्त्व
तराइन दूसरा (1192)	गोरी और पृथ्वीराज चौहान	गोरी जीता	घुड़सवार तीरंदाज़ों की श्रेष्ठता
पानीपत पहला (1526)	बाबर और इब्राहीम लोदी	बाबर जीता	तोपखाना और तुलुग़मा
खानवा (1527)	बाबर और राणा सांगा	बाबर जीता	राजपूत संघ की हार
पानीपत दूसरा (1556)	अकबर (बैरम ख़ाँ) और हेमू	मुगल जीते	मुगल सत्ता की वापसी
तालीकोटा (1565)	दक्कनी सल्तनतें और विजयनगर	सल्तनतें जीतीं	विजयनगर का अंत
हल्दीघाटी (1576)	मानसिंह और महाराणा प्रताप	अनिर्णीत	राजपूत प्रतिरोध का प्रतीक
सराईघाट (1671)	अहोम और मुगल	अहोम जीते	नदी-युद्ध का कुशल प्रयोग
पानीपत तीसरा (1761)	अब्दाली और मराठा	अब्दाली जीता	मराठा शक्ति को चोट

2.8: मध्यकालीन सैन्य व्यवस्था का पतन (Decline of Medieval Military Systems)

2.8.1. अठारहवीं सदी तक मुगल सेना की कमज़ोरियाँ

अठारहवीं सदी आते-आते मुगल सेना की कमज़ोरियाँ खुलकर सामने आ गईं। मनसबदारी में भ्रष्टाचार फैल चुका था और दाग़ की प्रथा ढीली पड़ने से असली सैनिक कम हो गए थे। केंद्र की पकड़ ढीली पड़ी तो सूबेदार अपनी अलग सेनाएँ जुटाने लगे। पैसे की तंगी से सैनिकों के वेतन और साज-सामान में कटौती हुई। सबसे बड़ी बात यह कि तोप और बंदूक के क्षेत्र में कोई नई खोज नहीं हुई, जबकि यूरोप लगातार आगे बढ़ रहा था।

2.8.2. यूरोपीय ढंग की लड़ाई की ओर बदलाव

अठारहवीं सदी में हैदर अली, टीपू सुल्तान और बाद में सिख तथा मराठा शासकों ने यूरोपीय प्रशिक्षकों की मदद से अपनी सेनाओं को यूरोपीय तर्ज़ पर ढालने की कोशिश की। अनुशासित पैदल टुकड़ियाँ, सिपाही पद्धति और आधुनिक तोपखाना अपनाया गया। फिर भी अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी की संगठित, वेतनभोगी और तकनीक में आगे सेना के सामने भारतीय शक्तियाँ एक-एक करके हारती चली गईं, और उन्नीसवीं सदी में पूरे भारत पर औपनिवेशिक सत्ता क़ायम हो गई।

2.8.3. नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के हमले

1739 ई. में ईरान का शासक **नादिरशाह** भारत आया और करनाल की लड़ाई में मुगल बादशाह मुहम्मद शाह की बड़ी सेना को कुछ ही घंटों में हरा दिया। उसने दिल्ली में भयंकर लूटपाट की और तख़्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन) तथा कोहिनूर हीरा अपने साथ ले गया। इस घटना ने दुनिया के सामने मुगल सेना का खोखलापन उजागर कर दिया।

नादिरशाह की मौत के बाद उसके सेनापति **अहमदशाह अब्दाली** (दुर्रानी) ने 1748 से 1767 ई. के बीच कई बार भारत पर हमला किया। इनमें 1761 ई. का पानीपत का तीसरा युद्ध सबसे निर्णायक था। इन हमलों ने उत्तर भारत को अस्थिर कर दिया और मुगल तथा मराठा, दोनों को कमज़ोर कर दिया। सबसे ज़्यादा फ़ायदा अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी को मिला।

2.9: अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

1. इक्ता व्यवस्था क्या थी? इसका सैन्य और प्रशासनिक महत्त्व बताइए।
2. अलाउद्दीन खिलजी के बाज़ार-नियंत्रण और सेना-पोषण संबंधी सुधारों पर चर्चा कीजिए।
3. मनसबदारी में 'जात' और 'सवार' में क्या अंतर था?
4. गनीमी कावा से आप क्या समझते हैं?
5. पानीपत के तीसरे युद्ध के परिणाम लिखिए।

2.10: सारांश (Summary)

मध्यकालीन भारत (लगभग 1200 से 1750 ई.) की सेना तुर्क-अफ़गान, मंगोल और मुगल प्रभावों के मेल से बनी। तराइन में गोरी की जीत ने सल्तनत का रास्ता खोला। सल्तनत ने इक्ता के ज़रिए सेना और प्रशासन को जोड़ा, और अलाउद्दीन ने बाज़ार-नियंत्रण को सेना के ख़र्च से जोड़कर एक अनोखा प्रयोग किया। मंगोल हमलों ने सीमा-रक्षा और तेज़ चाल वाली लड़ाई की ज़रूरत समझाई। फ़िरोज़ तुग़लक़ के समय से सेना ढीली पड़ी और तैमूर के हमले ने इसकी क़ीमत वसूल ली। मुगलों ने मनसबदारी और बारूद वाले तोपखाने से सेना को नया रूप दिया, जिसकी शुरुआत पानीपत और खानवा में बाबर ने की। राजपूत, विजयनगर, मराठा, सिख और अहोम शक्तियों ने अपनी-अपनी परंपराएँ विकसित कीं। अठारहवीं सदी में मुगल सेना भीतर से खोखली हो गई, नादिरशाह और अब्दाली के हमलों ने उसे और तोड़ा, और यूरोपीय तकनीकी बढ़त ने औपनिवेशिक सत्ता की राह बना दी।

2.11: शब्दावली (Key Terminology)

- **इक्ता** (Revenue Assignment) : राजस्व वसूलने के अधिकार के बदले सैनिक सेवा की व्यवस्था।
- **मुक़्ती या वली** (Iqta Holder / Governor) : इक्ता का प्रशासक, जो राजस्व के बदले सैनिक रखता था।
- **हश्म-ए-क़ल्ब** (Central Army of the Sultan) : दिल्ली सल्तनत में सुल्तान की केंद्रीय सेना।

- **दीवान-ए-अर्ज़** (Military Department) : सल्तनत काल का सैन्य विभाग।
- **आरिज़-ए-मुमालिक** (Head of Military Department) : दीवान-ए-अर्ज़ का मुखिया, जो भर्ती, जाँच और वेतन देखता था।
- **दाग़ और हुलिया** (Branding of Horses and Descriptive Roll) : घोड़ों को दाग़ना और सैनिकों का शारीरिक ब्योरा लिखना; अलाउद्दीन की शुरू की प्रथा।
- **दाग़ और चेहरा** (Branding and Descriptive Roll) : मुगल काल में घोड़ों और सैनिकों का ब्योरा दर्ज करने की प्रथा।
- **सर-ए-ख़ेल** (Commander of Ten Horsemen) : सल्तनत सेना में दस घुड़सवारों का नायक।
- **वजह** (Salary Assignment in Land Revenue) : फ़िरोज़ तुग़लक़ के समय नक़द की जगह दिया जाने वाला राजस्व-अधिकार।
- **बरीद** (Intelligence Officer) : सल्तनत काल का गुप्तचर और सूचना अधिकारी।
- **तराइन के युद्ध** (Battles of Tarain) : 1191 और 1192 ई. में मुहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुई लड़ाइयाँ।
- **किली की लड़ाई** (Battle of Kili) : 1299 ई. में अलाउद्दीन की सेना और क़ुतलुग़ ख़्वाजा के मंगोलों के बीच लड़ाई।
- **मनसबदारी** (Mansabdari System) : अकबर की चलाई पद-श्रेणी व्यवस्था, जिसमें जात और सवार दो पद होते थे।
- **जात** (Personal Rank) : मनसबदार का निजी दर्जा और वेतन बताने वाला अंक।
- **सवार** (Cavalry Rank) : मनसबदार के रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या बताने वाला अंक।
- **मीर बख़्शी** (Paymaster-General / Head of Military) : मुगल सैन्य विभाग का मुखिया।
- **अहदी** (Gentleman Troopers) : बादशाह के सीधे भर्ती किए भरोसेमंद सैनिक।
- **दाख़िली** (Supplementary Troops) : राज्य के भर्ती किए सैनिक, जिन्हें मनसबदारों के साथ लगाया जाता था।
- **दु-अस्पा सिह-अस्पा** (Two-horse and Three-horse Troopers) : जहाँगीर की प्रथा, जिसमें जात बढ़ाए बिना ज़्यादा सवार रखने की छूट थी।
- **हरावल** (Vanguard) : मुगल व्यूह का सबसे आगे वाला दस्ता।
- **तुलुग़मा** (Flanking Tactic) : बगल से घूमकर शत्रु के पीछे हमला करने की मध्य एशियाई चाल।

- **अरबा** (Wagon Barricade) : गाड़ियों की कतार से बना घेरा, जिसके पीछे तोपें रखी जाती थीं।
- **तोपखाना** (Artillery) : मुगल सेना का तोपों वाला अंग।
- **बरक़ंदाज़** (Musketeer) : बंदूक चलाने वाला पैदल सैनिक।
- **तुफ़ंग** (Matchlock Gun) : बत्ती से दागी जाने वाली बंदूक का भारतीय नाम।
- **साबात** (Covered Approach) : घेराबंदी में दीवार तक पहुँचने के लिए बने ढके हुए सुरक्षित रास्ते।
- **मंजनीक** (Mangonel) : पत्थर फेंकने वाला घेराबंदी यंत्र।
- **साका और जौहर** (Last Stand and Self-immolation) : राजपूत परंपरा में आख़िरी दम तक लड़ना (साका) और स्त्रियों का आत्मदाह (जौहर)।
- **गनीमी कावा** (Guerrilla Warfare) : मराठों की छापामार युद्ध-पद्धति।
- **बारगीर** (State-mounted Cavalry) : वे मराठा घुड़सवार जिन्हें घोड़ा और हथियार राज्य देता था।
- **शिलेदार** (Self-mounted Cavalry) : अपना घोड़ा और हथियार ख़ुद लाने वाले मराठा घुड़सवार।
- **खालसा पंथ** (Khalsa Order) : गुरु गोबिंद सिंह का 1699 ई. में स्थापित सिख सैनिक-धार्मिक संगठन।
- **पाइक व्यवस्था** (Paik System) : अहोम राज्य की अनिवार्य श्रम और सैनिक सेवा प्रणाली।
- **नायंकार व्यवस्था** (Nayankara System) : विजयनगर में नायकों को ज़मीन देकर उनसे सेना रखवाने की प्रणाली।
- **फ़ौज-ए-ख़ास** (Model Brigade) : रणजीत सिंह की यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित आदर्श ब्रिगेड।

2.12: स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. दिल्ली सल्तनत के सैन्य संगठन (Military Organisation) का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. मुगल सेना की बनावट और मनसबदारी व्यवस्था की विवेचना कीजिए।
3. शिवाजी के संदर्भ में मराठा सैन्य व्यवस्था की विशेषताएँ बताइए।

4. पानीपत के तीनों युद्धों का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

5. अठारहवीं सदी में मुगल सेना के पतन के कारणों पर विचार कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. हल्दीघाटी के युद्ध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2. विजयनगर की सैन्य व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

3. मध्यकालीन सैन्य इतिहास के मुख्य स्रोत कौन-से हैं?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: हर प्रश्न के नीचे चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से सही विकल्प चुनिए।

1. तराइन की दूसरी लड़ाई किस साल हुई?

(अ) 1191 ई. (ब) 1192 ई.

(स) 1206 ई. (द) 1526 ई.

2. इक्ता व्यवस्था को पक्का रूप किसने दिया?

(अ) कुतुबुद्दीन ऐबक (ब) इल्तुतमिश

(स) बलबन (द) फ़िरोज़ तुग़लक़

3. सल्तनत के सैन्य विभाग का नाम क्या था?

(अ) दीवान-ए-रिसालत (ब) दीवान-ए-अर्ज़

(स) दीवान-ए-इंशा (द) दीवान-ए-विज़ारत

4. घोड़ों को दाग़ने की प्रथा किसने शुरू की?

(अ) बलबन (ब) अलाउद्दीन खिलजी

(स) मुहम्मद बिन तुग़लक़ (द) शेरशाह सूरी

5. अलाउद्दीन के बाज़ार-नियंत्रण का असली मक़सद क्या था?

(अ) व्यापारियों का फ़ायदा

(ब) कम वेतन में बड़ी सेना पालना

(स) खेती बढ़ाना

(द) विदेशी व्यापार बढ़ाना

6. किली की लड़ाई (1299 ई.) किसके विरुद्ध हुई?

(अ) तैमूर (ब) मंगोल

(स) राजपूत (द) अफ़गान

7. किस सुल्तान ने सैनिक सेवा को पुश्तैनी बना दिया?

(अ) बलबन (ब) अलाउद्दीन खिलजी

(स) फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ (द) सिकंदर लोदी

8. तैमूर भारत किस साल आया?

(अ) 1398 ई. (ब) 1451 ई.

(स) 1526 ई. (द) 1739 ई.

9. मनसबदारी व्यवस्था किसने चलाई?

(अ) बाबर (ब) हुमायूँ

(स) अकबर (द) जहाँगीर

10. मुगल सैन्य विभाग का मुखिया कौन था?

(अ) दीवान (ब) मीर बख़्शी

(स) सद्र-उस-सुदूर (द) क़ाज़ी

11. 'दु-अस्पा सिह-अस्पा' किसने शुरू की?

(अ) अकबर (ब) जहाँगीर

(स) शाहजहाँ (द) औरंगज़ेब

12. बादशाह के सीधे भर्ती किए सैनिक क्या कहलाते थे?

(अ) दाख़िली (ब) अहदी

(स) बरक़ंदाज़ (द) पाइक

13. पानीपत की पहली लड़ाई में बाबर के सामने कौन था?

(अ) राणा सांगा (ब) इब्राहीम लोदी

(स) हेमू (द) शेरशाह

14. बाबर का तोपची उस्ताद अली क़ुली किस परंपरा से था?

(अ) पुर्तगाली (ब) उस्मानी तुर्क

(स) फ़्रांसीसी (द) चीनी

15. खानवा में बाबर का मुक़ाबला किससे हुआ?

(अ) इब्राहीम लोदी (ब) राणा सांगा

(स) मेदिनी राय (द) महमूद लोदी

16. मुगल व्यूह में 'हरावल' किसे कहते थे?

(अ) पीछे का दस्ता (ब) दाहिना हिस्सा

(स) सबसे आगे का दस्ता (द) आरक्षित दस्ता

17. पानीपत की दूसरी लड़ाई में मुगलों ने किसे हराया?

(अ) हेमू (ब) शेरशाह

(स) इब्राहीम लोदी (द) अहमदशाह अब्दाली

18. हल्दीघाटी का युद्ध किस साल हुआ?

(अ) 1556 ई. (ब) 1565 ई.

(स) 1576 ई. (द) 1615 ई.

19. तालीकोटा के युद्ध के बाद किस साम्राज्य का पतन हुआ?

(अ) बहमनी (ब) विजयनगर

(स) काकतीय (द) होयसल

20. तालीकोटा में विजयनगर की सेना का नेता कौन था?

(अ) कृष्णदेव राय (ब) आलिय रामराय

(स) सदाशिव राय (द) हरिहर

21. 'गनीमी कावा' किस तरह की लड़ाई है?

(अ) जल युद्ध (ब) छापामार युद्ध

(स) घेराबंदी (द) हाथी युद्ध

22. अष्टप्रधान में सेनापति का पद क्या कहलाता था?

(अ) पेशवा (ब) सर-ए-नौबत

(स) सुमंत (द) अमात्य

23. राज्य से घोड़ा और हथियार पाने वाले मराठा घुड़सवार कौन थे?

(अ) शिलेदार (ब) बारगीर

(स) पाइक (द) अहदी

24. खालसा पंथ की स्थापना किस साल हुई?

(अ) 1675 ई. (ब) 1699 ई.

(स) 1708 ई. (द) 1716 ई.

25. सराईघाट में अहोम सेना के सेनापति कौन थे?

(अ) लाचित बड़फुकन (ब) गदाधर सिंह

(स) रुद्र सिंह (द) चक्रध्वज सिंह

26. 'पाइक व्यवस्था' किस राज्य की थी?

(अ) मराठा (ब) अहोम

(स) विजयनगर (द) सिख

27. करनाल (1739) में मुगल बादशाह को किसने हराया?

(अ) अहमदशाह अब्दाली (ब) नादिरशाह

(स) तैमूर (द) बाबर

28. पानीपत की तीसरी लड़ाई किस साल हुई?

(अ) 1739 ई. (ब) 1757 ई.

(स) 1761 ई. (द) 1764 ई.

29. मराठा नौसेना के प्रसिद्ध नायक कौन थे?

(अ) कान्होजी आंग्रे (ब) बालाजी विश्वनाथ

(स) तानाजी मालुसरे (द) नेताजी पालकर

30. रणजीत सिंह की सेना किन यूरोपीय अधिकारियों ने तैयार की?

(अ) डूप्ले और बुसी (ब) वेंचुरा और एलार्ड

(स) क्लाइव और कूट (द) डी बॉयन और पेरों

(ब) रिक्त स्थान भरिए

1. तराइन की पहली लड़ाई _____ ई. में हुई, जिसमें पृथ्वीराज चौहान जीते।

2. दीवान-ए-अर्ज़ का मुखिया _____ कहलाता था।

3. 1303 ई. के मंगोल हमले के बाद अलाउद्दीन ने _____ का किला बनवाया।

4. मनसबदार का निजी दर्जा और वेतन _____ से तय होता था।

5. पानीपत में बाबर ने _____ और अरबा पद्धति अपनाई।

6. बत्ती से दागी जाने वाली बंदूक को भारत में _____ कहते थे।

7. चित्तौड़ की घेराबंदी में अकबर ने _____ यानी ढके रास्ते बनवाए।

8. सराईघाट की लड़ाई _____ नदी पर हुई।

9. नादिरशाह मयूर सिंहासन के साथ _____ हीरा भी ले गया।

10. खालसा पंथ की स्थापना गुरु _____ ने की।

(स) सही या गलत बताइए

1. तराइन की दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान जीते।

2. अलाउद्दीन खिलजी ने सैनिकों को नक़द वेतन देना शुरू किया।

3. इल्तुतमिश ने जलालुद्दीन मंगबरनी को दिल्ली में शरण दी।

4. मनसबदारी में 'सवार' घुड़सवारों की संख्या बताता था।

5. अहदी सैनिक किसी मनसबदार के अधीन रहते थे।

6. भारत में बारूद के व्यवस्थित सैन्य इस्तेमाल का श्रेय बाबर को है।

7. तालीकोटा में दक्कन की सल्तनतें हार गईं।

8. शिलेदार अपना घोड़ा और हथियार ख़ुद लाते थे।

9. सराईघाट में मुगल सेना जीती।

10. पानीपत के तीसरे युद्ध का फ़ायदा परोक्ष रूप से अंग्रेज़ों को मिला।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. (ब) 1192 ई.	2. (ब) इल्तुतमिश	3. (ब) दीवान-ए-अर्ज़
4. (ब) अलाउद्दीन खिलजी	5. (ब) कम वेतन में बड़ी सेना पालना	6. (ब) मंगोल
7. (स) फ़िरोज़ शाह तुग़लक़	8. (अ) 1398 ई.	9. (स) अकबर
10. (ब) मीर बख़्शी	11. (ब) जहाँगीर	12. (ब) अहदी
13. (ब) इब्राहीम लोदी	14. (ब) उस्मानी तुर्क	15. (ब) राणा सांगा
16. (स) सबसे आगे का दस्ता	17. (अ) हेमू	18. (स) 1576 ई.
19. (ब) विजयनगर	20. (ब) आलिय रामराय	21. (ब) छापामार युद्ध
22. (ब) सर-ए-नौबत	23. (ब) बारगीर	24. (ब) 1699 ई.
25. (अ) लाचित बड़फुकन	26. (ब) अहोम	27. (ब) नादिरशाह
28. (स) 1761 ई.	29. (अ) कान्होजी आंग्रे	30. (ब) वेंचुरा और एलार्ड

(ब) रिक्त स्थान:

1. 1191	2. आरिज़-ए-मुमालिक
3. सीरी	4. जात
5. तुलुग़मा	6. तुफ़ंग
7. साबात	8. ब्रह्मपुत्र
9. कोहिनूर	10. गोबिंद सिंह

(स) सही या गलत:

1. गलत	2. सही	3. गलत	4. सही	5. गलत
6. सही	7. गलत	8. सही	9. गलत	10. सही

2.13: अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1. इक्ता व्यवस्था में अधिकारियों को राजस्व वसूलने का अधिकार मिलता था और बदले में उन्हें सैनिक रखने होते थे (देखें 2.2.2)।
2. अलाउद्दीन ने दाम तय करके सीमित वेतन में भी सैनिकों का गुज़ारा संभव बनाया (देखें 2.2.4)।
3. 'जात' निजी दर्जा और वेतन बताता था, जबकि 'सवार' रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या (देखें 2.4.1)।
4. गनीमी कावा शिवाजी की छापामार युद्ध-नीति थी (देखें 2.6.3)।
5. पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठा शक्ति को गहरी चोट लगी और उत्तर भारत में सत्ता-शून्य बना (देखें 2.7.1)।

2.14: संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

1. सतीश चंद्र, मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुगल काल तक, हरानंद पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।
2. इरफ़ान हबीब, मध्यकालीन भारत का कृषि-आर्थिक इतिहास।
3. ज़ियाउद्दीन बरनी, तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही (अनूदित संस्करण)।
4. अबुल फ़ज़ल, आइन-ए-अकबरी एवं अकबरनामा (अनूदित संस्करण)।
5. जदुनाथ सरकार, शिवाजी और उनका युग।
6. आर.सी. मजूमदार (संपादक), द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ़ द इंडियन पीपल, खंड 6 और 7।
7. गौतम शर्मा, भारतीय सैन्य इतिहास (हिंदी संस्करण)।

Subject: Introduction to Military History	Author: Dr. Mahender Pal
Subject Code: C24MDC108T	Vetter:

इकाई-3

(LESSON-3)

औपनिवेशिक काल में सैन्य व्यवस्था

(Military during Colonial Era)

इकाई की संरचना (Structure)

3.0 उद्देश्य (Learning Objectives)

3.1 परिचय और पृष्ठभूमि (Introduction and Background)

3.1.1 मुगल और क्षेत्रीय सेनाओं से यूरोपीय ढाँचे की ओर

3.1.2 यूरोपीय कंपनियाँ और उनकी निजी सेनाएँ

3.1.3 कंपनी ने सेना क्यों खड़ी की

3.1.4 शुरुआती सिपाही टुकड़ियाँ और स्ट्रिंगर लॉरेंस

3.2 ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना का गठन और विकास (Formation and Growth of the East India Company Army)

3.2.1 मद्रास, बंबई और बंगाल में कंपनी सेना की शुरुआत

3.2.2 प्रेसीडेंसी सेनाएँ

3.2.3 यूरोपीय अधिकारी और भारतीय सिपाही

3.2.4 प्लासी का युद्ध (1757 ई.)

3.2.5 बक्सर का युद्ध (1764 ई.) और इलाहाबाद की संधि

3.2.6 कंपनी सेना में भारतीयों के पद

3.3 औपनिवेशिक सेना का संगठन (Organisation of the Colonial Army)

3.3.1 पैदल, घुड़सवार और तोपखाना

3.3.2 भर्ती के तरीके और क्षेत्र

3.3.3 भारतीय सैनिकों की सेवा-शर्तें

3.3.4 रियासतों की टुकड़ियाँ और सहायक संधि (Subsidiary Alliance)

3.3.5 1857 से पहले के सैनिक विद्रोह

3.3.6 1895 का एकीकरण और किचनर के सुधार

3.4 कंपनी के बड़े सैन्य अभियान (Major Military Campaigns of the Company)

3.4.1 कर्नाटक युद्ध (1746 से 1763)

3.4.2 आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767 से 1799)

3.4.3 आंग्ल-मराठा युद्ध (1775 से 1818)

3.4.4 आंग्ल-सिख युद्ध (1845 से 1849)

3.4.5 अंग्रेज़ी सत्ता को पक्का करने में इन युद्धों की भूमिका

3.4.6 अफ़गान और बर्मा युद्ध तथा सिंध विजय

3.4.7 कंपनी के मुख्य युद्ध: एक सारणी

3.5 औपनिवेशिक सैन्य नीतियों के राजनीतिक और सामाजिक असर (Political and Social Impact of Colonial Military Policies)

3.5.1 कुछ इलाक़ों और समुदायों का सैन्यीकरण

3.5.2 सेना: नियंत्रण का औज़ार या रोज़गार का ज़रिया

3.5.3 राष्ट्रवादियों की आलोचना

3.5.4 1946 का नौसेना विद्रोह

3.5.5 भारत से बाहर भारतीय सेना और सैन्य ख़र्च

3.5.6 'छावनी (Cantonment) राज्य' (Garrison State) की धारणा

3.6 आज़ादी के समय औपनिवेशिक सेना की विरासत (Legacy of the Colonial Army at Independence)

3.6.1 1947 में सशस्त्र बलों की स्थिति

3.6.2 भारत और पाकिस्तान के बीच सेनाओं का बँटवारा

3.6.3 आज़ाद भारत की सेना में औपनिवेशिक परंपराएँ

3.6.4 गोरखा रेजिमेंटों का बँटवारा (1947 का त्रिपक्षीय समझौता)

3.6.5 सेनाओं का भारतीयकरण (Indianisation) और पहले भारतीय प्रमुख

3.7 अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

3.8 सारांश (Summary)

3.9 शब्दावली (Key Terminology)

3.10 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

3.11 अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

3.12 संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

3.0: उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

1. मुगल और क्षेत्रीय सेनाओं से यूरोपीय औपनिवेशिक सेना की ओर हुए बदलाव को समझ सकेंगे।
2. यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों ने भारत में अपनी निजी सेनाएँ क्यों खड़ी कीं, इसका विश्लेषण कर सकेंगे।
3. ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना कैसे बनी और कैसे बढ़ी, यह जान सकेंगे।
4. प्रेसीडेंसी (Presidency) सेनाओं की बनावट और उनमें यूरोपीय अधिकारियों तथा भारतीय सिपाहियों की भूमिका बता सकेंगे।
5. औपनिवेशिक सेना के संगठन, भर्ती (Recruitment) के तरीके और सेवा-शर्तों से परिचित हो सकेंगे।
6. कर्नाटक, मैसूर, मराठा और सिख युद्धों का ऐतिहासिक महत्त्व समझ सकेंगे।
7. औपनिवेशिक सैन्य नीतियों के राजनीतिक और सामाजिक असर पर विचार कर सकेंगे।
8. आज़ादी के समय सेनाओं की स्थिति, उनका बँटवारा और आज की भारतीय सेना में बची औपनिवेशिक परंपराओं को समझ सकेंगे।

3.1: परिचय और पृष्ठभूमि (Introduction and Background)

भारत में सेना का इतिहास बहुत पुराना और बहुरंगी है। मुगल साम्राज्य कमज़ोर हुआ और क्षेत्रीय शक्तियाँ उभरीं, तो उपमहाद्वीप में एक नई राजनीतिक और सैन्य तस्वीर बनने लगी। ठीक इसी समय यूरोप की व्यापारिक कंपनियाँ यहाँ पहुँचीं। शुरू में उन्होंने अपने व्यापार की हिफ़ाज़त के लिए सैनिक रखे, लेकिन धीरे-धीरे यही सैनिक भारत में औपनिवेशिक सत्ता क़ायम करने का सबसे बड़ा औज़ार बन गए।

3.1.1. मुगल और क्षेत्रीय सेनाओं से यूरोपीय ढाँचे की ओर

मुगल सेना मनसबदारी (Mansabdari System) पर टिकी थी। सैनिक और असैनिक, दोनों तरह के अधिकारियों को मनसब मिलता था और उन्हें अपने दर्जे के हिसाब से घुड़सवार और सिपाही रखने होते थे। इस व्यवस्था का स्वरूप सामंती (Feudal) था। इसमें एक स्थायी, प्रशिक्षित और केंद्र के अधीन सेना की कमी थी।

अठारहवीं सदी में मुगल सत्ता ढीली पड़ी, तो मराठा, सिख, निज़ाम, अवध और मैसूर जैसी क्षेत्रीय शक्तियाँ उठ खड़ी हुईं। इन्होंने अपनी सेनाओं को आधुनिक बनाने की कोशिश की और कई जगह फ़्रांसीसी प्रशिक्षकों की मदद से पैदल सेना (Infantry), तोपखाने (Artillery) और प्रशिक्षण में सुधार किए।

इसी के साथ यूरोपीय कंपनियाँ यहाँ एक बिलकुल अलग नमूना लेकर आईं। इसकी चार मुख्य बातें थीं:

- **स्थायी और वेतनभोगी (Salaried / Paid) सेना:** सामंती ज़िम्मेदारी की जगह नक़द वेतन पर सैनिक सेवा।
- **आधुनिक प्रशिक्षण और अनुशासन (Discipline):** यूरोपीय कवायद (Drill), कतार बाँधकर लड़ना (जिसे कतारबद्ध युद्ध कहते हैं) और एक साथ गोली दागना।
- **केंद्रीकृत कमान:** साफ़ पद-क्रम (Hierarchy) और आदेश की एक सीधी श्रृंखला।
- **एक जैसे हथियार:** चकमक पत्थर वाली मस्कट, संगीन (Bayonet) और आधुनिक तोपें।

आगे चलकर यही आधुनिक ढाँचा भारतीय शक्तियों पर यूरोपीय कंपनियों की सैन्य बढ़त का आधार बना।

3.1.2. यूरोपीय कंपनियाँ और उनकी निजी सेनाएँ

पुर्तगाली: 1498 में वास्को द गामा के आने के बाद पुर्तगालियों ने गोवा, दमन और दीव जैसे ठिकाने बनाए। समुद्री रास्तों की रक्षा के लिए उन्होंने जहाज़ी बेड़ा रखा और तट के किलों के लिए थल सैनिक। भारत में यूरोपीय सैन्य उपस्थिति की यह पहली झलक थी।

डच: डच ईस्ट इंडिया कंपनी का ध्यान मुख्य रूप से मसालों के व्यापार पर था। कोरोमंडल तट और बंगाल में अपनी कोठियों (Factories / Trading Posts) को बचाने के लिए उसने थोड़े-बहुत सैनिक रखे।

फ़्रांसीसी: फ़्रांसीसी कंपनी का मुख्य केंद्र पांडिचेरी था। गवर्नर डूप्ले के समय फ़्रांसीसियों ने भारतीय सैनिकों को यूरोपीय ढंग से सिखाकर एक व्यवस्थित सिपाही सेना खड़ी की। बाद में अंग्रेज़ों ने भी इसी से सीख ली।

अंग्रेज़: अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी 1600 में बनी। शुरू में उसका इरादा केवल व्यापार का था, पर अपनी कोठियों (फ़ैक्टरियों) की रक्षा और दूसरी यूरोपीय कंपनियों से मुक़ाबले के लिए उसने धीरे-धीरे अपनी सैन्य ताक़त बढ़ा ली।

इन चारों के बीच चलने वाली व्यापारिक और सैनिक होड़ ने भारत में सैन्यीकरण (Militarisation) को और तेज़ कर दिया।

3.1.3. कंपनी ने सेना क्यों खड़ी की

1. **कोठियों की सुरक्षा:** मद्रास, बंबई और बंगाल की कोठियों को स्थानीय हमलों और समुद्री लुटेरों से बचाना ज़रूरी था।

2. **यूरोपीय प्रतिद्वंद्वी:** ख़ासकर फ़्रांसीसियों से बढ़ती टक्कर ने कंपनी को अपनी ताक़त बढ़ाने पर मजबूर किया।

3. **स्थानीय शासकों से रियायतें:** सेना के बल पर कंपनी नवाबों और राजाओं से व्यापारिक छूट और सुरक्षा के समझौते हासिल कर सकती थी।

4. **राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा:** अठारहवीं सदी के बीच तक कंपनी व्यापारी से राजनीतिक और सैनिक शक्ति में बदलने लगी थी।

5. **सस्ती और भरपूर जनशक्ति:** भारत में सैनिक बनने को तैयार लोगों की कमी नहीं थी। उन्हें यूरोपीय प्रशिक्षण देकर कम ख़र्च में असरदार सेना बनाई जा सकती थी।

3.1.4. शुरुआती सिपाही टुकड़ियाँ और स्ट्रिंगर लॉरेंस

कंपनी के पहले रखवाले कोई नियमित फ़ौज नहीं थे। कोठियों के दरवाज़ों पर गिनती के यूरोपीय सिपाही, पुर्तगाली-भारतीय मूल के 'टोपास' और कुछ स्थानीय प्यादे तैनात रहते थे। न इनकी कोई ढंग की कवायद होती थी, न कोई कड़ा अनुशासन।

1746 में जब फ़्रांसीसियों ने मद्रास पर क़ब्ज़ा कर लिया, तब अंग्रेज़ों की आँखें खुलीं कि उन्हें एक संगठित सेना चाहिए। 1748 में मेजर **स्ट्रिंगर लॉरेंस** मद्रास आए। उन्होंने भारतीय सिपाहियों को नियमित कंपनियों में बाँटा, उन्हें यूरोपीय कवायद और अनुशासन सिखाया और उन पर यूरोपीय अधिकारी रखे। इसी कारण उन्हें **'भारतीय सेना का जनक'** कहा जाता है।

बंगाल में रॉबर्ट क्लाइव ने 1757 में पहली नियमित सिपाही बटालियन बनाई, जो 'लाल पलटन' के नाम से मशहूर हुई। इन सिपाहियों को लाल कोट, मस्कट और संगीन मिलती थी और वे यूरोपीय अधिकारी के आदेश पर कतार में खड़े होकर गोली चलाते थे।

3.2: ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना का गठन और विकास (Formation and Growth of the East India Company Army)

3.2.1. मद्रास, बंबई और बंगाल में कंपनी सेना की शुरुआत

मद्रास: 1639 में फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज बनने के साथ ही यहाँ सैनिक टुकड़ियाँ बनने लगीं। 1748 तक मद्रास में यूरोपीय और भारतीय सैनिकों की संगठित सेना खड़ी हो चुकी थी, जो आगे मद्रास आर्मी बनी।

बंबई: 1668 में बंबई द्वीप अंग्रेज़ी ताज से कंपनी को मिला। पश्चिमी तट की रक्षा और समुद्री डाकुओं से बचाव के लिए यहाँ भी टुकड़ियाँ बनाई गईं।

बंगाल: 1690 के दशक में कलकत्ता बसा और फ़ोर्ट विलियम बना, तो बंगाल में कंपनी की सैन्य उपस्थिति शुरू हुई। प्लासी (1757) और बक्सर (1764) के बाद यहाँ कंपनी की ताक़त इतनी बढ़ी कि बंगाल आर्मी तीनों प्रेसीडेंसी सेनाओं में सबसे बड़ी हो गई।

3.2.2. प्रेसीडेंसी सेनाएँ

कंपनी का प्रशासन तीन प्रेसीडेंसियों, यानी बंगाल, मद्रास और बंबई, में बँटा था, और हर एक की अपनी सेना थी। हर प्रेसीडेंसी सेना का अपना प्रशासन, अपना कमांडर-इन-चीफ़ और अपना भर्ती-क्षेत्र था। तीनों के बीच तालमेल कम था, हालाँकि सबसे ऊपर का नियंत्रण कंपनी के निदेशक मंडल और बाद में ब्रिटिश सरकार के पास था। 1857 के बाद इनके पुनर्गठन (Reorganisation) पर ज़ोर दिया गया, पर यह व्यवस्था औपचारिक रूप से 1895 तक चली, जब एकीकृत भारतीय सेना बनी।

3.2.3. यूरोपीय अधिकारी और भारतीय सिपाही

कर्नल, मेजर, कैप्टन जैसे सारे ऊँचे पद यूरोपीय, ज़्यादातर अंग्रेज़, अधिकारियों के लिए थे। रणनीति (Strategy), अनुशासन और सेना पर पूरा नियंत्रण इन्हीं के हाथ में था। भारतीय सैनिक नीचे और बीच के स्तर पर भर्ती होते थे और 'सिपाही' कहलाते थे। वे सूबेदार और जमादार जैसे कनिष्ठ अधिकारी पदों तक तो पहुँच सकते थे, पर वरिष्ठ कमीशंड पद उन्हें कभी नहीं मिलता था।

नस्ल पर टिके इस भेदभाव ने भारतीय सैनिकों में गहरी नाराज़गी पैदा की, जिसकी 1857 के विद्रोह (Revolt) में बड़ी भूमिका रही।

3.2.4. प्लासी का युद्ध (1757 ई.)

23 जून 1757 को भागीरथी के किनारे बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और रॉबर्ट क्लाइव की सेना आमने-सामने हुईं। नवाब के पास लगभग पचास हज़ार सैनिक थे, जबकि कंपनी के पास लगभग तीन हज़ार, जिनमें ज़्यादातर भारतीय सिपाही थे। पर नवाब के सेनापति मीर जाफ़र, राय दुर्लभ और यार लुत्फ़ ख़ान साज़िश में शामिल थे और लड़े ही नहीं। केवल मीर मदान और मोहनलाल ने जमकर मुक़ाबला किया।

सैन्य दृष्टि से यह छोटी-सी झड़प थी, पर इसके राजनीतिक नतीजे बहुत दूर तक गए। मीर जाफ़र नवाब बना, कंपनी को बंगाल में अपार धन और विशेष अधिकार मिले, और भारत में अंग्रेज़ी राजनीतिक सत्ता की नींव पड़ गई। इसी कारण 1757 को औपनिवेशिक युग (Colonial Era) की शुरुआत माना जाता है।

3.2.5. बक्सर का युद्ध (1764 ई.) और इलाहाबाद की संधि

प्लासी के सात साल बाद, 22 अक्टूबर 1764 को, असली परीक्षा हुई। बक्सर के मैदान में मेजर हेक्टर मुनरो के सामने एक साथ तीन ताक़तें थीं: गद्दी से हटाया गया बंगाल का नवाब मीर क़ासिम, अवध का शुजाउद्दौला और ख़ुद मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय। इस बार कोई साज़िश नहीं थी, आमने-सामने की लड़ाई थी, और कंपनी जीती। इसी से साफ़ हो गया कि उसकी फ़ौज के सामने उत्तर भारत की कोई शक्ति टिक नहीं सकती।

1765 की **इलाहाबाद संधि** में शाह आलम द्वितीय ने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की **दीवानी** (Revenue Rights), यानी राजस्व वसूलने का अधिकार, दे दिया। कंपनी को आय का एक स्थायी और बड़ा स्रोत मिल गया, जिसके सहारे उसने अपनी सेना तेज़ी से बढ़ाई। विडंबना यह थी कि भारत को जीतने वाली सेना का ख़र्च भारत के ही राजस्व से चलने लगा।

3.2.6. कंपनी सेना में भारतीयों के पद

भारतीय सैनिकों के लिए एक अलग पद-क्रम था, जो यूरोपीय अधिकारियों के नीचे काम करता था:

पैदल सेना	घुड़सवार सेना	लगभग बराबर का पद
सिपाही	सवार	साधारण सैनिक
नायक	लांस दफ़ादार	लांस कॉर्पोरल या कॉर्पोरल
हवलदार	दफ़ादार	सार्जेंट
जमादार	जमादार	लेफ़्टिनेंट (भारतीय अधिकारी)
सूबेदार	रिसालदार	कैप्टन (भारतीय अधिकारी)
सूबेदार-मेजर	रिसालदार-मेजर	सबसे वरिष्ठ भारतीय अधिकारी

ये भारतीय अधिकारी किसी भी यूरोपीय अधिकारी को, चाहे वह सबसे नया क्यों न हो, आदेश नहीं दे सकते थे। आगे चलकर इन्हें वायसराय (Viceroy) कमीशन मिलने लगा, और यही व्यवस्था आज़ाद भारत में 'जूनियर कमीशंड ऑफ़िसर' के रूप में बनी रही।

3.3: औपनिवेशिक सेना का संगठन (Organisation of the Colonial Army)

3.3.1. पैदल, घुड़सवार और तोपखाना

पैदल सेना सबसे बड़ा अंग थी और बटालियनों तथा रेजिमेंटों में बँटी थी, जिनके भीतर कई कंपनियाँ होती थीं। **घुड़सवार सेना** (Cavalry) तेज़ चाल और टोह लेने के काम आती थी और मैदानी लड़ाइयों में निर्णायक साबित होती थी। **तोपखाने** को सबसे संवेदनशील अंग माना जाता था, इसलिए उस पर यूरोपीय नियंत्रण सबसे कड़ा रखा गया। 1857 के बाद तो तोपखाने में भारतीयों की भागीदारी बहुत ही कम कर दी गई।

3.3.2. भर्ती के तरीके और क्षेत्र

शुरू में भर्ती बड़े दायरे से होती थी। 1857 के बाद अंग्रेज़ों ने 'मार्शल रेस' (Martial Race) यानी 'लड़ाकू जाति' का सिद्धांत अपनाया। इसके अनुसार सिख, गोरखा, जाट, राजपूत और पठान जैसे कुछ समुदाय स्वभाव से लड़ने के लिए बने माने गए, जबकि बंगाल और दक्षिण भारत के समुदायों को धीरे-धीरे भर्ती से दूर कर दिया गया। इस नीति का असली मक़सद भविष्य के विद्रोह का ख़तरा घटाना और एक 'भरोसेमंद' सैनिक आधार तैयार करना था।

3.3.3. भारतीय सैनिकों की सेवा-शर्तें

भारतीय सिपाही को यूरोपीय सैनिक से काफ़ी कम वेतन मिलता था। तरक्क़ी की गुंजाइश बहुत कम थी और ऊँचे पद हमेशा यूरोपीयों के लिए रहते थे। बर्मा जैसे अभियानों में समुद्र पार जाना धार्मिक और सामाजिक नियमों के ख़िलाफ़ माना जाता था, और यह मुद्दा लगातार विवाद में रहा। एनफ़ील्ड राइफ़ल के कारतूसों का विवाद तो 1857 का तात्कालिक कारण (Immediate Cause) ही बन गया। दूसरी ओर, सेवानिवृत्ति पर कुछ सैनिकों को पेंशन और ज़मीन भी मिलती थी, जिससे फ़ौज की नौकरी आर्थिक रूप से आकर्षक बनी रहती थी।

3.3.4. रियासतों की टुकड़ियाँ और सहायक संधि (Subsidiary Alliance)

लॉर्ड वेलेज़ली की सहायक संधि के तहत रियासतों को अपनी रक्षा के लिए कंपनी की सेना रखनी पड़ती थी और उसका ख़र्च भी उठाना पड़ता था। इसका नतीजा यह हुआ कि रियासतों की अपनी सैनिक ताक़त घटती गई और वे सैन्य मामलों में पूरी तरह कंपनी पर निर्भर हो गईं। बिना सीधी लड़ाई के रियासतों को क़ाबू में रखने का यह कंपनी का बहुत कारगर तरीका था।

3.3.5. 1857 से पहले के सैनिक विद्रोह

1857 अचानक नहीं हुआ। उससे पहले भी कई बार सिपाहियों ने अपनी नाराज़गी जताई थी।

- **वेल्लोर विद्रोह (1806):** मद्रास सेना के कमांडर ने वर्दी और रूप-रंग के नए नियम लागू किए। सिपाही अब माथे पर तिलक नहीं लगा सकते थे, कानों में बालियाँ नहीं पहन सकते थे, और उन्हें ऐसी टोपी पहननी थी जिस पर चमड़े का निशान लगा था। सिपाहियों को लगा कि यह उनका धर्म भ्रष्ट करने की चाल है। 10 जुलाई 1806 की रात वेल्लोर किले में, जहाँ टीपू सुल्तान का परिवार नज़रबंद था, उन्होंने हथियार उठा लिए। अंग्रेज़ों ने विद्रोह को उतनी ही बेरहमी से दबाया।
- **बैरकपुर विद्रोह (1824):** बर्मा के पहले युद्ध के दौरान 47वीं बंगाल नेटिव इन्फ़ैंट्री को मोर्चे पर भेजने का आदेश मिला। सिपाही समुद्र के रास्ते जाने को तैयार नहीं थे, और ज़मीन से जाने के लिए बैलगाड़ियाँ भी नहीं दी गईं। उन्होंने कूच से इनकार किया तो परेड-मैदान पर उन पर तोपें दाग दी गईं और रेजिमेंट का नाम ही सूची से मिटा दिया गया।
- **दूसरे असंतोष:** 1840 के दशक में सिंध और पंजाब के अभियानों के दौरान विदेश-सेवा भत्ता (बट्टा) बंद होने पर भी कई रेजिमेंटें नाराज़ हुईं।

इन घटनाओं से साफ़ है कि धार्मिक भावनाओं, सेवा-शर्तों और आर्थिक हितों की अनदेखी से असंतोष लगातार जमा हो रहा था, जो 1857 में फूट पड़ा।

3.3.6. 1895 का एकीकरण और किचनर के सुधार

1879 के ईडन आयोग की सिफ़ारिशों पर 1 अप्रैल 1895 को तीनों प्रेसीडेंसी सेनाएँ ख़त्म करके एक **भारतीय सेना** बनाई गई। इसे चार कमानों में बाँटा गया: पंजाब, बंगाल, मद्रास और बंबई। पूरी सेना भारत के कमांडर-इन-चीफ़ के अधीन आ गई।

लॉर्ड **किचनर** (कमांडर-इन-चीफ़, 1902 से 1909) ने सेना को युद्ध के लिए तैयार रखने की दृष्टि से फिर से गढ़ा। उन्होंने रेजिमेंटों को नए क्रमांक दिए, सेना को उत्तरी और दक्षिणी सेनाओं तथा नौ डिवीज़नों में बाँटा और अफ़सरों के प्रशिक्षण के लिए **केटा स्टाफ़ कॉलेज** बनाया। सेना के प्रशासन पर किसका नियंत्रण हो, इस पर किचनर और वायसराय लॉर्ड कर्ज़न में टकराव हुआ, जिसे किचनर-कर्ज़न विवाद कहा जाता है, और 1905 में कर्ज़न को इस्तीफ़ा देना पड़ा। इसके बाद सेना के मामलों में कमांडर-इन-चीफ़ सबसे शक्तिशाली अधिकारी बन गया।

3.4: कंपनी के बड़े सैन्य अभियान (Major Military Campaigns of the Company)

3.4.1. कर्नाटक युद्ध (1746 से 1763)

दक्षिण भारत पर क़ब्ज़े के लिए अंग्रेज़ों और फ़्रांसीसियों में तीन कर्नाटक युद्ध हुए। दोनों ने कर्नाटक के नवाब और हैदराबाद के निज़ाम के उत्तराधिकार झगड़ों का फ़ायदा उठाया और अपनी-अपनी ताक़त बढ़ाई। तीसरे कर्नाटक युद्ध (1758 से 1763) में अंग्रेज़ निर्णायक रूप से जीते और दक्षिण में फ़्रांसीसी ताक़त सिमट गई।

3.4.2. आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767 से 1799)

हैदर अली और टीपू सुल्तान के नेतृत्व में मैसूर ने चार युद्धों में अंग्रेज़ों को कड़ी टक्कर दी। टीपू के रॉकेट तोपखाने जैसे आधुनिक तरीकों के बावजूद 1799 के चौथे युद्ध में श्रीरंगपट्टनम गिरा, टीपू मारे गए और मैसूर अंग्रेज़ों के हाथ आ गया।

3.4.3. आंग्ल-मराठा युद्ध (1775 से 1818)

मराठा संघ के साथ तीन युद्ध हुए। पहला अनिर्णीत रहा। दूसरे (1803 से 1805) में अंग्रेज़ों को बड़े इलाक़े मिले। तीसरे (1817 से 1818) में मराठा शक्ति पूरी तरह बिखर गई और मध्य तथा पश्चिम भारत पर अंग्रेज़ी प्रभुत्व हो गया।

3.4.4. आंग्ल-सिख युद्ध (1845 से 1849)

1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद सिख राज्य में अस्थिरता फैल गई। अंग्रेज़ों ने इसका फ़ायदा उठाकर दो युद्ध लड़े। दूसरे युद्ध (1848 से 1849) में सिखों की हार के बाद पंजाब अंग्रेज़ी राज में मिला लिया गया। कंपनी के इलाक़ाई विस्तार का यह आख़िरी बड़ा चरण था।

3.4.5. अंग्रेज़ी सत्ता को पक्का करने में इन युद्धों की भूमिका

इन युद्धों के ज़रिए अंग्रेज़ों ने फ़्रांसीसी, मैसूर, मराठा और सिख, सभी बड़ी शक्तियों को एक-एक करके हराया और उन्नीसवीं सदी के बीच तक पूरे उपमहाद्वीप पर सीधा या परोक्ष नियंत्रण कर लिया। यह 'फूट डालो और राज करो' की नीति, सहायक संधि और सैन्य श्रेष्ठता, तीनों के मिले-जुले इस्तेमाल का नतीजा था।

3.4.6. अफ़गान और बर्मा युद्ध तथा सिंध विजय

भारत के भीतर फैलने के साथ-साथ कंपनी और बाद में ब्रिटिश सरकार ने सीमाओं पर भी कई युद्ध लड़े, जिनमें भारतीय सिपाही आगे रहे।

- **पहला आंग्ल-अफ़गान युद्ध (1839 से 1842):** रूस के बढ़ते असर के डर से, जिसे 'ग्रेट गेम' कहा जाता है, अंग्रेज़ों ने अफ़गानिस्तान पर चढ़ाई की। जनवरी 1842 में काबुल से पीछे हटते हुए जनरल एल्फ़िंस्टन की सेना लगभग पूरी तरह ख़त्म हो गई। ब्रिटिश सैन्य इतिहास (Military History) की यह सबसे बुरी हारों में गिनी जाती है।
- **दूसरा (1878 से 1880) और तीसरा (1919) अफ़गान युद्ध:** दूसरे युद्ध के बाद अफ़गानिस्तान की विदेश नीति अंग्रेज़ों के हाथ आ गई। तीसरे युद्ध के बाद रावलपिंडी संधि (1919) से अफ़गानिस्तान पूरी तरह आज़ाद हो गया।
- **सिंध विजय (1843):** चार्ल्स नेपियर ने मियानी की लड़ाई में सिंध के अमीरों को हराया और सिंध को साम्राज्य में मिला लिया।
- **आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824 से 1826, 1852, 1885):** तीन युद्धों में पूरा बर्मा ब्रिटिश भारत का हिस्सा बना। पहला युद्ध यांडबू संधि (1826) से ख़त्म हुआ और असम पर अंग्रेज़ों का नियंत्रण हो गया।

3.4.7. कंपनी के मुख्य युद्ध: एक सारणी

युद्ध या अभियान	समय	मुख्य प्रतिद्वंद्वी	परिणाम
कर्नाटक युद्ध	1746 से 1763	फ़्रांसीसी	फ़्रांसीसी ताक़त सिमटी; वांडीवाश (1760) में निर्णायक जीत
प्लासी	1757	सिराजुद्दौला	बंगाल में कंपनी का दबदबा
बक्सर	1764	मीर क़ासिम, शुजाउद्दौला, शाह आलम द्वितीय	दीवानी का अधिकार (1765)
आंग्ल-मैसूर युद्ध	1767 से 1799	हैदर अली, टीपू सुल्तान	श्रीरंगपट्टनम का पतन (1799)

युद्ध या अभियान	समय	मुख्य प्रतिद्वंद्वी	परिणाम
आंग्ल-मराठा युद्ध	1775 से 1818	मराठा संघ	पेशवाई का अंत
आंग्ल-सिख युद्ध	1845 से 1849	सिख राज्य	पंजाब का विलय (1849)
पहला आंग्ल-अफ़गान युद्ध	1839 से 1842	अफ़गान शासक	अंग्रेज़ी सेना की भारी हार

3.5: औपनिवेशिक सैन्य नीतियों के राजनीतिक और सामाजिक असर (Political and Social Impact of Colonial Military Policies)

3.5.1. कुछ इलाक़ों और समुदायों का सैन्यीकरण

मार्शल रेस सिद्धांत के चलते पंजाब, नेपाल से सटे गोरखा इलाक़े और उत्तर-पश्चिमी सीमा का भारी सैन्यीकरण हुआ। बंगाल और दक्षिण भारत इससे बाहर कर दिए गए। इससे सेना की भर्ती में क्षेत्रीय असंतुलन पैदा हुआ, जो आज़ादी के बाद भी लंबे समय तक बना रहा।

3.5.2. सेना: नियंत्रण का औज़ार या रोज़गार का ज़रिया

फ़ौज की नौकरी के दो पहलू थे। एक ओर यह ब्रिटिश सत्ता को टिकाए रखने और भीतर के विद्रोह कुचलने का मुख्य साधन थी। दूसरी ओर गाँवों और ग़रीब इलाक़ों के लोगों के लिए यह नियमित आमदनी, सामाजिक इज़्ज़त (Honour) और ज़मीन पाने का अहम रास्ता भी थी।

3.5.3. राष्ट्रवादियों की आलोचना

राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं ने औपनिवेशिक सैन्य नीति की कड़ी आलोचना की। उनकी आपत्ति थी कि भारतीय सैनिकों को दोनों विश्वयुद्धों में ब्रिटिश साम्राज्य के हितों के लिए झोंका गया, कि भारतीयों को ऊँचे पदों से नस्ल के आधार पर दूर रखा गया, और कि मार्शल रेस का सिद्धांत किसी वैज्ञानिक आधार के बिना समाज को बाँटने वाला था।

3.5.4. 1946 का नौसेना विद्रोह

फ़रवरी 1946 में बंबई में रॉयल इंडियन नेवी के भारतीय नाविकों ने भेदभाव, घटिया खाने और वेतन की असमानता के ख़िलाफ़ विद्रोह किया। यह जल्दी ही कराची, मद्रास और कलकत्ता जैसे नौसैनिक अड्डों तक फैल गया। सैन्य दृष्टि से विद्रोह सफल नहीं हुआ, पर उसका संदेश बहुत गहरा था: अंग्रेज़

अब भारतीय सशस्त्र बलों की वफ़ादारी के भरोसे नहीं रह सकते थे। इतिहासकार इसे आज़ादी की प्रक्रिया को तेज़ करने वाली घटनाओं में गिनते हैं।

3.5.5. भारत से बाहर भारतीय सेना और सैन्य ख़र्च

अंग्रेज़ों ने भारतीय सेना का इस्तेमाल केवल भारत की रक्षा के लिए नहीं, बल्कि पूरे साम्राज्य के हितों के लिए किया। भारतीय सैनिक मिस्र (1801 और 1882), जावा (1811), चीन (अफ़ीम युद्ध, 1839 से 1842 और बॉक्सर विद्रोह, 1900), एबीसीनिया (1868), सूडान और पूर्वी अफ़्रीका तक भेजे गए। इसी कारण भारतीय सेना को साम्राज्य की 'आरक्षित सेना' कहा जाने लगा।

इन अभियानों और सेना के रखरखाव का ज़्यादातर ख़र्च भारत के राजस्व से निकाला जाता था। लंदन के भारत कार्यालय का ख़र्च, पेंशनें और फ़ौजी सामान की ख़रीद 'होम चार्जेज़' के नाम पर भारत से वसूली जाती थी। दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में **धन-निकासी सिद्धांत** (Drain Theory) रखा और इस भारी सैन्य ख़र्च को भारत की ग़रीबी का बड़ा कारण बताया। उन्नीसवीं सदी में भारत सरकार की कुल आमदनी का एक बहुत बड़ा हिस्सा सेना पर ख़र्च होता था।

3.5.6. 'छावनी (Cantonment) राज्य' (Garrison State) की धारणा

इतिहासकार डगलस पीयर्स उन्नीसवीं सदी के ब्रिटिश भारत को 'छावनी राज्य' कहते हैं। उनका आशय यह है कि औपनिवेशिक राज्य की प्राथमिकताओं में सेना सबसे ऊपर थी। प्रशासन, राजस्व-नीति और राजनीतिक फ़ैसले, सब पर सेना की ज़रूरतों की छाप थी। फ़ौजी छावनियाँ अंग्रेज़ी सत्ता की पहचान बन गईं और कई शहर इन्हीं के आसपास बसे। अंबाला, मेरठ, कानपुर, सिकंदराबाद और महू की छावनियाँ आज भी उस दौर की गवाह हैं।

3.6: आज़ादी के समय औपनिवेशिक सेना की विरासत (Legacy of the Colonial Army at Independence)

3.6.1. 1947 में सशस्त्र बलों की स्थिति

1947 तक भारतीय सेना दुनिया की सबसे बड़ी स्वयंसेवी सेनाओं में गिनी जाने लगी थी। दूसरे विश्वयुद्ध में इसके लगभग पच्चीस लाख सैनिक लड़े थे। यह संगठित, अनुशासित और युद्ध का अनुभव रखने वाली सेना थी, पर इसके ऊँचे पदों पर अभी भी ज़्यादातर अंग्रेज़ अफ़सर ही थे।

3.6.2. भारत और पाकिस्तान के बीच सेनाओं का बँटवारा

देश के बँटवारे के साथ सेना भी बँटी। सैनिक, अफ़सर, साज़-सामान और फ़ौजी संपत्ति धर्म और रेजिमेंटों की बनावट के आधार पर मोटे तौर पर दो और एक के अनुपात में भारत और पाकिस्तान में बाँटी गई। यह काम बहुत जटिल था और जल्दबाज़ी में हुआ, जिसकी दिक़्क़तें बाद के वर्षों तक महसूस की गईं।

3.6.3. आज़ाद भारत की सेना में औपनिवेशिक परंपराएँ

रेजिमेंट व्यवस्था, वर्दी की परंपराएँ और कमान का ढाँचा लगभग वैसा ही बना रहा जैसा औपनिवेशिक काल में था। मार्शल रेस पर आधारित कुछ रेजिमेंटों की बनावट भी कुछ समय तक चलती रही, हालाँकि इसमें धीरे-धीरे सुधार हुए। प्रशिक्षण के तरीके, फ़ौजी शिष्टाचार और प्रशासन पर भी पुरानी छाप साफ़ दिखती रही।

3.6.4. गोरखा रेजिमेंटों का बँटवारा (1947 का त्रिपक्षीय समझौता)

आज़ादी के समय गोरखा सैनिकों के भविष्य पर नवंबर 1947 में भारत, ब्रिटेन और नेपाल के बीच **त्रिपक्षीय समझौता** (Tripartite Agreement) हुआ। दस गोरखा रेजिमेंटों में से छह (पहली, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, आठवीं और नौवीं गोरखा राइफ़ल्स) भारत में रहीं और चार (दूसरी, छठी, सातवीं और दसवीं) ब्रिटिश सेना में चली गईं। बाद में भारत ने 11 गोरखा राइफ़ल्स बनाई। आज भी भारतीय सेना में नेपाली गोरखाओं की भर्ती इसी समझौते के आधार पर होती है।

3.6.5. सेनाओं का भारतीयकरण (Indianisation) और पहले भारतीय प्रमुख

आज़ादी मिल गई, पर सेना की कमान तुरंत भारतीय हाथों में नहीं आई। लगभग डेढ़ साल तक थल सेना के शीर्ष पर अंग्रेज़ जनरल ही रहे। यह सिलसिला 15 जनवरी 1949 को टूटा, जब **के.एम. करियप्पा** ने जनरल सर फ़्रांसिस रॉय बुचर से पदभार लिया और भारतीय सेना के पहले भारतीय कमांडर-इन-चीफ़ बने। वही करियप्पा आगे चलकर फ़ील्ड मार्शल बने, और वही तारीख़ आज **सेना दिवस** के रूप में मनाई जाती है। वायुसेना को अपना पहला भारतीय प्रमुख 1954 में एयर मार्शल सुब्रतो मुखर्जी के रूप में मिला, और नौसेना को 1958 में वाइस एडमिरल आर.डी. कटारी के रूप में। इसके साथ ही औपनिवेशिक सेना का राष्ट्रीय सेना में बदलना पूरा हुआ।

3.7: अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

1. मुगल मनसबदारी और यूरोपीय सैन्य पद्धति में बुनियादी अंतर क्या था?
2. प्रेसीडेंसी सेनाओं से आप क्या समझते हैं?
3. मार्शल रेस सिद्धांत क्या था और इसे क्यों अपनाया गया?
4. सहायक संधि का रियासतों की सैन्य शक्ति पर क्या असर पड़ा?
5. 1946 के नौसेना विद्रोह का ऐतिहासिक महत्त्व बताइए।

3.8: सारांश (Summary)

इस पाठ में हमने देखा कि यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ कैसे भारत आईं और ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना धीरे-धीरे कैसे बढ़ी। स्ट्रिंगर लॉरेंस और क्लाइव ने भारतीय सिपाहियों को संगठित किया, प्लासी ने राजनीतिक सत्ता की नींव डाली और बक्सर ने कंपनी को दीवानी दिलाई। हमने प्रेसीडेंसी सेनाओं, भर्ती की नीतियों, भारतीय पदों के ढाँचे और 1857 से पहले के विद्रोहों को भी समझा। कर्नाटक, मैसूर, मराठा, सिख, अफ़गान और बर्मा युद्धों के ज़रिए अंग्रेज़ पूरे उपमहाद्वीप पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। 1895 में सेनाएँ एक हुईं और किचनर ने उन्हें नया रूप दिया। भारतीय सेना साम्राज्य के लिए दुनिया भर में लड़ी, जबकि उसका ख़र्च भारत उठाता रहा। 1946 के नौसेना विद्रोह ने आज़ादी की प्रक्रिया तेज़ की, और 1947 के बँटवारे तथा 1949 में करियप्पा के कमान सँभालने के साथ आज़ाद भारत की सेना की नींव पड़ी।

3.9: शब्दावली (Key Terminology)

- **कोठी (फ़ैक्टरी, Fortified Trading Post)** : यूरोपीय कंपनियों के किलेबंद व्यापारिक केंद्र; इसका अर्थ कारख़ाना नहीं है।
- **टोपास** (Topasses) : कंपनी के रखे पुर्तगाली-भारतीय मूल के सैनिक।
- **सिपाही** (Sepoy) : कंपनी की सेना में भर्ती भारतीय सैनिक।
- **बटालियन** (Battalion) : पैदल सेना की लगभग आठ सौ से एक हज़ार सैनिकों वाली बुनियादी इकाई।
- **रेजिमेंट** (Regiment) : एक या ज़्यादा बटालियनों से बनी परंपरागत सैन्य इकाई।
- **कवायद** (Drill) : अनुशासन और एक साथ चलने-लड़ने के लिए कराया जाने वाला अभ्यास।

- **कतारबद्ध युद्ध** (Linear Warfare) : सैनिकों को कतारों में खड़ा करके एक साथ गोली दागने की यूरोपीय पद्धति।
- **मस्कट और संगीन** (Musket and Bayonet) : कंधे से चलने वाली बंदूक और उसकी नोक पर लगने वाला छुरा।
- **प्रेसीडेंसी सेना** (Presidency Army) : बंगाल, मद्रास और बंबई प्रेसीडेंसियों की अलग-अलग सेनाएँ।
- **सूबेदार** (Subedar) : पैदल सेना का वरिष्ठ भारतीय अधिकारी।
- **रिसालदार** (Risaldar) : घुड़सवार सेना में भारतीय अधिकारी का पद।
- **जमादार** (Jemadar) : कंपनी सेना का कनिष्ठ भारतीय अधिकारी।
- **जूनियर कमीशंड ऑफ़िसर** (Junior Commissioned Officer) : वायसराय कमीशन वाले भारतीय अधिकारियों की परंपरा, जो आज़ाद भारत में भी जारी रही।
- **दीवानी** (Right of Revenue Collection) : राजस्व वसूलने का अधिकार, जो 1765 में कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में मिला।
- **इलाहाबाद संधि** (Treaty of Allahabad) : 1765 में शाह आलम द्वितीय और कंपनी के बीच हुई संधि।
- **सहायक संधि** (Subsidiary Alliance) : लॉर्ड वेलेज़ली की नीति, जिसमें रियासतों को कंपनी की सेना रखनी पड़ती थी।
- **मार्शल रेस सिद्धांत** (Martial Race Theory) : कुछ समुदायों को स्वभाव से लड़ाकू मानने वाला औपनिवेशिक सिद्धांत।
- **बट्टा** (Field Allowance) : विदेश या ख़ास सेवा के लिए सिपाहियों को मिलने वाला अतिरिक्त भत्ता।
- **वेल्लोर विद्रोह** (Vellore Mutiny) : 1806 में धर्म में दख़ल के ख़िलाफ़ मद्रास सेना के सिपाहियों का विद्रोह।
- **ईडन आयोग** (Eden Commission) : 1879 का आयोग, जिसने प्रेसीडेंसी सेनाओं को एक करने की सिफ़ारिश की।
- **कमांडर-इन-चीफ़** (Commander-in-Chief) : औपनिवेशिक भारत में सेना का सबसे बड़ा अधिकारी।
- **किचनर-कर्ज़न विवाद** (Kitchener–Curzon Controversy) : सेना के प्रशासन पर नियंत्रण को लेकर किचनर और कर्ज़न का टकराव।
- **ग्रेट गेम** (The Great Game) : मध्य एशिया पर दबदबे के लिए उन्नीसवीं सदी में ब्रिटेन और रूस की होड़।

- **होम चार्जेज़** (Home Charges) : भारत सरकार के इंग्लैंड में किए जाने वाले भुगतान, जिनमें फ़ौजी ख़र्च भी था।
- **धन-निकासी सिद्धांत** (Drain Theory) : दादाभाई नौरोजी का सिद्धांत कि भारत का धन इंग्लैंड जा रहा है।
- **छावनी राज्य** (Garrison State) : ऐसा राज्य जिसकी नीतियाँ मुख्य रूप से सेना की ज़रूरतों से तय हों।
- **छावनी** (Cantonment) : सैनिकों के स्थायी रहने और प्रशासन के लिए बसाया गया इलाक़ा।
- **नौसेना विद्रोह (1946, Royal Indian Navy Mutiny)** : फ़रवरी 1946 में रॉयल इंडियन नेवी के भारतीय नाविकों का विद्रोह।
- **त्रिपक्षीय समझौता** (Tripartite Agreement) : 1947 में भारत, ब्रिटेन और नेपाल के बीच गोरखा रेजिमेंटों के बँटवारे का समझौता।
- **सेना दिवस** (Army Day) : 15 जनवरी, जिस दिन करियप्पा पहले भारतीय कमांडर-इन-चीफ़ बने।
- **स्ट्रिंगर लॉरेंस** (Father of the Indian Army) : मद्रास में सिपाहियों को संगठित करने वाले अधिकारी, जिन्हें भारतीय सेना का जनक कहा जाता है।

3.10: स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के गठन और विकास की विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. कंपनी के मुख्य युद्धों का वर्णन कीजिए और उनका ऐतिहासिक महत्त्व बताइए।
3. औपनिवेशिक सैन्य नीतियों के सामाजिक और राजनीतिक असर का मूल्यांकन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. भारतीय सिपाहियों की सेवा-शर्तें संक्षेप में लिखिए।
2. 1947 में सेना के बँटवारे पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: हर प्रश्न के नीचे चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से सही विकल्प चुनिए।

1. भारत आने वाली पहली यूरोपीय शक्ति कौन थी?

(अ) डच (ब) पुर्तगाली

(स) फ़्रांसीसी (द) अंग्रेज़

2. अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी किस साल बनी?

(अ) 1498 (ब) 1600

(स) 1602 (द) 1664

3. फ़्रांसीसियों का मुख्य केंद्र कौन-सा था?

(अ) गोवा (ब) पांडिचेरी

(स) मद्रास (द) सूरत

4. भारतीय सिपाहियों को यूरोपीय ढंग से सिखाने वाला फ़्रांसीसी गवर्नर कौन था?

(अ) डूप्ले (ब) लैली

(स) बुसी (द) ला बोर्दने

5. किसे 'भारतीय सेना का जनक' कहते हैं?

(अ) रॉबर्ट क्लाइव (ब) स्ट्रिंगर लॉरेंस

(स) आयर कूट (द) लॉर्ड किचनर

6. फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज कहाँ है?

(अ) कलकत्ता (ब) बंबई

(स) मद्रास (द) सूरत

7. फ़ोर्ट विलियम कहाँ बना?

(अ) मद्रास (ब) कलकत्ता

(स) बंबई (द) पांडिचेरी

8. प्लासी की लड़ाई कब हुई?

(अ) 23 जून 1757 (ब) 22 अक्टूबर 1764

(स) 14 जनवरी 1761 (द) 4 मई 1799

9. प्लासी में नवाब के किस सेनापति ने धोखा दिया?

(अ) मीर मदान (ब) मीर जाफ़र

(स) मोहनलाल (द) मीर क़ासिम

10. बक्सर में कंपनी की सेना का नेता कौन था?

(अ) रॉबर्ट क्लाइव (ब) हेक्टर मुनरो

(स) आयर कूट (द) वॉरेन हेस्टिंग्स

11. बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी कंपनी को किस संधि से मिली?

(अ) सालबाई संधि (ब) इलाहाबाद संधि

(स) मद्रास संधि (द) बसीन संधि

12. सहायक संधि किसने शुरू की?

(अ) लॉर्ड कॉर्नवालिस (ब) लॉर्ड वेलेज़ली

(स) लॉर्ड डलहौज़ी (द) लॉर्ड हेस्टिंग्स

13. पैदल सेना में सबसे वरिष्ठ भारतीय अधिकारी का पद कौन-सा था?

(अ) हवलदार (ब) जमादार

(स) सूबेदार-मेजर (द) नायक

14. वेल्लोर विद्रोह किस साल हुआ?

(अ) 1764 (ब) 1806

(स) 1824 (द) 1857

15. 1824 का बैरकपुर विद्रोह किस युद्ध से जुड़ा था?

(अ) आंग्ल-मैसूर युद्ध (ब) आंग्ल-बर्मा युद्ध

(स) आंग्ल-सिख युद्ध (द) आंग्ल-अफ़गान युद्ध

16. टीपू सुल्तान किस साल मारे गए?

(अ) 1792 (ब) 1799

(स) 1803 (द) 1818

17. वांडीवाश की निर्णायक लड़ाई किस साल हुई?

(अ) 1746 (ब) 1754

(स) 1760 (द) 1763

18. मराठा शक्ति किस युद्ध के बाद ख़त्म हुई?

(अ) पहला आंग्ल-मराठा युद्ध (ब) दूसरा आंग्ल-मराठा युद्ध

(स) तीसरा आंग्ल-मराठा युद्ध (द) पानीपत का तीसरा युद्ध

19. पंजाब अंग्रेज़ी राज में कब मिलाया गया?

(अ) 1839 (ब) 1846

(स) 1849 (द) 1857

20. मियानी की लड़ाई (1843) के बाद कौन-सा इलाक़ा मिलाया गया?

(अ) पंजाब (ब) सिंध

(स) अवध (द) बर्मा

21. प्रेसीडेंसी सेनाएँ किस साल एक की गईं?

(अ) 1858 (ब) 1879

(स) 1895 (द) 1903

22. किस विवाद के बाद वायसराय को इस्तीफ़ा देना पड़ा?

(अ) किचनर-कर्ज़न (ब) रॉबर्ट्स-लिटन

(स) हेग-मिंटो (द) ऑकिनलेक-वेवेल

23. मार्शल रेस सिद्धांत मुख्यतः किस घटना के बाद अपनाया गया?

(अ) प्लासी (ब) 1857 का विद्रोह

(स) पहला विश्वयुद्ध (द) वेल्लोर विद्रोह

24. धन-निकासी सिद्धांत किसने दिया?

(अ) आर.सी. दत्त (ब) दादाभाई नौरोजी

(स) गोपालकृष्ण गोखले (द) बाल गंगाधर तिलक

25. ब्रिटिश भारत को 'छावनी राज्य' किसने कहा?

(अ) डगलस पीयर्स (ब) स्टीफ़न कोहेन

(स) डेविड ओमिसी (द) पर्सिवल स्पीयर

26. रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह किस साल हुआ?

(अ) 1942 (ब) 1945

(स) 1946 (द) 1947

27. 1947 के त्रिपक्षीय समझौते में भारत को कितनी गोरखा रेजिमेंटें मिलीं?

(अ) चार (ब) पाँच

(स) छह (द) दस

28. पहले भारतीय कमांडर-इन-चीफ़ कौन थे?

(अ) जनरल के.एस. थिमैया (ब) जनरल के.एम. करियप्पा

(स) जनरल सैम मानेकशॉ (द) जनरल राजेंद्र सिंहजी

29. सेना दिवस किस दिन मनाया जाता है?

(अ) 15 जनवरी (ब) 26 जनवरी

(स) 8 अक्टूबर (द) 4 दिसंबर

30. दूसरे विश्वयुद्ध में भारतीय सेना लगभग कितनी बड़ी थी?

(अ) 5 लाख (ब) 13 लाख

(स) 25 लाख (द) 40 लाख

(ब) रिक्त स्थान भरिए

1. समुद्री रास्ते से भारत पहुँचने वाला पहला यूरोपीय यात्री _____ था।

2. 1748 में _____ ने मद्रास में सिपाहियों को नियमित कंपनियों में बाँटा।

3. प्लासी की लड़ाई _____ नदी के किनारे हुई।

4. कुछ समुदायों को लड़ाकू मानने की नीति _____ सिद्धांत कहलाती है।

5. पहला आंग्ल-बर्मा युद्ध _____ संधि (1826) से ख़त्म हुआ।

6. तीसरा आंग्ल-अफ़गान युद्ध _____ संधि (1919) से ख़त्म हुआ।

7. भारत की ओर से इंग्लैंड में होने वाले भुगतान _____ कहलाते थे।

8. किचनर ने अफ़सरों के प्रशिक्षण के लिए _____ में स्टाफ़ कॉलेज बनाया।

9. भारत और पाकिस्तान में फ़ौजी संपत्ति मोटे तौर पर _____ के अनुपात में बँटी।

10. वायुसेना के पहले भारतीय प्रमुख एयर मार्शल _____ थे।

(स) सही या गलत बताइए

1. शुरू में ईस्ट इंडिया कंपनी का मक़सद केवल व्यापार था।

2. प्लासी एक लंबा और भयंकर युद्ध था।

3. बक्सर ने कंपनी की असली सैन्य श्रेष्ठता साबित की।

4. कंपनी सेना का भारतीय सूबेदार यूरोपीय अफ़सर को आदेश दे सकता था।

5. सहायक संधि से रियासतों की अपनी सैन्य ताक़त बढ़ी।

6. तोपखाने पर अंग्रेज़ों ने ख़ास तौर पर कड़ा नियंत्रण रखा।

7. पहले अफ़गान युद्ध में काबुल से लौटते हुए अंग्रेज़ी सेना को भारी नुकसान हुआ।

8. भारतीय सेना का इस्तेमाल केवल भारत की सीमाओं के भीतर हुआ।

9. 1946 का नौसेना विद्रोह बंबई से शुरू हुआ।

10. 15 अगस्त 1947 को ही सेना की कमान भारतीय अफ़सर को मिल गई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. (ब) पुर्तगाली	2. (ब) 1600	3. (ब) पांडिचेरी
4. (अ) डूप्ले	5. (ब) स्ट्रिंगर लॉरेंस	6. (स) मद्रास
7. (ब) कलकत्ता	8. (अ) 23 जून 1757	9. (ब) मीर जाफ़र
10. (ब) हेक्टर मुनरो	11. (ब) इलाहाबाद संधि	12. (ब) लॉर्ड वेलेज़ली
13. (स) सूबेदार-मेजर	14. (ब) 1806	15. (ब) आंग्ल-बर्मा युद्ध
16. (ब) 1799	17. (स) 1760	18. (स) तीसरा आंग्ल-मराठा युद्ध
19. (स) 1849	20. (ब) सिंध	21. (स) 1895
22. (अ) किचनर-कर्ज़न	23. (ब) 1857 का विद्रोह	24. (ब) दादाभाई नौरोजी

25. (अ) डगलस पीयर्स	26. (स) 1946	27. (स) छह
28. (ब) जनरल के.एम. करियप्पा	29. (अ) 15 जनवरी	30. (स) 25 लाख

(ब) रिक्त स्थान:

1. वास्को द गामा	2. स्ट्रिंगर लॉरेंस
3. भागीरथी	4. मार्शल रेस
5. यांडबू	6. रावलपिंडी
7. होम चार्जेज़	8. क्वेटा
9. दो और एक	10. सुब्रतो मुखर्जी

(स) सही या गलत:

1. सही	2. गलत	3. सही	4. गलत	5. गलत
6. सही	7. सही	8. गलत	9. सही	10. गलत

3.11: अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1. मनसबदारी में सैनिक सेवा सामंती ज़िम्मेदारी पर टिकी थी, जबकि यूरोपीय पद्धति नक़द वेतन, स्थायी सेना (Standing Army), केंद्र की कमान और आधुनिक प्रशिक्षण पर आधारित थी।

2. बंगाल, मद्रास और बंबई प्रेसीडेंसियों की अलग-अलग सेनाएँ, जिनका अपना प्रशासन था और जो 1895 में एक कर दी गईं।

3. यह सिद्धांत मानता था कि कुछ समुदाय स्वभाव से लड़ाकू होते हैं; 1857 के बाद भरोसेमंद सैनिक आधार बनाने के लिए इसे अपनाया गया।

4. रियासतों की अपनी सैन्य ताक़त घटी और वे कंपनी पर निर्भर हो गईं।

5. इससे साफ़ हुआ कि अंग्रेज़ अब भारतीय सैनिकों की वफ़ादारी पर भरोसा नहीं कर सकते, और आज़ादी की प्रक्रिया तेज़ हुई।

3.12: संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

1. स्टीफ़न पी. कोहेन, द इंडियन आर्मी: इट्स कॉन्ट्रिब्यूशन टू द डेवलपमेंट ऑफ़ अ नेशन।
2. कौशिक रॉय, वॉर, कल्चर एंड सोसाइटी इन अर्ली मॉडर्न साउथ एशिया, 1740 से 1849।
3. डगलस एम. पीयर्स, बिटवीन मार्स एंड मैमन: कोलोनियल आर्मीज़ एंड द गैरिसन स्टेट इन अर्ली नाइनटीन्थ-सेंचुरी इंडिया।
4. प्रदीप बरुआ, द स्टेट एट वॉर इन साउथ एशिया।
5. शेखर बंद्योपाध्याय, प्लासी से विभाजन तक: आधुनिक भारत का इतिहास।
6. बिपिन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास।
7. डेविड ओमिसी, द सिपॉय एंड द राज: द इंडियन आर्मी, 1860 से 1940।

Subject: Introduction to Military History	Author: Dr. Mahender Pal
Subject Code: C24MDC108T	Vetter:

इकाई-4

(LESSON-4)

उपनिवेश काल में भारतीय सिपाहियों द्वारा लड़ी गई लड़ाइयों का मूल्यांकन

(Evolution of Battles by Fought by Indian Sepoy in Colonial Era)

इकाई की संरचना (Structure)

4.0 उद्देश्य (Learning Objectives)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

4.2 औपनिवेशिक युग की धारणा (Concept of the Colonial Era)

4.2.1 युद्ध का अर्थ

4.2.2 युद्धों के प्रकार

4.2.3 भारतीय सिपाही

4.2.4 युद्धों के मुख्य पहलू

4.2.5 औपनिवेशिक युग में युद्धों के कारण

4.2.6 युद्धों के कुछ और आयाम

4.2.7 युद्धों के मुख्य कारण: संक्षेप में

4.2.8 युद्ध के सिद्धांत (Principles of War)

4.3 औपनिवेशिक युग में भारतीय सिपाहियों के युद्धों का विकास (Evolution of Battles Fought by Indian Sepoys in the Colonial Era)

4.3.1 भारतीय सिपाही की स्थिति

4.3.2 भारतीय सिपाहियों के युद्धों के परिणाम

4.3.3 भारतीय सिपाहियों के प्रमुख युद्ध: विस्तृत अध्ययन

4.3.4 भारत के बाहर सिपाहियों के अभियान (1857 से 1914, Campaign)

4.3.5 सिपाहियों की लड़ने की क्षमता के कारण

4.3.6 सिपाहियों के लिए वीरता पुरस्कार (Gallantry Award)

4.3.7 मुख्य युद्धों की कालक्रम सारणी

4.3.8 सिपाही का जीवन: छावनी (Cantonment), परिवार और परंपरा

4.4 अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

4.5 सारांश (Summary)

4.6 शब्दावली (Key Terminology)

4.7 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

4.8 अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

4.9 संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

4.0: उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

- औपनिवेशिक युग (Colonial Era) का अर्थ और उसकी मुख्य विशेषताएँ समझ सकेंगे।
- युद्ध का अर्थ, उसका स्वरूप और उसके प्रकार जान सकेंगे।
- 'भारतीय सिपाही' की धारणा और औपनिवेशिक सेना में उसकी जगह समझ सकेंगे।
- औपनिवेशिक युग के युद्धों के मुख्य पहलुओं और कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- भारतीय सिपाहियों के लड़े युद्धों के क्रमिक विकास को समझ सकेंगे।
- औपनिवेशिक सेना में सिपाहियों की स्थिति और उनके युद्धों के परिणामों की व्याख्या कर सकेंगे।

4.1: प्रस्तावना (Introduction)

सोचिए, एक व्यापारी कंपनी, जो मसाले और कपड़ा ख़रीदने आई थी, सौ साल के भीतर इतने बड़े देश की मालिक कैसे बन गई? इस सवाल का सबसे सीधा जवाब है: सेना के बल पर। और उस सेना में बंदूक़ उठाने वाले ज़्यादातर हाथ भारतीय सिपाहियों के थे।

इतिहास की यह एक बड़ी विडंबना है। जिस धरती पर विदेशी राज क़ायम हुआ, उस राज को बनाने, फैलाने और बचाने में सबसे ज़्यादा ख़ून-पसीना भारतीय सैनिकों का ही लगा। अंग्रेज़ों ने बड़ी संख्या में भारतीय युवकों को भर्ती (Recruitment) करके एक सुव्यवस्थित सेना बनाई, और यही सैनिक 'सिपाही' कहलाए। इन्हीं के बल पर अंग्रेज़ों ने प्लासी और बक्सर से लेकर मैसूर, मराठा और सिख शक्तियों तक को हराया।

पर यही सिपाही आगे चलकर अंग्रेज़ी सत्ता के लिए चुनौती भी बने। 1857 में विद्रोह (Revolt) का बिगुल इन्हीं ने बजाया। दोनों विश्वयुद्धों में इन्होंने दुनिया भर के मोर्चों पर बहादुरी दिखाई, और आख़िर में इन्हीं में से कई आज़ाद हिन्द फ़ौज में शामिल होकर स्वतंत्रता की लड़ाई में उतरे। इस तरह भारतीय सिपाही अंग्रेज़ी राज के शुरू होने से लेकर उसके ख़त्म होने तक की पूरी कहानी के गवाह रहे।

आगे के पन्नों में पहले हम यह समझेंगे कि औपनिवेशिक युग किसे कहते हैं और युद्ध का स्वरूप क्या होता है। फिर देखेंगे कि भारतीय सिपाही कौन था, उसने कौन-सी लड़ाइयाँ लड़ीं, और उन लड़ाइयों से देश का इतिहास कैसे बदला।

4.2: औपनिवेशिक युग की धारणा (Concept of the Colonial Era)

'औपनिवेशिक युग' उस समय को कहते हैं जब कोई विदेशी शक्ति किसी दूसरे भू-भाग पर राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक नियंत्रण जमाकर उसे अपना उपनिवेश (Colony) बना लेती है। भारत में यह दौर आम तौर पर 1757 (प्लासी का युद्ध) से 1947 (आज़ादी) तक, यानी लगभग दो सौ साल का माना जाता है।

इस युग की कुछ ख़ास पहचानें थीं:

1. **राजनीतिक अधीनता:** भारतीय रियासतें और राज्य एक-एक करके अंग्रेज़ों के अधीन होते गए।

2. **आर्थिक शोषण:** भारत के संसाधन, खेती और व्यापार अंग्रेज़ी हितों के हिसाब से चलाए गए।

3. **सैन्यीकरण (Militarisation):** एक विशाल औपनिवेशिक सेना बनी, जिसमें भारतीयों की भारी भर्ती हुई।

4. **सामाजिक-सांस्कृतिक दख़ल:** पश्चिमी शिक्षा, क़ानून और प्रशासनिक ढाँचा आया।

5. **लगातार प्रतिरोध:** जनता और सैनिक समय-समय पर अंग्रेज़ी राज के ख़िलाफ़ उठते रहे।

भारतीय सिपाहियों की भर्ती, प्रशिक्षण और उनके युद्धों को इसी ढाँचे के भीतर रखकर समझना होगा।

4.2.1. युद्ध का अर्थ

युद्ध या लड़ाई दो या दो से ज़्यादा हथियारबंद पक्षों के बीच किसी ख़ास जगह और समय पर होने वाला वह संघर्ष है, जिसका मक़सद कोई राजनीतिक, इलाक़ाई, आर्थिक या वैचारिक लक्ष्य पाना होता है। यहाँ एक अंतर समझ लेना ज़रूरी है। एक 'लड़ाई' किसी बड़े 'युद्ध' का हिस्सा होती है, और एक युद्ध में कई लड़ाइयाँ होती हैं।

युद्ध के अध्ययन में दो शब्द बार-बार आते हैं। **रणनीति** (Strategy) पूरे युद्ध की बड़ी योजना है: किस शत्रु से, कब और किस उद्देश्य से लड़ना है। **समरतंत्र** (Tactics) लड़ाई के मैदान की कला है: सैनिकों और हथियारों को मौक़े पर कैसे लगाया जाए। एक अच्छा सेनापति दोनों में माहिर होता है।

सीधे शब्दों में, युद्ध संगठित हिंसा का वह रूप है जिसमें प्रशिक्षित सैनिक, रणनीति और हथियारों के सहारे विरोधी को हराने की कोशिश करते हैं। औपनिवेशिक युग में युद्ध केवल ज़मीन जीतने के लिए नहीं थे। ये सत्ता जमाने, व्यापार बचाने और राजनीतिक दबदबा बनाने के साधन भी थे।

4.2.2. युद्धों के प्रकार

औपनिवेशिक युग के युद्धों को कई आधारों पर बाँटा जा सकता है।

(क) स्वरूप के आधार पर

- **थल युद्ध:** जैसे प्लासी, बक्सर और पानीपत की लड़ाइयाँ।
- **नौसैनिक युद्ध:** समुद्री रास्तों और बंदरगाहों पर क़ब्ज़े के लिए।
- **घेराबंदी (Siege) युद्ध:** किलों और नगरों को घेरना, जैसे श्रीरंगपट्टनम की घेराबंदी।

(ख) उद्देश्य के आधार पर

- **विजय के युद्ध:** इलाक़ा बढ़ाने के लिए, जैसे मैसूर और मराठा युद्ध।
- **विद्रोह दबाने वाले युद्ध:** भीतर के विद्रोह कुचलने के लिए, जैसे 1857।
- **सीमा-रक्षा के युद्ध:** सीमावर्ती इलाक़ों को बचाने के लिए, जैसे अफ़गान और सिख युद्ध।

(ग) भाग लेने वालों के आधार पर

- **कंपनी और भारतीय शक्तियाँ:** जैसे आंग्ल-मैसूर, आंग्ल-मराठा और आंग्ल-सिख युद्ध।
- **कंपनी और दूसरी यूरोपीय शक्तियाँ:** जैसे अंग्रेज़-फ़्रांसीसी टकराव यानी कर्नाटक युद्ध।
- **साम्राज्यवादी विश्वयुद्ध:** पहला और दूसरा विश्वयुद्ध, जिनमें भारतीय सिपाही विदेशी मोर्चों पर लड़े।

4.2.3. भारतीय सिपाही

फ़ारसी में 'सिपाह' का अर्थ है फ़ौज, और उसी से 'सिपाही' बना। अंग्रेज़ों के ज़माने में यह शब्द एक ख़ास अर्थ में चल पड़ा: वह भारतीय जिसे कंपनी ने अपनी फ़ौज में रखा हो और यूरोपीय तौर-तरीकों से तैयार किया हो।

सिपाहियों की भर्ती मुख्य रूप से बंगाल, अवध, बिहार, मद्रास और बंबई प्रेसीडेंसी (Presidency) के इलाक़ों से होती थी। उन्हें पश्चिमी ढंग का सैनिक प्रशिक्षण मिलता था, पर अफ़सर के पद आम तौर पर यूरोपीयों के ही पास रहते थे। नियमित तनख़्वाह मिलने के कारण यह नौकरी रोज़गार का अच्छा साधन मानी जाती थी। कंपनी की सेना तीन प्रेसीडेंसी सेनाओं, यानी बंगाल, मद्रास और बंबई, में बँटी थी। 1857 के बाद भर्ती में जाति और क्षेत्र के आधार पर 'मार्शल रेस' (Martial Race) जैसी नीतियाँ भी जोड़ दी गईं।

संख्या के हिसाब से सिपाही औपनिवेशिक सेना की सबसे बड़ी ताक़त थे, पर सामाजिक और प्रशासनिक दर्जे में वे हमेशा दूसरे दर्जे पर रखे गए।

4.2.4. युद्धों के मुख्य पहलू

औपनिवेशिक युग के युद्धों को समझने के लिए इन पहलुओं पर ध्यान देना होगा:

1. **सैन्य संगठन (Military Organisation):** अनुशासित सेना, साफ़ पद-क्रम (Hierarchy) और आधुनिक हथियार।

2. **रणनीति और कूटनीति (Diplomacy):** लड़ाई के साथ-साथ संधियों और गठजोड़ों का इस्तेमाल, जैसे सहायक संधि (Subsidiary Alliance)।

3. **आर्थिक आधार:** युद्धों का ख़र्च भारत के ही राजस्व से उठाया जाता था।

4. **तकनीकी बढ़त:** यूरोपीय सैन्य तकनीक और आग्नेयास्त्रों का बेहतर इस्तेमाल।

5. **मानव संसाधन:** भारतीय सिपाहियों की बड़ी संख्या, जो युद्धों की असली ताक़त थी।

4.2.5. औपनिवेशिक युग में युद्धों के कारण

इन युद्धों के पीछे कई वजहें थीं। ईस्ट इंडिया कंपनी शुरू में व्यापारी थी और अपने व्यापार की रक्षा के लिए उसे सेना चाहिए थी। फिर उसके मन में भारतीय ज़मीन पर राजनीतिक क़ब्ज़े की चाह जागी। मुगल साम्राज्य टूटने के बाद जो सत्ता-शून्य (Power Vacuum) बना और स्थानीय शक्तियाँ आपस में लड़ने लगीं, उसका फ़ायदा उठाया गया। अंग्रेज़ों और फ़्रांसीसियों के बीच भारत पर दबदबे की होड़ भी थी। और राजस्व, खेती की उपज तथा व्यापार के रास्तों पर नियंत्रण की लालसा तो सबसे ऊपर थी।

4.2.6. युद्धों के कुछ और आयाम

ऊपर बताए पहलुओं के अलावा कुछ और बातें भी युद्ध के नतीजे पर असर डालती थीं:

1. **सूचना और गुप्तचर (Spy / Intelligence):** लड़ाई से पहले शत्रु की स्थिति जानने के लिए जासूसों का इस्तेमाल।

2. **स्थानीय सहयोग:** भारतीय राजाओं, सामंतों और व्यापारियों का कंपनी के साथ खड़ा होना या उसका विरोध करना।

3. **मनोवैज्ञानिक कारक:** सिपाहियों की वफ़ादारी, अनुशासन (Discipline) और मनोबल (Morale)।

4. **भौगोलिक कारक:** नदी, पहाड़ और मैदान जैसी परिस्थितियों का रणनीति पर असर।

5. **दूरगामी असर:** हर युद्ध का नतीजा आगे के राजनीतिक ढाँचे को बदल देता था।

4.2.7. युद्धों के मुख्य कारण: संक्षेप में

संक्षेप में कहें तो औपनिवेशिक युग के युद्ध सत्ता और दबदबा क़ायम करने, आर्थिक शोषण और संसाधनों पर नियंत्रण, भारतीय शक्तियों की आपसी फूट, सैन्य और तकनीकी बढ़त का फ़ायदा उठाने, और स्थानीय असंतोष तथा सामाजिक-धार्मिक कारणों से भड़के विद्रोहों (जैसे 1857) की वजह से लड़े गए।

4.2.8. युद्ध के सिद्धांत (Principles of War)

युद्धों को परखने के लिए सैन्य विशेषज्ञ कुछ मान्य सिद्धांतों का सहारा लेते हैं। ये 'युद्ध के सिद्धांत' कहलाते हैं और सदियों के युद्ध-अनुभव से निकले हैं। भारतीय सेना समेत दुनिया की ज़्यादातर सेनाएँ इन्हें मानती हैं। औपनिवेशिक युद्धों को भी इन्हीं पर कसकर देखा जा सकता है:

- **उद्देश्य चुनना और उस पर टिके रहना:** लक्ष्य साफ़ हो और आख़िर तक बना रहे। अंग्रेज़ों का लक्ष्य बिलकुल साफ़ था: राजनीतिक और आर्थिक दबदबा।
- **आक्रामक कार्रवाई:** पहल अपने हाथ में रखना। बक्सर और असाये में कंपनी की सेनाएँ संख्या में कम होकर भी आक्रामक रहीं।
- **अचानक वार:** शत्रु को ऐसे समय, जगह या तरीके से चौंकाना जिसकी उसे उम्मीद न हो।
- **बल को एक जगह जुटाना:** निर्णायक जगह पर ज़्यादा से ज़्यादा ताक़त लगाना।
- **बल की किफ़ायत:** ग़ैर-ज़रूरी जगहों पर कम से कम सैनिक रखकर मुख्य लक्ष्य पर ज़्यादा ज़ोर देना।
- **सुरक्षा:** अपनी सेना, रसद (Logistics) के रास्तों और ठिकानों को बचाए रखना।
- **लचीलापन:** हालात बदलें तो योजना बदल सकने की क्षमता।
- **सहयोग:** पैदल, घुड़सवार, तोपखाने (Artillery) और नौसेना के बीच तालमेल।
- **प्रशासन:** रसद, वेतन, इलाज और ढुलाई का ठीक इंतज़ाम। नियमित वेतन और रसद कंपनी की कामयाबी का बड़ा कारण थे।
- **मनोबल:** सैनिकों का आत्मविश्वास, अनुशासन और वफ़ादारी।

भारतीय शासकों की सेनाएँ बहादुरी में किसी से कम नहीं थीं, पर सहयोग, प्रशासन और उद्देश्य पर टिके रहने जैसे सिद्धांतों में वे कंपनी से पिछड़ गईं।

4.3: औपनिवेशिक युग में भारतीय सिपाहियों के युद्धों का विकास (Evolution of Battles Fought by Indian Sepoys in the Colonial Era)

भारतीय सिपाहियों के युद्धों को छह चरणों में देखा जा सकता है।

पहला चरण (1757 से 1818): जीत और फैलाव। सिपाहियों की मदद से कंपनी ने प्लासी (1757), बक्सर (1764), आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767 से 1799) और आंग्ल-मराठा युद्ध (1775 से 1818) लड़े। इन सबमें सिपाही कंपनी सेना की रीढ़ थे।

दूसरा चरण (1818 से 1857): मज़बूती और असंतोष। इस दौर में आंग्ल-सिख युद्ध (1845 से 1849) और आंग्ल-अफ़गान युद्ध हुए। साथ ही वेतन, धार्मिक भावनाओं और सेवा-शर्तों को लेकर सिपाहियों की नाराज़गी भी बढ़ती गई।

तीसरा चरण (1857): विद्रोह। यह इस यात्रा का सबसे बड़ा मोड़ था। चर्बी वाले कारतूसों और दूसरे राजनीतिक-सामाजिक कारणों से सिपाहियों ने खुला विद्रोह कर दिया।

चौथा चरण (1858 से 1914): पुनर्गठन (Reorganisation)। विद्रोह के बाद सरकार ने सेना को नए सिरे से गढ़ा, मार्शल रेस का सिद्धांत अपनाया और भर्ती तथा निगरानी के नए नियम बनाए।

पाँचवाँ चरण (1914 से 1945): विश्वयुद्ध। दोनों विश्वयुद्धों में लाखों भारतीय सिपाही यूरोप, अफ़्रीका और एशिया के मोर्चों पर लड़े और दुनिया भर में उनकी पहचान बनी।

छठा चरण (1943 से 1945): राष्ट्रवादी चेतना। आख़िरी चरण में कहानी पलट गई। जिन सैनिकों से अंग्रेज़ों ने अपना साम्राज्य बचाया था, उन्हीं में से हज़ारों ने दक्षिण-पूर्व एशिया में सुभाषचंद्र बोस की आज़ाद हिन्द फ़ौज का साथ दिया और अपने देश की आज़ादी के लिए हथियार उठाए।

4.3.1. भारतीय सिपाही की स्थिति

औपनिवेशिक सेना में सिपाही की हालत समय के साथ बदलती रही। शुरू में उसे नियमित वेतन और रोज़गार तो मिला, और विदेश या कठिन इलाक़ों में सेवा के लिए 'बट्टा' (Field Allowance) नाम का अतिरिक्त भत्ता भी, पर वह हमेशा यूरोपीय अफ़सरों के अधीन रहा। ऊँचे पदों, वेतन-वृद्धि और सम्मान में उसके साथ भेदभाव होता था। उसकी धार्मिक भावनाओं की अनदेखी 1857 का एक बड़ा कारण बनी। विद्रोह के बाद उसकी भर्ती, संगठन और निगरानी और सख़्त कर दी गई। विश्वयुद्धों में उसकी बहादुरी की दुनिया भर में तारीफ़ हुई, फिर भी अफ़सरों की पांत में उसे जगह बहुत देर से मिली।

4.3.2. भारतीय सिपाहियों के युद्धों के परिणाम

इन युद्धों के असर बहुत दूर तक गए:

1. **अंग्रेज़ी राज की स्थापना:** भारतीय सिपाहियों की मदद से ही अंग्रेज़ पूरे भारत पर क़ाबिज़ हो सके।

2. **1857 और सत्ता का हस्तांतरण:** विद्रोह के बाद कंपनी का राज ख़त्म हुआ और भारत सीधे ताज के अधीन आ गया।

3. **सैन्य सुधार:** सेना का ढाँचा, भर्ती की नीति और प्रशासन बदले।

4. **राष्ट्रीय चेतना:** सिपाहियों के संघर्ष और बलिदान ने आगे चलकर राष्ट्रवाद (Nationalism) को प्रेरणा दी।

5. **आज़ाद हिन्द फ़ौज:** विश्वयुद्ध के अनुभवों ने बहुत से सैनिकों को आज़ादी की लड़ाई की ओर मोड़ा।

6. **स्वतंत्रता आंदोलन को बल:** आज़ाद हिन्द फ़ौज के अफ़सरों पर चले लाल किला मुक़दमे ने जनता में राष्ट्रीय भावना जगाई, जिसने 1947 की आज़ादी में मदद की।

इस तरह भारतीय सिपाही अंग्रेज़ी राज बनाने का साधन भी बने और उसे गिराने में भी उनकी निर्णायक भूमिका रही।

4.3.3. भारतीय सिपाहियों के प्रमुख युद्ध: विस्तृत अध्ययन

(क) अड्यार का युद्ध (1746 ई.)

पहले कर्नाटक युद्ध में फ़्रांसीसी अफ़सर पैराडिस के नेतृत्व में लगभग 230 यूरोपीय और 700 भारतीय सिपाहियों की छोटी-सी टुकड़ी ने अड्यार नदी के किनारे कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन की लगभग दस हज़ार की सेना को हरा दिया। पहली बार यह साबित हुआ कि यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित और अनुशासित भारतीय सिपाही पारंपरिक भारतीय सेनाओं पर बहुत भारी पड़ सकते हैं। इसी अनुभव के बाद अंग्रेज़ों और फ़्रांसीसियों ने बड़े पैमाने पर सिपाहियों की भर्ती शुरू की।

(ख) अर्काट की घेराबंदी (1751 ई.)

दूसरे कर्नाटक युद्ध में रॉबर्ट क्लाइव ने लगभग 200 यूरोपीय और 300 भारतीय सिपाहियों के साथ अर्काट पर क़ब्ज़ा किया और क़रीब पचास दिनों तक चंदा साहिब के बेटे रज़ा साहिब की बड़ी सेना की घेराबंदी झेली। इससे क्लाइव का नाम हुआ और दक्षिण में अंग्रेज़ी असर मज़बूत हुआ। इस घेराबंदी में भारतीय सिपाहियों के धीरज और वफ़ादारी की ख़ूब चर्चा हुई।

(ग) वांडीवाश का युद्ध (1760 ई.)

अंग्रेज़-फ़्रांसीसी होड़ का फ़ैसला 22 जनवरी 1760 को वांडीवाश में हुआ। सर आयर कूट ने काउंट डी लैली की सेना को तोड़ दिया और अनुभवी फ़्रांसीसी जनरल बुसी को क़ैद कर लिया। इसके बाद फ़्रांसीसी फिर कभी भारत में बड़ी ताक़त नहीं बन सके। ग़ौर करने वाली बात यह है कि दोनों ओर की कतारों में सबसे ज़्यादा भारतीय ही खड़े थे; यानी यह फ़ैसला कि भारत पर कौन-सा यूरोपीय देश हावी होगा, भारतीय सिपाहियों की बंदूक़ों से हुआ।

(घ) पोल्लिलूर (1780) और श्रीरंगपट्टनम (1799)

मैसूर ने अंग्रेज़ों को कई बार झुकाया। 1780 में पोल्लिलूर में हैदर अली और टीपू ने कर्नल बेली की पूरी टुकड़ी को घेरकर लगभग मिटा दिया, और इस लड़ाई में मैसूरी रॉकेटों ने अंग्रेज़ी कतारों में दहशत फैला दी। भारत में अंग्रेज़ों को शायद ही इससे बुरी हार मिली हो। पर बीस साल से कम समय में पासा पलट गया। 4 मई 1799 को श्रीरंगपट्टनम के किले पर बड़ा धावा हुआ, जिसमें बंबई और मद्रास के सिपाहियों के साथ निज़ाम की फ़ौज भी थी, और टीपू सुल्तान अपने ही किले की दीवार के पास लड़ते-लड़ते गिर पड़े।

(ङ) असाये (1803) और लासवारी (1803)

दूसरे आंग्ल-मराठा युद्ध में आर्थर वेलेज़ली, जो बाद में ड्यूक ऑफ़ वेलिंगटन बने, ने 23 सितंबर 1803 को **असाये** में सिंधिया और भोंसले की संयुक्त सेना को हराया। सिंधिया की सेना को फ़्रांसीसी अफ़सरों डी बॉयन और पेरों ने यूरोपीय ढंग से तैयार किया था और उसका तोपखाना बहुत मज़बूत था, इसलिए यह लड़ाई बहुत रक्तरंजित रही। उत्तर में जनरल लेक ने नवंबर 1803 में **लासवारी** में सिंधिया की सेना को हराकर दिल्ली पर क़ब्ज़ा कर लिया। इन युद्धों से साफ़ हुआ कि केवल यूरोपीय प्रशिक्षण काफ़ी नहीं था। नेतृत्व, एकता और प्रशासन भी उतने ही ज़रूरी थे।

(च) कोरेगाँव का युद्ध (1818 ई.)

नए साल की पहली सुबह, 1 जनवरी 1818, भीमा नदी के किनारे कोरेगाँव गाँव में एक अनोखी लड़ाई हुई। कैप्टन फ़्रांसिस स्टॉन्टन की कमान में बंबई नेटिव इन्फ़ैंट्री की एक बटालियन के क़रीब पाँच सौ सैनिक गाँव में घिर गए, और सामने पेशवा बाजीराव द्वितीय की कई गुना बड़ी फ़ौज थी। पूरे दिन लड़ाई चली और बटालियन टिकी रही। इसके बहुत से सैनिक महार समुदाय से थे। बाद में वहाँ एक विजय-स्तंभ खड़ा किया गया। इतिहास का यह पन्ना बताता है कि कंपनी की फ़ौज उन वर्गों के लिए भी रोज़गार और इज़्ज़त (Honour) का रास्ता बनी, जिन्हें समाज में अक्सर पीछे रखा जाता था।

(छ) आंग्ल-सिख युद्धों की मुख्य लड़ाइयाँ

पहले आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) में मुदकी, फ़िरोज़शाह, अलीवाल और सोबराँव की लड़ाइयाँ हुईं, जिनमें खालसा सेना बड़ी बहादुरी से लड़ी। फ़रवरी 1846 में सोबराँव की हार के बाद लाहौर संधि हुई। दूसरे युद्ध (1848-49) में जनवरी 1849 की **चिलियाँवाला** लड़ाई अंग्रेज़ों को बहुत महँगी पड़ी, पर फ़रवरी 1849 में **गुजरात** की लड़ाई में भारी तोपख़ाने के बल पर अंग्रेज़ निर्णायक रूप से जीते और पंजाब मिला लिया गया। दिलचस्प बात यह है कि कुछ ही वर्षों बाद यही हारे हुए सिख सैनिक ब्रिटिश भारतीय सेना की सबसे भरोसेमंद टुकड़ियों में गिने जाने लगे।

(ज) सारागढ़ी का युद्ध (1897 ई.)

सीमांत की एक छोटी-सी चौकी सारागढ़ी की रखवाली 36वीं सिख रेजिमेंट (आज की 4 सिख) के केवल 21 जवानों के पास थी। 12 सितंबर 1897 की सुबह ओरकज़ई और अफ़रीदी क़बाइलियों के हज़ारों लड़ाकों ने चौकी को घेर लिया। हवलदार ईशर सिंह और उनके साथियों ने पीछे हटने के बजाय घंटों गोली चलाई, और आख़िर में आमने-सामने की लड़ाई तक डटे रहे। एक भी जवान ज़िंदा नहीं बचा। सभी 21 को मरणोपरांत (Posthumously) इंडियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट मिला। सिख रेजिमेंट हर साल 12 सितंबर को सारागढ़ी दिवस के रूप में इन्हें याद करती है, और दुनिया भर की सेनाएँ इसे 'आख़िरी आदमी, आख़िरी गोली' तक डटे रहने की मिसाल मानती हैं।

4.3.4. भारत के बाहर सिपाहियों के अभियान (1857 से 1914, Campaign)

1857 के बाद नए सिरे से गठित भारतीय सेना ने साम्राज्य के लिए कई विदेशी अभियानों में हिस्सा लिया:

- **एबीसीनिया (1868):** सर रॉबर्ट नेपियर के नेतृत्व में बंबई सेना की टुकड़ियाँ इथियोपिया के सम्राट टेवोड्रोस के ख़िलाफ़ मगदला तक गईं।
- **दूसरा अफ़गान युद्ध (1878 से 1880):** कंधार और काबुल के अभियानों में भारतीय रेजिमेंटें आगे रहीं।
- **मिस्र (1882) और सूडान (1885):** स्वेज़ नहर के इलाक़े की रक्षा के लिए भारतीय सैनिक भेजे गए।
- **तिराह अभियान (1897-98):** उत्तर-पश्चिमी सीमा पर अफ़रीदी क़बीलों के ख़िलाफ़ बड़ा अभियान, जिसमें डरगई की ऊँचाइयों पर धावा प्रसिद्ध है।
- **बॉक्सर विद्रोह, चीन (1900):** पेकिंग में विदेशी दूतावासों को छुड़ाने वाली अंतरराष्ट्रीय सेना में भारतीय सैनिक बड़ी संख्या में थे।
- **तिब्बत अभियान (1903-04):** कर्नल यंगहसबैंड के नेतृत्व में ल्हासा तक चढ़ाई की गई।

इन अभियानों ने भारतीय सेना को अलग-अलग जलवायु, ज़मीन और दुश्मनों से लड़ने का अनुभव दिया, जो विश्वयुद्धों में बहुत काम आया।

4.3.5. सिपाहियों की लड़ने की क्षमता के कारण

इतिहासकार सिपाहियों की कामयाबी और वफ़ादारी के पीछे कई कारण बताते हैं। भारतीय शासकों की सेनाओं में वेतन अक्सर महीनों बकाया रहता था, जबकि कंपनी समय पर वेतन और पेंशन देती थी। लगातार कवायद (Drill) से सिपाही लड़ाई के मैदान में भी अनुशासित रहते थे। सिपाही अपनी, अपने परिवार और अपनी रेजिमेंट की **इज़्ज़त** को सबसे ऊपर रखते थे और 'नमक हलाली' (Loyalty to the Salt), यानी जिसका नमक खाया उसके प्रति वफ़ादारी, की परंपरा निभाते थे। एक ही इलाक़े और समुदाय के लोगों का साथ रहना उनमें भाईचारा और गर्व पैदा करता था। उनके पास एक जैसी मस्कट, संगीन (Bayonet) और प्रशिक्षित तोपख़ाना था, और कमिसरियट (Commissariat) विभाग रसद का ठीक इंतज़ाम करता था।

4.3.6. सिपाहियों के लिए वीरता पुरस्कार (Gallantry Award)

सिपाहियों की बहादुरी को मान देने के लिए औपनिवेशिक सरकार ने कई पुरस्कार शुरू किए:

पुरस्कार	शुरुआत	विवरण
इंडियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट	1837	भारतीय सैनिकों का सबसे पुराना वीरता पुरस्कार

पुरस्कार	शुरुआत	विवरण
ऑर्डर ऑफ़ ब्रिटिश इंडिया	1837	भारतीय अफ़सरों की लंबी और अच्छी सेवा के लिए
इंडियन डिस्टिंग्विश्ड सर्विस मेडल	1907	भारतीय सैनिकों की ख़ास बहादुरी के लिए
विक्टोरिया क्रॉस	भारतीयों के लिए 1911 से	ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे बड़ा वीरता पुरस्कार

भारतीय सिपाही लंबे समय तक विक्टोरिया क्रॉस से वंचित रहे। यह रोक 1911 के दिल्ली दरबार में हटी। तीन साल के भीतर, अक्टूबर 1914 में, 129वीं बलूची के सिपाही **ख़ुदादाद ख़ान** बेल्जियम के मोर्चे पर यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय बन गए।

4.3.7. मुख्य युद्धों की कालक्रम सारणी

युद्ध	वर्ष	आमने-सामने	महत्त्व
अड्यार	1746	फ़्रांसीसी और कर्नाटक का नवाब	प्रशिक्षित सिपाहियों की श्रेष्ठता साबित
अर्काट	1751	क्लाइव और रज़ा साहिब	दक्षिण में अंग्रेज़ी असर बढ़ा
प्लासी	1757	क्लाइव और सिराजुद्दौला	बंगाल में राजनीतिक सत्ता की नींव
वांडीवाश	1760	आयर कूट और लैली	फ़्रांसीसी ताक़त का अंत
बक्सर	1764	मुनरो और संयुक्त भारतीय सेना	दीवानी का अधिकार
पोल्लिलूर	1780	हैदर-टीपू और बेली	अंग्रेज़ों की बड़ी हार
श्रीरंगपट्टनम	1799	अंग्रेज़ और टीपू सुल्तान	मैसूर का पतन
असाये	1803	वेलेज़ली और सिंधिया-भोंसले	मराठा शक्ति को चोट
कोरेगाँव	1818	कंपनी की बटालियन और पेशवा	पेशवाई के अंत की ओर
सोबराँव	1846	अंग्रेज़ और सिख	लाहौर संधि

युद्ध	वर्ष	आमने-सामने	महत्त्व
गुजरात	1849	अंग्रेज़ और सिख	पंजाब का विलय
सारागढ़ी	1897	36वीं सिख और क़बाइली	बेमिसाल बहादुरी

4.3.8. सिपाही का जीवन: छावनी (Cantonment), परिवार और परंपरा

युद्ध की कहानियों के बीच यह भूलना आसान है कि सिपाही का ज़्यादातर समय लड़ाई में नहीं, छावनी में बीतता था। उसका दिन सुबह की कवायद से शुरू होता, फिर हथियारों की सफ़ाई, पहरा, निरीक्षण और कभी-कभार लंबे कूच होते। ज़्यादातर सिपाही गाँवों से आते थे और उनकी तनख़्वाह का बड़ा हिस्सा घर भेजा जाता था। कई इलाक़ों में फ़ौज की नौकरी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाली परंपरा बन गई, जहाँ बेटा पिता की ही रेजिमेंट में भर्ती होता था।

रेजिमेंट सिपाही के लिए परिवार जैसी थी। हर रेजिमेंट का अपना झंडा, युद्ध-घोष, त्योहार और उसकी जीतों की यादें थीं। सिपाही अपने धार्मिक रीति-रिवाज छावनी में भी निभाते थे और कंपनी शुरू में इनमें दख़ल नहीं देती थी। जब इस संतुलन को छेड़ा गया, जैसे वेल्लोर (1806) और 1857 में, तो सिपाहियों का भरोसा टूट गया।

छावनी के बाहर सिपाही की एक अलग सामाजिक हैसियत थी। गाँव में उसे इज़्ज़त की नज़र से देखा जाता, पेंशन उसके बुढ़ापे का सहारा बनती और कई बार सेवा के बदले ज़मीन भी मिलती। इसी वजह से भर्ती के लिए युवकों की कभी कमी नहीं रही। पर यह भी सच है कि सिपाही ऊँचे पदों, बराबर वेतन और अफ़सरों के सम्मान से हमेशा वंचित रहा। यही दोहरी स्थिति, यानी समाज में इज़्ज़त और सेना में दूसरा दर्जा, उसके पूरे औपनिवेशिक अनुभव की पहचान है।

बीसवीं सदी में जब सिपाही विदेशों में लड़कर लौटे, तो वे अपने साथ नए अनुभव और विचार भी लाए। उन्होंने देखा था कि दुनिया के दूसरे हिस्सों में लोग कैसे रहते हैं और यूरोपीय सैनिकों के साथ कैसा व्यवहार होता है। इस अनुभव ने बराबरी और सम्मान की माँग को और तेज़ किया, जो आगे चलकर राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गई।

4.4: अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

1. औपनिवेशिक युग से आप क्या समझते हैं?
2. 'सिपाही' शब्द किस भाषा से आया है?

3. औपनिवेशिक युग के युद्धों के कोई दो कारण बताइए।
4. 1857 के विद्रोह का सेना के पुनर्गठन पर क्या असर पड़ा?
5. आज़ाद हिन्द फ़ौज किसके नेतृत्व में बनी?

4.5: सारांश (Summary)

इस पाठ में हमने औपनिवेशिक युग की धारणा, युद्ध का अर्थ और उसके प्रकार, युद्ध के सिद्धांत, भारतीय सिपाही की भूमिका और उसके लड़े युद्धों के विकास को समझा। सिपाही औपनिवेशिक सेना की रीढ़ थे। अड्यार से लेकर गुजरात तक की लड़ाइयों में उन्हीं के बल पर अंग्रेज़ों ने भारत में अपनी सत्ता जमाई। समय के साथ भेदभाव और धार्मिक दख़ल से पैदा हुआ असंतोष 1857 में फूट पड़ा। इसके बाद सेना नए सिरे से गढ़ी गई, सारागढ़ी जैसी लड़ाइयों और विदेशी अभियानों में सिपाहियों ने अपना लोहा मनवाया, और दोनों विश्वयुद्धों में दुनिया भर में उनकी बहादुरी की चर्चा हुई। आख़िर में इन्हीं में से एक बड़ा वर्ग आज़ाद हिन्द फ़ौज के रूप में आज़ादी की लड़ाई में उतरा। भारतीय सिपाही की कहानी अंग्रेज़ी राज के शुरू होने से उसके ख़त्म होने तक की पूरी कहानी है।

4.6: शब्दावली (Key Terminology)

- **औपनिवेशिक युग** (Colonial Era) : वह दौर जब कोई विदेशी शक्ति किसी भू-भाग पर राजनीतिक और आर्थिक नियंत्रण रखती है।
- **सिपाही** (Sepoy) : औपनिवेशिक सेना में भर्ती भारतीय सैनिक।
- **प्रेसीडेंसी सेना** (Presidency Army) : बंगाल, मद्रास और बंबई की अलग-अलग कंपनी सेनाएँ।
- **सहायक संधि** (Subsidiary Alliance) : लॉर्ड वेलेज़ली की शुरू की गई कूटनीतिक नीति।
- **मार्शल रेस सिद्धांत** (Martial Race Theory) : 1857 के बाद अपनाई गई भर्ती नीति।
- **आज़ाद हिन्द फ़ौज** (Indian National Army) : सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में बनी सेना।
- **विद्रोह** (Revolt / Mutiny) : सत्ता के ख़िलाफ़ हथियारबंद प्रतिरोध।
- **युद्ध और लड़ाई** (War and Battle) : युद्ध एक बड़ा सशस्त्र संघर्ष है, जबकि लड़ाई किसी ख़ास जगह और समय पर हुआ उसका एक हिस्सा।
- **अभियान** (Campaign) : किसी ख़ास मक़सद से एक तय इलाक़े और समय में की गई सैन्य कार्रवाइयों की कड़ी।

- **रणनीति** (Strategy) : युद्ध का पूरा लक्ष्य पाने के लिए संसाधनों और सेनाओं के इस्तेमाल की बड़ी योजना।
- **समरतंत्र** (Tactics) : लड़ाई के मैदान में सैनिकों और हथियारों को सीधे इस्तेमाल करने की कला।
- **युद्ध के सिद्धांत** (Principles of War) : उद्देश्य, आक्रमण, अचानक वार, बल को जुटाना, सुरक्षा, सहयोग, प्रशासन, मनोबल जैसे मान्य सैन्य सिद्धांत।
- **घेराबंदी** (Siege) : किसी किले या नगर को चारों ओर से घेरकर उसकी आपूर्ति रोकना और उस पर क़ब्ज़े की कोशिश।
- **रसद** (Logistics) : सेना को खाना, हथियार, गोला-बारूद और ढुलाई के साधन पहुँचाने का इंतज़ाम।
- **कमिसरियट** (Commissariat) : कंपनी सेना का रसद और आपूर्ति विभाग।
- **इज़्ज़त** (Honour) : सिपाही की अपनी, परिवार की और रेजिमेंट की प्रतिष्ठा की भावना।
- **नमक हलाली** (Loyalty to the Salt) : जिसका नमक खाया उसके प्रति वफ़ादारी की परंपरा।
- **अड्यार का युद्ध** (Battle of Adyar) : 1746 में फ़्रांसीसी सिपाहियों से कर्नाटक के नवाब की सेना की हार।
- **वांडीवाश का युद्ध** (Battle of Wandiwash) : 1760 में आयर कूट के हाथों फ़्रांसीसियों की निर्णायक हार।
- **असाये का युद्ध** (Battle of Assaye) : 1803 में आर्थर वेलेज़ली के हाथों सिंधिया-भोंसले की हार।
- **कोरेगाँव का युद्ध** (Battle of Koregaon) : 1 जनवरी 1818 को कंपनी की बटालियन और पेशवा की सेना के बीच हुई लड़ाई।
- **सारागढ़ी का युद्ध** (Battle of Saragarhi) : 12 सितंबर 1897 को 21 सिख सैनिकों का आख़िरी साँस तक सारागढ़ी चौकी बचाना।
- **उत्तर-पश्चिमी सीमा** (North-West Frontier) : अफ़गान सीमा से लगा ब्रिटिश भारत का इलाक़ा, जहाँ लगातार अभियान होते रहे।
- **इंडियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट** (Indian Order of Merit) : 1837 में शुरू, भारतीय सैनिकों का सबसे पुराना वीरता पुरस्कार।
- **विक्टोरिया क्रॉस** (Victoria Cross) : ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे बड़ा वीरता पुरस्कार; भारतीयों को 1911 से मिलने लगा।

- **ख़ुदादाद ख़ान** (First Indian VC Winner) : विक्टोरिया क्रॉस पाने वाले पहले भारतीय सैनिक (1914)।
- **लाल किला मुक़दमा** (Red Fort Trials) : 1945-46 में आज़ाद हिन्द फ़ौज के अफ़सरों पर दिल्ली के लाल किले में चला मुक़दमा।
- **बट्टा** (Field Allowance) : विदेश या कठिन इलाक़ों में सेवा के लिए सिपाहियों को मिलने वाला अतिरिक्त भत्ता।
- **पोल्लिलूर का युद्ध** (Battle of Pollilur) : 1780 में हैदर अली और टीपू के हाथों कर्नल बेली की हार।
- **आख़िरी आदमी, आख़िरी गोली** (Last Man, Last Round) : बिना हथियार डाले अंत तक लड़ने की सैन्य परंपरा।

4.7: स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. औपनिवेशिक युग में भारतीय सिपाहियों के युद्धों के विकास-क्रम को विस्तार से समझाइए।
2. सेना में भारतीय सिपाहियों की स्थिति और उनके साथ हुए भेदभाव का वर्णन कीजिए।
3. औपनिवेशिक युग के युद्धों के मुख्य कारणों का विश्लेषण कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. युद्ध के मुख्य प्रकार बताइए।
2. भारतीय सिपाहियों के युद्धों के कोई चार परिणाम लिखिए।
3. 1857 के विद्रोह के दो मुख्य कारण बताइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: हर प्रश्न के नीचे चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से सही विकल्प चुनिए।

1. भारत में औपनिवेशिक युग आम तौर पर किस घटना से शुरू माना जाता है?

(अ) पानीपत की पहली लड़ाई (ब) प्लासी का युद्ध

(स) बक्सर का युद्ध (द) 1857 का विद्रोह

2. 'सिपाही' शब्द किस भाषा से आया है?

(अ) अरबी (ब) तुर्की

(स) फ़ारसी (द) संस्कृत

3. कंपनी की सेना कितनी प्रेसीडेंसी सेनाओं में बँटी थी?

(अ) दो (ब) तीन

(स) चार (द) पाँच

4. अड्यार का युद्ध (1746) किनके बीच हुआ?

(अ) अंग्रेज़ और फ़्रांसीसी

(ब) फ़्रांसीसी और कर्नाटक का नवाब

(स) अंग्रेज़ और मराठा

(द) डच और पुर्तगाली

5. अड्यार में फ़्रांसीसी टुकड़ी का नेता कौन था?

(अ) डूप्ले (ब) पैराडिस

(स) लैली (द) बुसी

6. अर्काट की घेराबंदी (1751) में अंग्रेज़ों का नेतृत्व किसने किया?

(अ) रॉबर्ट क्लाइव (ब) स्ट्रिंगर लॉरेंस

(स) आयर कूट (द) हेक्टर मुनरो

7. वांडीवाश में फ़्रांसीसी सेनापति कौन था?

(अ) डूप्ले (ब) काउंट डी लैली

(स) ला बोर्दने (द) पैराडिस

8. पोल्लिलूर (1780) में किसकी हार हुई?

(अ) हैदर अली (ब) कर्नल बेली

(स) टीपू सुल्तान (द) निज़ाम

9. असाये (1803) किस अंग्रेज़ सेनापति ने जीता?

(अ) जनरल लेक (ब) आर्थर वेलेज़ली

(स) आयर कूट (द) लॉर्ड कॉर्नवालिस

10. लासवारी (1803) में अंग्रेज़ी सेना का नेता कौन था?

(अ) जनरल लेक (ब) आर्थर वेलेज़ली

(स) हेक्टर मुनरो (द) चार्ल्स नेपियर

11. कोरेगाँव का युद्ध किस नदी के किनारे हुआ?

(अ) कृष्णा (ब) भीमा

(स) गोदावरी (द) तुंगभद्रा

12. पहले आंग्ल-सिख युद्ध की निर्णायक लड़ाई कौन-सी थी?

(अ) मुदकी (ब) सोबराँव

(स) चिलियाँवाला (द) गुजरात

13. दूसरे आंग्ल-सिख युद्ध की निर्णायक लड़ाई कौन-सी थी?

(अ) फ़िरोज़शाह (ब) अलीवाल

(स) गुजरात (द) मुदकी

14. सारागढ़ी का युद्ध किस तारीख़ को हुआ?

(अ) 12 सितंबर 1897 (ब) 1 जनवरी 1818

(स) 10 मई 1857 (द) 23 जून 1757

15. सारागढ़ी में सिख सैनिकों के नायक कौन थे?

(अ) हवलदार ईशर सिंह (ब) सूबेदार जोगिंदर सिंह

(स) नायक दरवान सिंह (द) सिपाही ख़ुदादाद ख़ान

16. सारागढ़ी में कितने सिख सैनिक लड़े?

(अ) 11 (ब) 21

(स) 36 (द) 51

17. भारतीय सैनिकों का सबसे पुराना वीरता पुरस्कार कौन-सा है?

(अ) विक्टोरिया क्रॉस (ब) इंडियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट

(स) मिलिट्री क्रॉस (द) परमवीर चक्र

18. भारतीय सैनिक विक्टोरिया क्रॉस के हक़दार कब घोषित हुए?

(अ) 1857 (ब) 1877

(स) 1911 (द) 1914

19. विक्टोरिया क्रॉस पाने वाले पहले भारतीय सैनिक कौन थे?

(अ) दरवान सिंह नेगी (ब) ख़ुदादाद ख़ान

(स) गब्बर सिंह नेगी (द) ईशर सिंह

20. एबीसीनिया अभियान (1868) का नेतृत्व किसने किया?

(अ) रॉबर्ट नेपियर (ब) चार्ल्स नेपियर

(स) लॉर्ड रॉबर्ट्स (द) यंगहसबैंड

21. तिब्बत अभियान (1903-04) किसके नेतृत्व में हुआ?

(अ) लॉर्ड किचनर (ब) कर्नल यंगहसबैंड

(स) जनरल लेक (द) लॉर्ड कर्ज़न

22. रसद, वेतन और ढुलाई के इंतज़ाम से युद्ध का कौन-सा सिद्धांत जुड़ा है?

(अ) अचानक वार (ब) प्रशासन

(स) बल को जुटाना (द) आक्रामक कार्रवाई

23. लड़ाई के मैदान में सैनिकों और हथियारों के सीधे इस्तेमाल की कला क्या कहलाती है?

(अ) रणनीति (ब) समरतंत्र

(स) कूटनीति (द) भू-राजनीति

24. सहायक संधि युद्ध के किस पहलू का उदाहरण है?

(अ) रणनीति और कूटनीति (ब) नौसैनिक युद्ध

(स) घेराबंदी (द) छापामार युद्ध

25. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था?

(अ) हड़प नीति (ब) चर्बी वाले कारतूस

(स) सती प्रथा का अंत (द) लगान में बढ़ोतरी

26. मार्शल रेस सिद्धांत कब अपनाया गया?

(अ) 1757 से पहले (ब) 1857 के बाद

(स) 1914 के बाद (द) 1947 के बाद

27. आज़ाद हिन्द फ़ौज किस विश्वयुद्ध के दौरान बनी?

(अ) पहले (ब) दूसरे

(स) दोनों में (द) किसी में नहीं

28. लाल किला मुक़दमे किनसे जुड़े थे?

(अ) 1857 के विद्रोही

(ब) आज़ाद हिन्द फ़ौज के अफ़सर

(स) नौसेना के विद्रोही

(द) ग़दर पार्टी

29. सिपाहियों के युद्धों का पहला चरण किस अवधि का है?

(अ) 1757 से 1818 (ब) 1818 से 1857

(स) 1858 से 1914 (द) 1914 से 1945

30. कंपनी सेना में 'बट्टा' क्या था?

(अ) एक हथियार (ब) अतिरिक्त भत्ता

(स) एक पद (द) एक किला

(ब) रिक्त स्थान भरिए

1. भारत में औपनिवेशिक युग आम तौर पर 1757 से _____ तक माना जाता है।

2. 'सिपाही' शब्द फ़ारसी के _____ से बना है।

3. अर्काट की घेराबंदी लगभग _____ दिन चली।

4. वांडीवाश में अंग्रेज़ी सेना के सेनापति _____ थे।

5. सिंधिया की सेना को फ़्रांसीसी अफ़सर डी बॉयन और _____ ने तैयार किया था।

6. सारागढ़ी में लड़ी 36वीं सिख रेजिमेंट आज _____ कहलाती है।

7. _____ के दिल्ली दरबार में भारतीयों को विक्टोरिया क्रॉस का हक़दार घोषित किया गया।

8. ख़ुदादाद ख़ान _____ रेजिमेंट के सिपाही थे।

9. आज़ाद हिन्द फ़ौज का नेतृत्व नेताजी _____ ने किया।

10. सिख रेजिमेंट 12 सितंबर को _____ मनाती है।

(स) सही या गलत बताइए

1. अड्यार की लड़ाई ने प्रशिक्षित भारतीय सिपाहियों की ताक़त साबित की।

2. वांडीवाश में फ़्रांसीसी जीते।

3. पोल्लिलूर में मैसूर की सेना ने रॉकेटों का इस्तेमाल किया।

4. श्रीरंगपट्टनम (1799) के पतन के समय टीपू सुल्तान बच निकले।

5. चिलियाँवाला की लड़ाई अंग्रेज़ों को बहुत महँगी पड़ी।

6. सारागढ़ी के सैनिकों ने आख़िर में हथियार डाल दिए।

7. इंडियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट 1837 में शुरू हुआ।

8. 1857 से पहले भारतीय सिपाहियों ने कभी भारत के बाहर युद्ध नहीं किया।

9. सिपाहियों के युद्धों का एक परिणाम राष्ट्रीय चेतना का विकास भी था।

10. एक युद्ध में कई लड़ाइयाँ होती हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. (ब) प्लासी का युद्ध	2. (स) फ़ारसी	3. (ब) तीन
4. (ब) फ़्रांसीसी और कर्नाटक का नवाब	5. (ब) पैराडिस	6. (अ) रॉबर्ट क्लाइव
7. (ब) काउंट डी लैली	8. (ब) कर्नल बेली	9. (ब) आर्थर वेलेज़ली
10. (अ) जनरल लेक	11. (ब) भीमा	12. (ब) सोबराँव
13. (स) गुजरात	14. (अ) 12 सितंबर 1897	15. (अ) हवलदार ईशर सिंह
16. (ब) 21	17. (ब) इंडियन ऑर्डर ऑफ़ मेरिट	18. (स) 1911
19. (ब) ख़ुदादाद ख़ान	20. (अ) रॉबर्ट नेपियर	21. (ब) कर्नल यंगहसबैंड
22. (ब) प्रशासन	23. (ब) समरतंत्र	24. (अ) रणनीति और कूटनीति

25. (ब) चर्बी वाले कारतूस	26. (ब) 1857 के बाद	27. (ब) दूसरे
28. (ब) आज़ाद हिन्द फ़ौज के अफ़सर	29. (अ) 1757 से 1818	30. (ब) अतिरिक्त भत्ता

(ब) रिक्त स्थान:

1. 1947	2. सिपाह
3. पचास	4. सर आयर कूट
5. पेरों	6. 4 सिख
7. 1911	8. 129वीं बलूची
9. सुभाषचंद्र बोस	10. सारागढ़ी दिवस

(स) सही या गलत:

1. सही	2. गलत	3. सही	4. गलत	5. सही
6. गलत	7. सही	8. गलत	9. सही	10. सही

4.8: अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1. वह दौर जब भारत विदेशी, यानी अंग्रेज़ी, सत्ता के राजनीतिक और आर्थिक नियंत्रण में था (लगभग 1757 से 1947)।
2. 'सिपाही' फ़ारसी के 'सिपाह' से बना है, जिसका अर्थ है सैनिक।
3. व्यापारिक हितों की रक्षा और इलाक़ा बढ़ाने की महत्त्वाकांक्षा।
4. सेना नए सिरे से गढ़ी गई, मार्शल रेस सिद्धांत अपनाया गया और भर्ती तथा निगरानी के नियम सख़्त हुए।
5. नेताजी सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में।

4.9: संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

1. बिपिन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास।
2. सुमित सरकार, मॉडर्न इंडिया: 1885 से 1947।
3. आर.सी. मजूमदार, ब्रिटिश पैरामाउंटसी और भारतीय पुनर्जागरण।
4. पर्सिवल स्पीयर, अ हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, खंड 2।
5. स्टीफ़न पी. कोहेन, द इंडियन आर्मी: इट्स कॉन्ट्रिब्यूशन टू द डेवलपमेंट ऑफ़ अ नेशन।
6. के.एम. पणिक्कर, द इवोल्यूशन ऑफ़ ब्रिटिश पॉलिसी टुवर्ड्स इंडियन स्टेट्स।
7. भारतीय सेना का आधिकारिक इतिहास, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

Subject: Introduction to Military History	Author: Dr. Mahender Pal
Subject Code: C24MDC108T	Vetter:

इकाई-5

(LESSON-5)

1857 का विद्रोह एवं भारतीय सेना के सुधार
(1857 Revolt & Reforms of Indian Army)

इकाई की संरचना (Structure)

5.0 उद्देश्य (Learning Objectives)

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

5.2 1857 के विद्रोह की धारणा (Concept of the Revolt of 1857)

5.2.1 विद्रोह का अर्थ

5.2.2 विद्रोह के कारण

5.2.3 सरकार पर विद्रोह का असर

5.2.4 विद्रोह के मुख्य पहलू

5.2.5 विद्रोह की सफलता और असफलता

5.2.6 विद्रोह के परिणाम

5.2.7 विद्रोह के मुख्य कारण: संक्षेप में

5.2.8 विद्रोह का घटनाक्रम

5.2.9 विद्रोह के मुख्य केंद्र और नेता

5.2.10 हरियाणा में 1857

5.2.11 विद्रोह के स्वरूप पर इतिहासकारों की राय

5.2.12 विद्रोह का सैन्य विश्लेषण

5.2.13 विद्रोह में महिलाओं और आम लोगों की भूमिका

5.3 भारतीय सेना के सुधार (Reforms of the Indian Army)

5.3.1 सुधार का अर्थ

5.3.2 सेना-सुधार की धारणा

5.3.3 सुधारों के कारण

5.3.4 सुधारों का दायरा

5.3.5 सुधारों के मुख्य पहलू

5.3.6 सुधारों के प्रकार

5.3.7 सुधारों के बाद सेना की स्थिति

5.3.8 पील आयोग (1858-59) की सिफ़ारिशें

5.3.9 1858 से 1895 के बीच के ढाँचागत बदलाव

5.3.10 सुधारों का समग्र मूल्यांकन

5.3.11 1857 के बाद रियासतें और उनकी सेनाएँ

5.4 अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

5.5 सारांश (Summary)

5.6 शब्दावली (Key Terminology)

5.7 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

5.8 अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

5.9 संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

5.0: उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

- 1857 के विद्रोह (Revolt) की धारणा और उसका स्वरूप समझ सकेंगे।
- विद्रोह के कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विद्रोह का अंग्रेज़ सरकार की नीतियों पर क्या असर पड़ा, यह जान सकेंगे।

- विद्रोह कहाँ सफल रहा और क्यों असफल हुआ, इसका मूल्यांकन कर सकेंगे।
- विद्रोह के परिणामों की व्याख्या कर सकेंगे।
- 1857 के बाद सेना में हुए सुधारों का अर्थ, कारण, दायरा, प्रकार और उनकी स्थिति समझ सकेंगे।

5.1: प्रस्तावना (Introduction)

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की उन घटनाओं में है जिन्होंने औपनिवेशिक राज की नींव हिला दी। मेरठ से उठी यह आग कुछ ही हफ़्तों में उत्तर और मध्य भारत के बड़े हिस्से में फैल गई। आख़िर में विद्रोह दबा दिया गया, पर इसके बाद अंग्रेज़ी शासन, और ख़ास तौर पर भारतीय सेना, का ढाँचा पूरी तरह बदल गया।

इसकी जड़ में भारतीय सिपाहियों का वह असंतोष था जो बरसों से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सैनिक कारणों से जमा हो रहा था। चर्बी वाले कारतूस तो बस वह चिंगारी थे जिसने बारूद में आग लगा दी। असली कारण कहीं गहरे और फैले हुए थे। विद्रोह के बाद 1858 में ईस्ट इंडिया कंपनी का राज ख़त्म हुआ और भारत सीधे ब्रिटिश ताज के अधीन आ गया।

अंग्रेज़ सरकार ने यह भी समझ लिया कि सेना को नए सिरे से गढ़े बिना काम नहीं चलेगा, ताकि ऐसा विद्रोह दोबारा न हो। इसके लिए ढाँचे, प्रशासन और नीति में कई सुधार किए गए, जिन्होंने आगे की भारतीय सेना का स्वरूप तय किया।

इस पाठ में हम 1857 को कई कोणों से देखेंगे: वह क्या था, क्यों भड़का, किसने लड़ा, क्यों हारा, और उसके बाद अंग्रेज़ों ने अपनी सेना को किस तरह बदला।

5.2: 1857 के विद्रोह की धारणा (Concept of the Revolt of 1857)

इतिहासकारों ने इस विद्रोह को अलग-अलग नाम दिए हैं: 'सिपाही विद्रोह', 'महान विद्रोह' और 'पहला स्वतंत्रता संग्राम'। यह 10 मई 1857 को मेरठ से शुरू हुआ और जल्दी ही दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी और बरेली तक फैल गया।

शुरुआत सैनिकों की नाराज़गी से हुई, पर जल्दी ही इसमें किसान, ज़मींदार, गद्दी से हटाए गए शासक और आम लोग भी जुड़ गए। इसी कारण यह एक बड़े जन-आंदोलन जैसा रूप ले सका।

5.2.1. विद्रोह का अर्थ

'विद्रोह' का सामान्य अर्थ है स्थापित सत्ता के ख़िलाफ़ हथियारबंद या संगठित प्रतिरोध। सेना के संदर्भ में विद्रोह तब कहा जाता है जब सैनिक अपने अफ़सरों के आदेश मानने से इनकार कर दें और उनके ख़िलाफ़ हथियार उठा लें।

1857 के संदर्भ में यह शब्द उस बड़े सैनिक और जन-असंतोष की ओर इशारा करता है जिसने सिपाहियों को अंग्रेज़ी सत्ता से खुलकर टकराने पर मजबूर किया। अंग्रेज़ इतिहासकारों ने इसे 'सिपाही विद्रोह' कहकर केवल सैनिकों तक सीमित दिखाने की कोशिश की, जबकि वी.डी. सावरकर जैसे भारतीय लेखकों ने इसे 'पहला स्वतंत्रता संग्राम' कहा।

5.2.2. विद्रोह के कारण

(क) राजनीतिक कारण

- लॉर्ड डलहौज़ी की 'हड़प नीति' (Doctrine of Lapse) से कई रियासतें अंग्रेज़ी राज में मिला ली गईं।
- झाँसी, सतारा और नागपुर जैसी रियासतों पर क़ब्ज़ा अन्याय माना गया। 1856 में कुशासन का आरोप लगाकर अवध का विलय कर लिया गया, जबकि अवध के नवाब हमेशा अंग्रेज़ों के वफ़ादार रहे थे। बंगाल सेना के बहुत से सिपाही अवध के ही थे, इसलिए यह चोट सीधे उनके घरों तक पहुँची।
- मुगल बादशाह की उपाधि और सम्मान ख़त्म करने की घोषणा ने लोगों को आहत किया।

(ख) आर्थिक कारण

- भारी लगान और कड़ी कर-व्यवस्था से किसान परेशान थे।
- हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग उजड़ गए, जिससे कारीगर बेरोज़गार हुए।
- ज़मींदारों और ताल्लुक़दारों (Big Landholders) की ज़मीनें छीनी गईं, जिससे वे नाराज़ थे।

(ग) सामाजिक और धार्मिक कारण

- ईसाई मिशनरियों के काम से धर्म बदले जाने का डर फैला।
- सती प्रथा के अंत और विधवा विवाह जैसे सुधारों को धर्म में दख़ल माना गया।
- जाति और धर्म की परंपराओं में दख़ल की आशंका बनी रही।

(घ) सैनिक कारण

- वेतन, तरक्क़ी और सम्मान में भारतीय सिपाहियों से भेदभाव होता था।
- 1856 के 'जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट' से नए सिपाहियों को समुद्र पार जाने के लिए बाध्य किया गया, जिसे धर्म के ख़िलाफ़ समझा गया।
- विदेश या दूर के इलाक़ों में सेवा के लिए मिलने वाला अतिरिक्त भत्ता, जिसे 'बट्टा' (Field Allowance) कहते थे, कई जगह बंद कर दिया गया।
- यूरोपीय और भारतीय सैनिकों की संख्या में भारी असंतुलन था।

(ङ) तात्कालिक कारण (Immediate Cause)

- एनफ़ील्ड राइफ़ल के कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी लगी होने की बात फैली। हिंदू और मुसलमान, दोनों सिपाहियों ने इसे अपने धर्म पर चोट माना।

5.2.3. सरकार पर विद्रोह का असर

1. **कंपनी राज का अंत:** 1858 के भारत सरकार अधिनियम से कंपनी का शासन ख़त्म करके भारत सीधे ताज के अधीन कर दिया गया। लंदन में ब्रिटिश मंत्रिमंडल का एक सदस्य, भारत राज्य सचिव (Secretary of State for India), भारत के प्रशासन के लिए ज़िम्मेदार बना।

2. **महारानी विक्टोरिया की घोषणा (1858):** रियासतों की स्वायत्तता बनाए रखने, धर्म के मामलों में दख़ल न देने और सबको बराबर अवसर देने का भरोसा दिलाया गया।

3. **प्रशासन में बदलाव:** गवर्नर-जनरल को अब 'वायसराय' (Viceroy) भी कहा जाने लगा।

4. **सैन्य नीति में बदलाव:** सेना के संगठन, भर्ती (Recruitment) और नियंत्रण की नीतियाँ जड़ से बदल दी गईं।

5. **चौकन्नापन:** सरकार आगे से भारतीय जनता और सेना, दोनों के साथ ज़्यादा सावधान और नियंत्रण वाली नीति अपनाने लगी।

5.2.4. विद्रोह के मुख्य पहलू

1. **भौगोलिक फैलाव:** विद्रोह मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत में रहा, जैसे मेरठ, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी, बरेली और इलाहाबाद।

2. **नेतृत्व:** बहादुरशाह ज़फ़र, नाना साहेब, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई और कुँवर सिंह जैसे नेता आगे आए।

3. **समाज की भागीदारी:** सिपाहियों के साथ किसान, ज़मींदार और आम लोग भी लड़े।

4. **संगठन की कमी:** कोई केंद्रीय नेतृत्व या तालमेल नहीं था।

5. **सीमित समर्थन:** पंजाब, बंगाल और दक्षिण भारत ज़्यादातर अछूते रहे।

5.2.5. विद्रोह की सफलता और असफलता

सफलता के पक्ष में कहा जा सकता है कि विद्रोह ने अंग्रेज़ी सत्ता को गहरी चोट दी और उसकी दमनकारी नीतियों को उजागर किया। इसमें पहली बार भारतीयों की एकता और आज़ादी की चाह बड़े पैमाने पर दिखी, और यह आगे के राष्ट्रीय आंदोलन के लिए प्रेरणा बना।

असफलता के कारण भी साफ़ हैं। संगठन और नेतृत्व बिखरा हुआ था। कोई केंद्रीय योजना, ठोस रणनीति (Strategy) या संचार-व्यवस्था नहीं थी। पूरे देश का साथ नहीं मिला और कई रियासतें तथा समूह अंग्रेज़ों के साथ खड़े रहे। अंग्रेज़ी सेना हथियारों और संगठन में कहीं आगे थी, और विद्रोहियों में आपसी तालमेल तथा साझा लक्ष्य की कमी थी।

5.2.6. विद्रोह के परिणाम

1. कंपनी राज ख़त्म हुआ और ताज का सीधा शासन शुरू हुआ।

2. भारतीय सेना का पूरा पुनर्गठन (Reorganisation) हुआ।

3. रियासतों के प्रति नीति बदली और हड़प नीति छोड़ दी गई।

4. भारतीयों और अंग्रेज़ों के बीच अविश्वास और दूरी बढ़ी।

5. राष्ट्रीय चेतना के विकास की नींव पड़ी।

6. प्रशासन, न्याय और सेना के ढाँचे में दूरगामी सुधार हुए।

5.2.7. विद्रोह के मुख्य कारण: संक्षेप में

संक्षेप में, 1857 के पीछे पाँच बड़ी वजहें थीं: हड़प नीति और रियासतों के विलय से राजनीतिक नाराज़गी, आर्थिक शोषण और किसानों का असंतोष, धर्म और समाज में दख़ल का डर, सेना के भीतर भेदभाव, और चर्बी वाले कारतूसों की तात्कालिक घटना।

5.2.8. विद्रोह का घटनाक्रम

विद्रोह की मुख्य घटनाएँ समय के क्रम में इस तरह हुईं:

- **29 मार्च 1857, बैरकपुर:** पहली चिंगारी यहीं से उठी। 34वीं बंगाल नेटिव इन्फ़ैंट्री के सिपाही **मंगल पांडे** परेड-मैदान पर अपने अफ़सरों से भिड़ गए। दस दिन बाद, 8 अप्रैल को, उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया और कुछ समय बाद पूरी रेजिमेंट भंग कर दी गई।
- **24 अप्रैल 1857, मेरठ:** तीसरी बंगाल लाइट कैवेलरी के सवारों को नए कारतूसों के साथ अभ्यास करने को कहा गया। नब्बे में से केवल पाँच ने बात मानी। बाक़ी पचासी पर कोर्ट-मार्शल चला, और 9 मई को पूरी छावनी (Cantonment) के सामने उनकी वर्दियाँ उतरवाकर उन्हें बेड़ियों में जकड़ दिया गया।
- **10 मई 1857, मेरठ:** सिपाहियों ने खुला विद्रोह किया, अपने साथियों को जेल से छुड़ाया और दिल्ली की ओर चल पड़े।
- **11 मई 1857, दिल्ली:** रात भर चलकर मेरठ के सिपाही सुबह दिल्ली पहुँचे, लाल किले में घुसे और बूढ़े बहादुरशाह ज़फ़र से अपना नेतृत्व करने की गुहार लगाई। बादशाह को हिंदुस्तान का सम्राट घोषित किया गया। आगे चलकर बरेली से आए बख़्त ख़ान को दिल्ली की विद्रोही फ़ौज का सेनापति बनाया गया।
- **जून-जुलाई 1857, कानपुर और लखनऊ:** आग पूरब की ओर फैली। कानपुर में पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहेब ने कमान सँभाली। वहीं जुलाई में बीबीघर नाम के भवन में बंदी यूरोपीय औरतों और बच्चों की हत्या हुई, जिसका बदला अंग्रेज़ों ने बहुत क्रूरता से लिया। अवध में बेगम हज़रत महल आगे आईं और अपने बेटे बिरजिस क़द्र को नवाब घोषित किया। लखनऊ में अंग्रेज़ अपनी रेज़िडेंसी में घिर गए और महीनों तक बाहर नहीं निकल सके।
- **सितंबर 1857, दिल्ली:** 20 सितंबर को अंग्रेज़ों ने दिल्ली फिर से जीत ली। बहादुरशाह ज़फ़र पकड़े गए और रंगून भेज दिए गए, जहाँ 1862 में उनकी मृत्यु हुई।
- **मार्च से जून 1858:** मार्च में लखनऊ पर फिर क़ब्ज़ा हुआ, अप्रैल में सर ह्यू रोज़ ने झाँसी ली और जून में रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर के पास लड़ते हुए शहीद हुईं।

- **अप्रैल 1859:** तात्या टोपे पकड़े गए और शिवपुरी में उन्हें फाँसी दी गई। इससे पहले 8 जुलाई 1858 को लॉर्ड कैनिंग शांति की औपचारिक घोषणा कर चुके थे।

5.2.9. विद्रोह के मुख्य केंद्र और नेता

केंद्र	नेता	दबाने वाले अंग्रेज़ अफ़सर या टिप्पणी
दिल्ली	बहादुरशाह ज़फ़र, बख़्त ख़ान	जॉन निकल्सन, हडसन
कानपुर	नाना साहेब, तात्या टोपे	हैवलॉक, कैंपबेल
लखनऊ	बेगम हज़रत महल	कॉलिन कैंपबेल
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	सर ह्यू रोज़
जगदीशपुर (बिहार)	कुँवर सिंह	विन्सेंट आयर, एडवर्ड लुगार्ड
बरेली	ख़ान बहादुर ख़ान	कॉलिन कैंपबेल
फ़ैज़ाबाद	मौलवी अहमदुल्लाह शाह	(उल्लेख नहीं)
इलाहाबाद	लियाक़त अली	कर्नल नील
रेवाड़ी (हरियाणा)	राव तुलाराम	कर्नल जेरार्ड, जो नसीबपुर में मारा गया

5.2.10. हरियाणा में 1857

आज का हरियाणा भी 1857 का एक अहम केंद्र था। अंबाला छावनी में मई 1857 की शुरुआत से ही बेचैनी के संकेत दिखने लगे थे। मई के आख़िर में हांसी, हिसार और सिरसा के इलाक़ों में भी सिपाही और जनता उठ खड़े हुए। हांसी के **लाला हुकमचंद जैन** जैसे देशभक्तों को विद्रोह में हिस्सा लेने के कारण फाँसी दी गई।

इस इलाक़े में विद्रोह की अगुवाई रेवाड़ी के **राव तुलाराम** ने की। 16 नवंबर 1857 को नारनौल के पास **नसीबपुर** में उनकी सेना और कर्नल जेरार्ड की अंग्रेज़ी सेना में घमासान लड़ाई हुई। जेरार्ड मारा गया, हालाँकि आख़िर में विद्रोही हार गए। राव तुलाराम बाद में मदद जुटाने के लिए विदेश गए और वहीं उनका देहांत हुआ। विद्रोह की सज़ा के तौर पर अंग्रेज़ों ने इस पूरे इलाक़े को पंजाब प्रांत में मिला दिया।

5.2.11. विद्रोह के स्वरूप पर इतिहासकारों की राय

1857 के स्वरूप को लेकर इतिहासकार कभी एकमत नहीं रहे। सर जॉन सीले ने इसे 'पूरी तरह देशभक्ति से ख़ाली और स्वार्थी सिपाही विद्रोह' कहा। सर जेम्स आउट्रम को इसमें अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ 'मुस्लिम षड्यंत्र' दिखा। टी.आर. होम्स ने इसे 'सभ्यता और बर्बरता का संघर्ष' बताया। दूसरी ओर वी.डी. सावरकर ने 1909 में छपी अपनी पुस्तक 'द इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस, 1857' में इसे 'पहला स्वतंत्रता संग्राम' कहा। आर.सी. मजूमदार का मत था कि यह 'न पहला था, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम'। एस.एन. सेन ने विद्रोह की शताब्दी पर लिखी सरकारी पुस्तक 'एटीन फ़िफ़्टी-सेवन' (1957) में इसे ऐसा संघर्ष माना जो सिपाहियों से शुरू हुआ और फिर बड़े जन-विद्रोह में बदल गया। कार्ल मार्क्स ने इसे 'राष्ट्रीय विद्रोह' कहा था।

आज ज़्यादातर इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि विद्रोह सैनिकों के असंतोष से शुरू हुआ, पर उत्तर और मध्य भारत के बहुत से इलाक़ों में इसमें किसान, कारीगर, ज़मींदार और शासक भी शामिल हो गए और यह एक व्यापक जन-विद्रोह बन गया।

5.2.12. विद्रोह का सैन्य विश्लेषण

सैन्य नज़रिए से विद्रोहियों की हार के कुछ ख़ास कारण थे। पहला, कोई केंद्रीय कमान नहीं थी। हर जगह लड़ाई स्थानीय नेताओं के भरोसे थी और दिल्ली, कानपुर, लखनऊ तथा झाँसी के बीच कोई साझी रणनीति नहीं बनी। दूसरा, विद्रोही सेनाएँ अपने-अपने शहर बचाने में उलझी रहीं, जबकि अंग्रेज़ एक-एक केंद्र को घेरकर तोड़ते गए। तीसरा, सिपाही प्रशिक्षित ज़रूर थे, पर बड़ी सेना चलाने का अनुभव रखने वाले ऊँचे दर्जे के अफ़सर उनके पास नहीं थे। चौथा, अंग्रेज़ों के पास टेलीग्राफ़, व्यवस्थित रसद (Logistics) और बेहतर एनफ़ील्ड राइफ़लें थीं। इतिहासकार टेलीग्राफ़ को विद्रोह कुचलने का अंग्रेज़ों का सबसे असरदार साधन मानते हैं। और पाँचवाँ, सिख, गोरखा और मद्रास तथा बंबई की सेनाएँ अंग्रेज़ों के साथ रहीं। पंजाब, दक्षिण भारत और बहुत सी रियासतों से उन्हें लगातार सैनिक और संसाधन मिलते रहे।

5.2.13. विद्रोह में महिलाओं और आम लोगों की भूमिका

1857 को अक्सर सिपाहियों और राजाओं की लड़ाई के रूप में याद किया जाता है, पर इसमें महिलाओं और आम लोगों की भागीदारी भी कम नहीं थी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और लखनऊ की बेगम हज़रत महल तो जानी-मानी हैं ही, इनके अलावा भी कई महिलाओं ने हथियार उठाए। झाँसी की **झलकारी बाई**, जो रानी की सेना में थीं, अंग्रेज़ों के घेरे के समय रानी का वेश धरकर मोर्चे पर डट गईं

ताकि रानी सुरक्षित निकल सकें। मध्य भारत में रामगढ़ की रानी **अवंतीबाई लोधी** ने अंग्रेज़ों से लोहा लिया और हार सामने देखकर आत्मबलिदान किया। कानपुर में **अज़ीज़न बाई** ने सिपाहियों का हौसला बढ़ाया और उनकी देखभाल का काम सँभाला।

गाँवों में किसानों ने अंग्रेज़ी चौकियों पर हमले किए, रसद रोकी, टेलीग्राफ़ के तार काटे और विद्रोही सेनाओं को अनाज और ख़बरें पहुँचाईं। कई जगह ताल्लुक़दार (Big Landholder) अपने किसानों के साथ लड़ाई में उतरे। मौलवियों और साधुओं ने गाँव-गाँव जाकर लोगों को एकजुट किया। कई इतिहासकारों का मानना है कि अवध जैसे इलाक़ों में विद्रोह को जो जन-समर्थन मिला, उसी ने अंग्रेज़ों के लिए इसे दबाना इतना कठिन बना दिया।

विद्रोह के बाद अंग्रेज़ों का बदला भी आम लोगों पर ही सबसे ज़्यादा टूटा। गाँव जलाए गए, बिना मुक़दमे फाँसियाँ दी गईं और कई इलाक़ों पर सामूहिक जुर्माने लगे। इन घटनाओं की यादें लोकगीतों और क़िस्सों में पीढ़ियों तक ज़िंदा रहीं और आगे के राष्ट्रीय आंदोलन के लिए प्रेरणा बनीं।

5.3: भारतीय सेना के सुधार (Reforms of the Indian Army)

1857 के बाद अंग्रेज़ सरकार को साफ़ समझ आ गया कि सेना का मौजूदा ढाँचा बदले बिना काम नहीं चलेगा। इसी समझ से कई सैन्य सुधार हुए, जिन्होंने अगले कई दशकों तक भारतीय सेना की शक्ल तय की।

5.3.1. सुधार का अर्थ

सुधार का अर्थ है किसी व्यवस्था, संस्था या नीति में ऐसा बदलाव या पुनर्गठन जिससे वह ज़्यादा असरदार, संतुलित और समय के अनुकूल बने। सेना के संदर्भ में इसका मतलब है संगठन, भर्ती, प्रशिक्षण, नियंत्रण और प्रशासन में ऐसे बदलाव जिनसे सेना ज़्यादा अनुशासित, वफ़ादार और कुशल बने।

5.3.2. सेना-सुधार की धारणा

1857 के बाद के सुधार एक ही बुनियादी सोच पर टिके थे: सेना कभी इतनी ताक़तवर या एकजुट न हो कि फिर से अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ खड़ी हो सके। इसके लिए 'फूट डालो और राज करो' की नीति सेना के भीतर भी लागू की गई। अलग-अलग जाति, धर्म और इलाक़े के सैनिकों को मिली-जुली रेजिमेंटों में रखा गया, यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ाई गई और तोपख़ाने (Artillery) जैसे भारी हथियार भारतीयों के हाथ में नहीं दिए गए।

5.3.3. सुधारों के कारण

1. 1857 जैसे विद्रोह को दोबारा होने से रोकना।
2. सेना में यूरोपीय और भारतीय सैनिकों की संख्या का संतुलन बनाना।
3. भर्ती की नीति बदलकर सैनिकों की वफ़ादारी पक्की करना।
4. सेना को ज़्यादा अनुशासित, नियंत्रित और कुशल बनाना।
5. सेना पर केंद्र का प्रशासनिक नियंत्रण मज़बूत करना।

5.3.4. सुधारों का दायरा

सुधारों का दायरा बहुत बड़ा था। इसमें सेना का संगठन और कमान, भर्ती की नीति और इलाक़े तथा जाति के आधार पर सैनिकों का चुनाव, हथियारों और तोपख़ाने पर नियंत्रण, यूरोपीय और भारतीय सैनिकों का अनुपात, प्रशासनिक और वित्तीय नियंत्रण, और प्रशिक्षण तथा सैन्य शिक्षा, सब कुछ शामिल था।

5.3.5. सुधारों के मुख्य पहलू

1. **सेना का पुनर्गठन:** बंगाल, मद्रास और बंबई की तीनों प्रेसीडेंसी (Presidency) सेनाओं के ढाँचे में बदलाव।

2. **यूरोपीय और भारतीय अनुपात:** यूरोपीय सैनिक बढ़ाए गए और अनुपात लगभग एक और दो या एक और तीन तक लाया गया।

3. **तोपख़ाने पर नियंत्रण:** भारी हथियार और तोपख़ाना मुख्य रूप से यूरोपीय सैनिकों के हाथ में रखा गया।

4. **मार्शल रेस (Martial Race) सिद्धांत:** सिख, गोरखा, पठान जैसे समुदायों को 'लड़ाकू जाति' मानकर उनकी भर्ती को तरजीह दी गई और बंगाल से भर्ती घटा दी गई।

5. **मिली-जुली रेजिमेंट:** अलग-अलग जाति, धर्म और इलाक़े के सैनिक एक साथ रखे गए, ताकि वे एकजुट होकर बग़ावत न कर सकें।

6. **केंद्रीय नियंत्रण:** सेना सीधे ब्रिटिश सरकार के भारत कार्यालय के अधीन आ गई।

5.3.6. सुधारों के प्रकार

संगठन से जुड़े सुधार सेना की बनावट, कमान और प्रशासन बदलने वाले थे। **भर्ती से जुड़े सुधार** मार्शल रेस के आधार पर चुनकर भर्ती करने के थे। **हथियारों से जुड़े सुधार** तोपख़ाने और भारी हथियारों पर यूरोपीय नियंत्रण पक्का करते थे। **वित्तीय और प्रशासनिक सुधार** सेना का ख़र्च और प्रबंधन सीधे ताज की सरकार के हाथ में लाए। और **सामाजिक-मनोवैज्ञानिक सुधारों** में सैनिकों की धार्मिक और सामाजिक भावनाओं को ध्यान में रखकर सेवा-शर्तें बदली गईं।

5.3.7. सुधारों के बाद सेना की स्थिति

इन सुधारों के बाद भारतीय सेना लंबे समय तक इसी रूप में रही। यूरोपीय अफ़सरों का दबदबा बना रहा और ऊँची कमान दशकों तक भारतीयों की पहुँच से बाहर रही। मार्शल रेस के आधार पर भर्ती कई दशकों तक चलती रही। सेना ज़्यादा अनुशासित, केंद्रीकृत और नियंत्रित हो गई, पर भारतीय सैनिकों की आज़ादी और प्रतिष्ठा सीमित ही रही। यही पुनर्गठित सेना आगे चलकर दोनों विश्वयुद्धों में साम्राज्य की मुख्य ताक़त बनी। बीसवीं सदी में धीरे-धीरे भारतीयों को अफ़सर बनने का मौक़ा मिलने लगा, जिससे आज़ाद भारत की राष्ट्रीय सेना की ज़मीन तैयार हुई।

5.3.8. पील आयोग (1858-59) की सिफ़ारिशें

विद्रोह के बाद सेना के पुनर्गठन के लिए मेजर जनरल जोनाथन पील की अध्यक्षता में एक शाही आयोग बना, जिसे **पील आयोग** कहते हैं। इसकी मुख्य सिफ़ारिशें ये थीं:

- बंगाल सेना में यूरोपीय और भारतीय सैनिकों का अनुपात एक और दो, तथा मद्रास और बंबई सेनाओं में एक और तीन रखा जाए।
- तोपख़ाना पूरी तरह यूरोपीय सैनिकों के हाथ में रहे; भारतीयों को केवल कुछ पहाड़ी तोपख़ाना इकाइयों तक सीमित रखा जाए।
- भारतीय रेजिमेंटों में अलग-अलग जाति, धर्म और इलाक़े के सैनिक मिलाकर रखे जाएँ, ताकि वे एक होकर बग़ावत न कर सकें।
- सामरिक रूप से अहम जगहों, शस्त्रागारों और किलों पर यूरोपीय सैनिकों का नियंत्रण रहे।

इन्हीं सिफ़ारिशों के आधार पर बंगाल सेना की ज़्यादातर पुरानी रेजिमेंटें तोड़ दी गईं और पंजाब से सिखों, पठानों और पंजाबी मुसलमानों की बड़े पैमाने पर भर्ती हुई। सेना में पंजाब के बढ़ते हिस्से की इस प्रक्रिया को इतिहासकार 'पंजाबीकरण' (Punjabisation) कहते हैं।

5.3.9. 1858 से 1895 के बीच के ढाँचागत बदलाव

- **यूरोपीय रेजिमेंटें ताज के अधीन:** कंपनी के अपने गोरे सैनिक अब सीधे ब्रिटिश सेना का हिस्सा बना दिए गए। बहुत से सैनिकों को यह मंज़ूर नहीं था; वे या तो नया भर्ती-भत्ता चाहते थे या घर लौटना। 1859 में उनकी इस नाराज़गी को 'श्वेत विद्रोह' (White Mutiny) का नाम मिला।
- **भारतीय स्टाफ़ कोर (1861):** भारतीय रेजिमेंटों के अंग्रेज़ अफ़सरों के लिए बंगाल, मद्रास और बंबई स्टाफ़ कोर बने, जिससे उनकी नियुक्ति और तरक्क़ी केंद्र के हाथ में आ गई।
- **अनियमित पद्धति:** हर भारतीय रेजिमेंट में अंग्रेज़ अफ़सरों की संख्या घटाकर लगभग छह-सात कर दी गई, और भारतीय अफ़सरों को कंपनी और ट्रूप के स्तर पर ज़्यादा ज़िम्मेदारी दी गई।
- **क्लास कंपनी व्यवस्था:** एक ही रेजिमेंट के भीतर, मान लीजिए, एक कंपनी सिखों की, दूसरी पठानों की और तीसरी डोगरों की होती थी। हर समूह अपनी पहचान के साथ रहता, पर पूरी रेजिमेंट एक होकर सोच न सके, यही इस बँटवारे का मक़सद था।
- **भारतीय शस्त्र अधिनियम (1878):** वायसराय लिटन के समय यह क़ानून आया कि कोई भी भारतीय बिना लाइसेंस के बंदूक़ या तलवार नहीं रख सकता। यूरोपीय लोगों को इस शर्त से बाहर रखा गया। मक़सद साफ़ था: आम जनता के हाथ से हथियार छीन लेना।
- **ईडन आयोग (1879) और एकीकरण (1895):** प्रेसीडेंसी सेनाओं को एक करने की सिफ़ारिश हुई, जो 1895 में लागू हुई और सेना चार कमानों में बँट गई।

5.3.10. सुधारों का समग्र मूल्यांकन

1857 के बाद के सुधारों का असली मक़सद सेना को ज़्यादा कुशल बनाना कम और उसकी **वफ़ादारी पक्की करना** ज़्यादा था। इसीलिए इनमें 'संतुलन और प्रतिसंतुलन' (Balance and Counterpoise) की नीति हावी रही, यानी एक समुदाय के सैनिकों को दूसरे समुदाय के सैनिकों से संतुलित रखना। इन सुधारों ने लगभग आधी सदी तक सेना में कोई बड़ा विद्रोह नहीं होने दिया। पर इनसे समाज में इलाक़े और जाति के बँटवारे भी गहरे हुए और भारतीयों को ऊँचे सैन्य नेतृत्व से दूर

रखा गया। बीसवीं सदी में विश्वयुद्धों और राष्ट्रीय आंदोलन के दबाव से ही इन नीतियों में बदलाव शुरू हुआ।

5.3.11. 1857 के बाद रियासतें और उनकी सेनाएँ

विद्रोह के दौरान ज़्यादातर बड़ी रियासतें, जैसे हैदराबाद, ग्वालियर, पटियाला और जींद, अंग्रेज़ों के साथ खड़ी रहीं। इससे अंग्रेज़ों को समझ आ गया कि रियासतें उनके लिए ख़तरा नहीं, बल्कि सहारा बन सकती हैं। लॉर्ड कैनिंग ने इन्हें 'तूफ़ान के आगे खड़ी दीवार' कहा था। इसी सोच से रियासतों के प्रति नीति बदली। हड़प नीति छोड़ दी गई और 1860 के दशक की शुरुआत में राजाओं को गोद लेने का अधिकार देने वाली सनदें जारी की गईं। अब अंग्रेज़ रियासतों को मिलाने के बजाय उन्हें वफ़ादार सहयोगी बनाकर रखने लगे।

रियासतों की अपनी सेनाएँ भी थीं, पर उन पर कड़ी नज़र रखी जाती थी और उनका आकार सीमित था। 1880 के दशक के आख़िर में लॉर्ड डफ़रिन के समय **इंपीरियल सर्विस ट्रूप्स** योजना शुरू हुई। इसके तहत चुनी हुई रियासतें अपनी कुछ टुकड़ियों को अंग्रेज़ी अफ़सरों की देखरेख में आधुनिक ढंग से प्रशिक्षित करती थीं, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे साम्राज्य की सेवा कर सकें। आगे चलकर इन्हीं टुकड़ियों ने विदेशी मोर्चों पर नाम कमाया। पहले विश्वयुद्ध में हाइफ़ा पर क़ब्ज़ा करने वाले जोधपुर और मैसूर लांसर्स इसी व्यवस्था की देन थे, जिसके बारे में आप अगली इकाई में पढ़ेंगे।

इस तरह 1857 के बाद ब्रिटिश भारत की सैन्य शक्ति के दो हिस्से हो गए: एक ओर सरकार की नियमित भारतीय सेना, और दूसरी ओर रियासतों की वे टुकड़ियाँ जो साम्राज्य के प्रति वफ़ादारी के बदले अपने राजाओं की गद्दी सुरक्षित रखती थीं। आज़ादी के बाद रियासतों के विलय के साथ इनमें से कई टुकड़ियाँ भारतीय सेना में शामिल कर ली गईं।

5.4: अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

1. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था?
2. महारानी विक्टोरिया की घोषणा (1858) में क्या भरोसा दिलाया गया?
3. मार्शल रेस सिद्धांत से आप क्या समझते हैं?
4. विद्रोह के बाद यूरोपीय और भारतीय सैनिकों के अनुपात में क्या बदलाव हुआ?

5. विद्रोह की असफलता के कोई दो कारण बताइए।

5.5: सारांश (Summary)

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था, जिसने अंग्रेज़ी राज की नींव हिला दी। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक-धार्मिक और सैनिक असंतोष लंबे समय से जमा हो रहा था, और चर्बी वाले कारतूसों ने उसे भड़का दिया। मंगल पांडे से लेकर तात्या टोपे तक, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी और हरियाणा के नसीबपुर तक, यह संघर्ष कई मोर्चों पर लड़ा गया। केंद्रीय कमान, साझी रणनीति और पूरे देश के साथ की कमी से विद्रोह हार गया, पर इसके बाद कंपनी राज ख़त्म हुआ और भारत सीधे ताज के अधीन आ गया। इतिहासकार आज भी इसके स्वरूप पर बहस करते हैं। विद्रोह के बाद पील आयोग की सिफ़ारिशों पर सेना का बड़ा पुनर्गठन हुआ: भर्ती की नीति, यूरोपीय-भारतीय अनुपात, तोपख़ाने पर नियंत्रण और मिली-जुली रेजिमेंटें इसके मुख्य अंग थे। इन सुधारों ने आने वाले दशकों तक भारतीय सेना की शक्ल तय की।

5.6: शब्दावली (Key Terminology)

- **विद्रोह** (Revolt / Mutiny) : स्थापित सत्ता के ख़िलाफ़ हथियारबंद प्रतिरोध।
- **सिपाही विद्रोह** (Sepoy Mutiny) : अंग्रेज़ इतिहासकारों का 1857 के विद्रोह के लिए दिया नाम।
- **पहला स्वतंत्रता संग्राम** (First War of Independence) : वी.डी. सावरकर का 1857 के लिए इस्तेमाल किया नाम।
- **हड़प नीति** (Doctrine of Lapse) : गोद लिए बेटे को वारिस न मानकर रियासत मिला लेने की डलहौज़ी की नीति।
- **एनफ़ील्ड राइफ़ल** (Enfield Rifle) : नई राइफ़ल, जिसके कारतूस दाँत से काटने पड़ते थे; विद्रोह का तात्कालिक कारण।
- **जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट (1856, General Service Enlistment Act)** : लॉर्ड कैनिंग का क़ानून, जिसमें नए सिपाहियों को समुद्र पार भी जाना ज़रूरी था।
- **बट्टा** (Field Allowance) : विदेश या ख़ास सेवा का भत्ता, जिसके बंद होने से सिपाही नाराज़ हुए।
- **ताल्लुक़दार** (Taluqdar, Big Landholder) : अवध के बड़े ज़मींदार, जिनकी ज़मीन छिनने से वे विद्रोह में शामिल हुए।

- **अवध का विलय** (Annexation of Awadh) : कुशासन के आरोप में डलहौज़ी द्वारा अवध को अंग्रेज़ी राज में मिलाना।
- **मंगल पांडे** (Sepoy of 34th Bengal Native Infantry) : 34वीं बंगाल नेटिव इन्फ़ैंट्री के सिपाही, जिन्होंने 29 मार्च 1857 को बैरकपुर में विद्रोह किया।
- **रेज़िडेंसी, लखनऊ** (Lucknow Residency) : लखनऊ में अंग्रेज़ रेज़िडेंट का निवास, जिसकी लंबी घेराबंदी हुई।
- **बीबीघर** (Bibighar) : कानपुर का वह भवन जहाँ जुलाई 1857 में बंदी यूरोपीय औरतों और बच्चों की हत्या हुई।
- **नसीबपुर** (Battle of Nasibpur) : 16 नवंबर 1857 को राव तुलाराम की सेना और अंग्रेज़ों के बीच नारनौल के पास लड़ाई।
- **भारत सरकार अधिनियम, 1858** (Government of India Act, 1858) : कंपनी राज ख़त्म करके ताज का शासन लाने वाला क़ानून।
- **महारानी विक्टोरिया की घोषणा** (Queen Victoria's Proclamation) : धर्म में दख़ल न देने और रियासतों के सम्मान का भरोसा देने वाली घोषणा।
- **वायसराय** (Viceroy) : 1858 के बाद भारत में सबसे बड़े अंग्रेज़ प्रशासक का पदनाम।
- **भारत राज्य सचिव** (Secretary of State for India) : 1858 के क़ानून से बना अंग्रेज़ मंत्री, जो भारत के प्रशासन के लिए ज़िम्मेदार था।
- **मार्शल रेस सिद्धांत** (Martial Race Theory) : 'लड़ाकू' माने गए समुदायों को भर्ती में तरजीह देने का सिद्धांत।
- **मिली-जुली रेजिमेंट** (Mixed Regiment) : अलग-अलग जाति और धर्म के सैनिकों से बनी टुकड़ी।
- **पील आयोग** (Peel Commission) : 1858-59 का आयोग, जिसने यूरोपीय-भारतीय अनुपात और मिली-जुली रेजिमेंटों की सिफ़ारिश की।
- **श्वेत विद्रोह** (White Mutiny) : 1859 में कंपनी के यूरोपीय सैनिकों का ताज की सेना में विलय के विरोध में असंतोष।
- **भारतीय स्टाफ़ कोर** (Indian Staff Corps) : 1861 में भारतीय रेजिमेंटों के अंग्रेज़ अफ़सरों के लिए बना संवर्ग।
- **क्लास कंपनी** (Class Company) : रेजिमेंट की वह कंपनी जो एक ही समुदाय के सैनिकों से बनी हो।
- **संतुलन और प्रतिसंतुलन** (Balance and Counterpoise) : एक समुदाय की ताक़त को दूसरे से संतुलित रखने की औपनिवेशिक नीति।

- **भारतीय शस्त्र अधिनियम (1878, Indian Arms Act)** : भारतीयों के बिना लाइसेंस हथियार रखने पर रोक लगाने वाला क़ानून।
- **ईडन आयोग** (Eden Commission) : 1879 का आयोग, जिसने प्रेसीडेंसी सेनाओं को एक करने की सिफ़ारिश की।
- **पंजाबीकरण** (Punjabisation) : 1857 के बाद सेना में पंजाब से भर्ती का बहुत बढ़ जाना।
- **सैन्य सुधार** (Military Reforms) : सेना के संगठन और नीति में किया गया बदलाव।
- **तात्कालिक कारण** (Immediate Cause) : वह घटना जो किसी संघर्ष को तुरंत भड़का दे; 1857 में चर्बी वाले कारतूस।
- **टेलीग्राफ़** (Telegraph) : बिजली से संदेश भेजने की प्रणाली, जिसने विद्रोह दबाने में अंग्रेज़ों की बड़ी मदद की।

5.7: स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. 1857 के विद्रोह के कारणों की विस्तार से विवेचना कीजिए।
2. विद्रोह के बाद भारतीय सेना में हुए सुधारों का वर्णन कीजिए।
3. विद्रोह की सफलता और असफलता के कारणों का मूल्यांकन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. 1857 के विद्रोह के कोई चार परिणाम लिखिए।
2. मार्शल रेस सिद्धांत की मुख्य विशेषताएँ बताइए।
3. महारानी विक्टोरिया की घोषणा की दो मुख्य बातें लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: हर प्रश्न के नीचे चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से सही विकल्प चुनिए।

1. 1857 का विद्रोह कहाँ से शुरू हुआ?

(अ) दिल्ली (ब) मेरठ

(स) कानपुर (द) लखनऊ

2. मेरठ में विद्रोह किस तारीख़ को हुआ?

(अ) 29 मार्च 1857 (ब) 24 अप्रैल 1857

(स) 10 मई 1857 (द) 11 मई 1857

3. मंगल पांडे किस रेजिमेंट में थे?

(अ) 34वीं बंगाल नेटिव इन्फ़ैंट्री

(ब) तीसरी बंगाल लाइट कैवेलरी

(स) 19वीं नेटिव इन्फ़ैंट्री

(द) 47वीं नेटिव इन्फ़ैंट्री

4. मंगल पांडे ने विद्रोह कहाँ किया?

(अ) मेरठ (ब) बैरकपुर

(स) अंबाला (द) दिल्ली

5. विद्रोहियों ने किसे हिंदुस्तान का बादशाह घोषित किया?

(अ) नाना साहेब (ब) बहादुरशाह ज़फ़र

(स) बिरजिस क़द्र (द) कुँवर सिंह

6. हड़प नीति किस गवर्नर-जनरल की थी?

(अ) लॉर्ड वेलेज़ली (ब) लॉर्ड डलहौज़ी

(स) लॉर्ड कैनिंग (द) लॉर्ड बेंटिंक

7. 1857 का तात्कालिक कारण क्या था?

(अ) अवध का विलय

(ब) चर्बी वाले कारतूस

(स) सती प्रथा का अंत

(द) जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट

8. जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट एक्ट किस साल बना?

(अ) 1850 (ब) 1856

(स) 1858 (द) 1861

9. लखनऊ में विद्रोह की अगुवाई किसने की?

(अ) रानी लक्ष्मीबाई (ब) बेगम हज़रत महल

(स) नाना साहेब (द) मौलवी अहमदुल्लाह शाह

10. कानपुर में विद्रोह का नेता कौन था?

(अ) नाना साहेब (ब) कुँवर सिंह

(स) ख़ान बहादुर ख़ान (द) बख़्त ख़ान

11. जगदीशपुर (बिहार) में विद्रोह के नेता कौन थे?

(अ) कुँवर सिंह (ब) तात्या टोपे

(स) लियाक़त अली (द) राव तुलाराम

12. बरेली में विद्रोह किसने चलाया?

(अ) ख़ान बहादुर ख़ान (ब) मौलवी अहमदुल्लाह शाह

(स) बख़्त ख़ान (द) फ़िरोज़ शाह

13. झाँसी पर क़ब्ज़ा करने वाला अंग्रेज़ सेनापति कौन था?

(अ) कॉलिन कैंपबेल (ब) सर ह्यू रोज़

(स) हैवलॉक (द) जॉन निकल्सन

14. हरियाणा में रेवाड़ी के किस नेता ने विद्रोह की अगुवाई की?

(अ) राव तुलाराम (ब) राव गोपालदेव

(स) लाला हुकमचंद (द) नाहर सिंह

15. नसीबपुर की लड़ाई किस साल हुई?

(अ) 1855 (ब) 1857

(स) 1858 (द) 1859

16. बहादुरशाह ज़फ़र को कहाँ भेजा गया?

(अ) अंडमान (ब) रंगून

(स) मॉरीशस (द) सिंगापुर

17. तात्या टोपे को फाँसी कहाँ दी गई?

(अ) ग्वालियर (ब) शिवपुरी

(स) कानपुर (द) झाँसी

18. 1857 को 'पहला स्वतंत्रता संग्राम' किसने कहा?

(अ) आर.सी. मजूमदार (ब) वी.डी. सावरकर

(स) एस.एन. सेन (द) जॉन सीले

19. 'न पहला, न राष्ट्रीय, न स्वतंत्रता संग्राम', यह किसका मत है?

(अ) आर.सी. मजूमदार (ब) एस.एन. सेन

(स) बिपिन चंद्र (द) सावरकर

20. विद्रोह की शताब्दी पर 'एटीन फ़िफ़्टी-सेवन' किसने लिखी?

(अ) एस.एन. सेन (ब) आर.सी. मजूमदार

(स) ताराचंद (द) सुरेंद्रनाथ बनर्जी

21. कंपनी राज किस क़ानून से ख़त्म हुआ?

(अ) चार्टर अधिनियम 1853

(ब) भारत सरकार अधिनियम 1858

(स) भारतीय परिषद अधिनियम 1861

(द) पिट्स इंडिया एक्ट 1784

22. 1858 के बाद गवर्नर-जनरल को और किस नाम से जाना गया?

(अ) राज्य सचिव (ब) वायसराय

(स) कमांडर-इन-चीफ़ (द) रेज़िडेंट

23. पील आयोग के अनुसार बंगाल सेना में यूरोपीय और भारतीय सैनिकों का अनुपात क्या हो?

(अ) एक और एक (ब) एक और दो

(स) एक और तीन (द) एक और पाँच

24. 1857 के बाद तोपख़ाना किसके हाथ में रखा गया?

(अ) भारतीय सैनिक (ब) यूरोपीय सैनिक

(स) रियासतें (द) पुलिस

25. 'श्वेत विद्रोह' किस साल हुआ?

(अ) 1857 (ब) 1859

(स) 1861 (द) 1878

26. भारतीय स्टाफ़ कोर किस साल बना?

(अ) 1858 (ब) 1861

(स) 1879 (द) 1895

27. भारतीय शस्त्र अधिनियम (1878) किस वायसराय के समय बना?

(अ) लॉर्ड लिटन (ब) लॉर्ड रिपन

(स) लॉर्ड कैनिंग (द) लॉर्ड मेयो

28. 'संतुलन और प्रतिसंतुलन' नीति का मक़सद क्या था?

(अ) सेना का आधुनिकीकरण

(ब) समुदायों को एक-दूसरे से संतुलित रखकर विद्रोह रोकना

(स) वेतन बढ़ाना

(द) भारतीय अफ़सर बढ़ाना

29. विद्रोह दबाने में अंग्रेज़ों को किस संचार साधन से सबसे ज़्यादा मदद मिली?

(अ) डाक (ब) टेलीग्राफ़

(स) रेडियो (द) टेलीफ़ोन

30. लॉर्ड कैनिंग ने शांति की औपचारिक घोषणा कब की?

(अ) 20 सितंबर 1857 (ब) 1 नवंबर 1858

(स) 8 जुलाई 1858 (द) 18 अप्रैल 1859

(ब) रिक्त स्थान भरिए

1. मंगल पांडे को _____ 1857 को फाँसी दी गई।

2. मेरठ में _____ बंगाल लाइट कैवेलरी के सवारों ने कारतूस लेने से मना किया।

3. दिल्ली में विद्रोही सेना की कमान _____ ने सँभाली।

4. बेगम हज़रत महल ने अपने बेटे _____ को अवध का नवाब घोषित किया।

5. रानी लक्ष्मीबाई _____ के पास शहीद हुईं।

6. नसीबपुर में अंग्रेज़ अफ़सर कर्नल _____ मारा गया।

7. सावरकर की पुस्तक 'द इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस, 1857' _____ में छपी।

8. महारानी विक्टोरिया की घोषणा _____ में हुई।

9. पील आयोग के अनुसार मद्रास और बंबई सेनाओं में अनुपात _____ होना था।

10. हर कंपनी को अलग समुदाय से बनाने की व्यवस्था _____ कहलाती थी।

(स) सही या गलत बताइए

1. 1857 का विद्रोह मेरठ से शुरू हुआ।

2. पंजाब और दक्षिण भारत विद्रोह के मुख्य केंद्र थे।

3. विद्रोहियों के पास मज़बूत केंद्रीय कमान थी।

4. बहादुरशाह ज़फ़र की मृत्यु रंगून में हुई।

5. विद्रोह के बाद कंपनी राज ख़त्म हुआ।

6. पील आयोग ने तोपख़ाना भारतीयों को सौंपने की सिफ़ारिश की।

7. 1857 के बाद पंजाब से भर्ती बहुत बढ़ी।

8. आर.सी. मजूमदार ने 1857 को पहला राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम माना।

9. भारतीय शस्त्र अधिनियम (1878) यूरोपीयों पर भी बराबर लागू था।

10. हरियाणा में राव तुलाराम ने विद्रोह की अगुवाई की।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. (ब) मेरठ	2. (स) 10 मई 1857	3. (अ) 34वीं बंगाल नेटिव इन्फ़ैंट्री
4. (ब) बैरकपुर	5. (ब) बहादुरशाह ज़फ़र	6. (ब) लॉर्ड डलहौज़ी
7. (ब) चर्बी वाले कारतूस	8. (ब) 1856	9. (ब) बेगम हज़रत महल
10. (अ) नाना साहेब	11. (अ) कुँवर सिंह	12. (अ) ख़ान बहादुर ख़ान
13. (ब) सर ह्यू रोज़	14. (अ) राव तुलाराम	15. (ब) 1857
16. (ब) रंगून	17. (ब) शिवपुरी	18. (ब) वी.डी. सावरकर

19. (अ) आर.सी. मजूमदार	20. (अ) एस.एन. सेन	21. (ब) भारत सरकार अधिनियम 1858
22. (ब) वायसराय	23. (ब) एक और दो	24. (ब) यूरोपीय सैनिक
25. (ब) 1859	26. (ब) 1861	27. (अ) लॉर्ड लिटन
28. (ब) समुदायों को एक-दूसरे से संतुलित रखकर विद्रोह रोकना	29. (ब) टेलीग्राफ़	30. (स) 8 जुलाई 1858

(ब) रिक्त स्थान:

1. 8 अप्रैल	2. तीसरी
3. बख़्त ख़ान	4. बिरजिस क़द्र
5. ग्वालियर	6. जेरार्ड
7. 1909	8. 1858
9. एक और तीन	10. क्लास कंपनी व्यवस्था

(स) सही या गलत:

1. सही	2. गलत	3. गलत	4. सही	5. सही
6. गलत	7. सही	8. गलत	9. गलत	10. सही

5.8: अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1. एनफ़ील्ड राइफ़ल के चर्बी वाले कारतूस।
2. रियासतों की स्वायत्तता बनाए रखने, धर्म में दख़ल न देने और योग्यता के आधार पर बराबर अवसर देने का भरोसा।
3. यह नीति सिख, गोरखा, पठान जैसे समुदायों को 'लड़ाकू' मानकर भर्ती में उन्हें तरजीह देती थी।

4. यूरोपीय सैनिक बढ़ाए गए और अनुपात लगभग एक और दो या एक और तीन तक लाया गया।

5. केंद्रीय नेतृत्व और संगठन की कमी, तथा पूरे देश का साथ न मिलना।

5.9: संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

1. बिपिन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास।

2. आर.सी. मजूमदार, द सिपॉय म्यूटिनी एंड द रिवोल्ट ऑफ़ 1857।

3. एस.एन. सेन, एटीन फ़िफ़्टी-सेवन।

4. वी.डी. सावरकर, भारतीय स्वातंत्र्य समर (1857 का पहला स्वतंत्रता संग्राम)।

5. स्टीफ़न पी. कोहेन, द इंडियन आर्मी: इट्स कॉन्ट्रिब्यूशन टू द डेवलपमेंट ऑफ़ अ नेशन।

6. पर्सिवल स्पीयर, अ हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, खंड 2।

7. भारतीय सेना का आधिकारिक इतिहास, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

Subject: Introduction to Military History	Author: Dr. Mahender Pal
Subject Code: C24MDC108T	Vetter:

इकाई-6

(LESSON-6)

विश्वयुद्धों के दौरान भारतीय सेना

(Indian Army during World Wars)

इकाई की संरचना (Structure)

6.0 उद्देश्य (Learning Objectives)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

6.2 विश्वयुद्धों के दौरान भारतीय सेना (Indian Army during the World Wars)

6.2.1 विश्वयुद्ध का अर्थ

6.2.2 विश्वयुद्धों के कारण

6.2.3 विश्वयुद्धों का असर

6.2.4 विश्वयुद्धों के मुख्य पहलू

6.2.5 विश्वयुद्धों के परिणाम

6.2.6 विश्वयुद्धों में भारतीय सेना की स्थिति

6.2.7 भारतीय सेना के युद्धों के मुख्य कारण

6.2.8 पहले विश्वयुद्ध के मुख्य मोर्चे और भारतीय सेना

6.2.9 दूसरे विश्वयुद्ध के मुख्य मोर्चे और भारतीय सेना

6.2.10 आज़ाद हिन्द फ़ौज

6.2.11 युद्धों का भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर असर

6.2.12 सैनिकों के अपने अनुभव: पत्र, अस्पताल और स्मारक

6.3 भारतीय सेना के सुधार (Reforms of the Indian Army)

6.3.1 सुधार का अर्थ

6.3.2 सेना-सुधार की धारणा

6.3.3 सुधारों के कारण

6.3.4 सुधारों का दायरा

6.3.5 सुधारों के मुख्य पहलू

6.3.6 सुधारों के प्रकार

6.3.7 सुधारों के बाद सेना की स्थिति

6.3.8 भारतीयकरण का क्रमिक इतिहास

6.3.9 वायुसेना और नौसेना का विकास

6.3.10 चैटफ़ील्ड समिति और मशीनीकरण

6.3.11 विश्वयुद्धों से मिली सीख

6.4 अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

6.5 सारांश (Summary)

6.6 शब्दावली (Key Terminology)

6.7 स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

6.8 अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

6.9 संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

6.0: उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थी:

- विश्वयुद्धों की धारणा और उनका स्वरूप समझ सकेंगे।
- दोनों विश्वयुद्धों के कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विश्वयुद्धों के असर और परिणामों की व्याख्या कर सकेंगे।
- विश्वयुद्धों में भारतीय सेना की भूमिका और स्थिति समझ सकेंगे।

- विश्वयुद्धों के बाद सेना में हुए सुधारों का अर्थ, कारण, दायरा, प्रकार और उनकी स्थिति जान सकेंगे।

6.1: प्रस्तावना (Introduction)

बीसवीं सदी के दो विश्वयुद्धों (पहला: 1914 से 1918, दूसरा: 1939 से 1945) ने दुनिया की राजनीति और अर्थव्यवस्था को तो हिलाया ही, भारत और भारतीय सेना के इतिहास में भी ये बड़े मोड़ साबित हुए। ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश (Colony) होने के कारण भारत को दोनों युद्धों में सीधे झोंक दिया गया, जबकि इनसे भारत का अपना कोई हित नहीं जुड़ा था।

लाखों भारतीय सैनिक यूरोप, अफ़्रीका, मध्य-पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया के मोर्चों पर लड़े। जो सेना पहले ज़्यादातर भीतर की सुरक्षा और सीमा के अभियानों तक सिमटी थी, वह अब दुनिया के नक़्शे पर एक बड़ी सैन्य ताक़त के रूप में उभरी। भारतीय सैनिकों की बहादुरी, बलिदान और पेशेवर हुनर की हर जगह तारीफ़ हुई।

इन युद्धों ने यह भी दिखा दिया कि सेना को आधुनिक बनाना और नए सिरे से गढ़ना ज़रूरी है। युद्धों के बाद ढाँचे, तकनीक और प्रशासन में कई सुधार हुए, जिन पर आगे चलकर आज़ाद भारत की राष्ट्रीय सेना खड़ी हुई।

इस पाठ में हम विश्वयुद्धों की धारणा, उनके कारण, असर और परिणाम, उनमें भारतीय सेना की भूमिका और बाद के सैन्य सुधारों को विस्तार से समझेंगे।

6.2: विश्वयुद्धों के दौरान भारतीय सेना (Indian Army during the World Wars)

भारतीय सैनिक इन लड़ाइयों में क्यों और कैसे उतरे, यह समझने के लिए पहले युद्धों की पृष्ठभूमि देखनी होगी: ये कैसे शुरू हुए, किन ताक़तों के बीच लड़े गए और दुनिया पर इनका क्या असर हुआ।

6.2.1. विश्वयुद्ध का अर्थ

विश्वयुद्ध उस बड़े सैन्य संघर्ष को कहते हैं जिसमें दुनिया के ज़्यादातर बड़े देश या ताक़तवर गुट सीधे या परोक्ष रूप से शामिल हों और लड़ाई एक साथ कई महाद्वीपों में फैली हो। बीसवीं सदी में ऐसे दो युद्ध हुए। **पहला विश्वयुद्ध (1914 से 1918)** मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, फ़्रांस, रूस आदि, Allied Powers) और केंद्रीय शक्तियों (जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, उस्मानी साम्राज्य आदि) के बीच लड़ा गया। **दूसरा**

विश्वयुद्ध (1939 से 1945) मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, अमेरिका, सोवियत संघ आदि) और धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली, जापान, Axis Powers) के बीच हुआ।

दोनों बार भारत ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा होने के कारण अपने-आप मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया।

6.2.2. विश्वयुद्धों के कारण

पहले विश्वयुद्ध के कारण

- यूरोपीय देशों का उग्र राष्ट्रवाद (Nationalism) और साम्राज्य फैलाने की होड़।
- सैन्यवाद और हथियार जुटाने की दौड़।
- गठबंधनों का ऐसा जाल, जिसमें छोटा झगड़ा भी बड़ी लड़ाई बन जाए।
- ऑस्ट्रिया के युवराज फ़्रांज़ फ़र्डिनांड की साराजेवो में हत्या (1914), जो तात्कालिक कारण (Immediate Cause) बनी।

दूसरे विश्वयुद्ध के कारण

- पहले युद्ध के बाद की वर्साय संधि से जर्मनी में पनपा गुस्सा।
- हिटलर और नाज़ीवाद का उदय तथा उसकी आक्रामक विस्तार-नीति।
- राष्ट्र संघ का नाकाम होना।
- 1939 में जर्मनी का पोलैंड पर हमला, जो तात्कालिक कारण बना।

6.2.3. विश्वयुद्धों का असर

1. **जान का नुक़सान:** दोनों युद्धों में करोड़ों सैनिक और नागरिक मारे गए, जिनमें लाखों भारतीय सैनिक भी थे।

2. **आर्थिक बोझ:** भारत की अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव पड़ा; कर और महँगाई दोनों बढ़े।

3. **राजनीतिक जागरूकता:** युद्ध में गए सैनिकों और आम लोगों में आज़ादी की भावना तेज़ हुई।

4. **सेना का आधुनिकीकरण (Modernisation):** भारतीय सेना को नए हथियार, तकनीक और प्रशिक्षण मिला।

5. **अंतरराष्ट्रीय पहचान:** भारतीय सैनिकों की बहादुरी को दुनिया भर में मान्यता मिली।

6.2.4. विश्वयुद्धों के मुख्य पहलू

1. **दुनिया भर में फैलाव:** लड़ाई यूरोप से निकलकर अफ़्रीका, मध्य-पूर्व, एशिया और प्रशांत महासागर तक पहुँची।

2. **औद्योगिक युद्ध:** टैंक, विमान, पनडुब्बी, रासायनिक हथियार और आख़िर में परमाणु बम तक इस्तेमाल हुए।

3. **बड़े पैमाने पर लामबंदी (Mobilisation):** लड़ने वाले देशों ने अपने उपनिवेशों से भी सैनिक और संसाधन जुटाए।

4. **भारतीय सैनिक हर मोर्चे पर:** फ़्रांस, मेसोपोटामिया, पूर्वी अफ़्रीका, बर्मा, उत्तरी अफ़्रीका, इटली और कई दूसरी जगहों पर भारतीय सैनिक भेजे गए।

5. **संसाधनों की निकासी:** भारत से अनाज, कच्चा माल और पैसा भी बड़े पैमाने पर लिया गया।

6.2.5. विश्वयुद्धों के परिणाम

1. **साम्राज्यवाद (Imperialism) का पतन:** यूरोपीय औपनिवेशिक ताक़तें कमज़ोर हुईं और उपनिवेशों के आज़ादी आंदोलन मज़बूत हुए।

2. **अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ:** शांति बनाए रखने के लिए पहले राष्ट्र संघ (1920) और फिर संयुक्त राष्ट्र (1945) बने।

3. **भारत में राजनीतिक जागृति:** युद्ध में दिए योगदान के बदले स्वशासन की माँग तेज़ हुई, जिसने आज़ादी के आंदोलन को गति दी।

4. **आज़ाद हिन्द फ़ौज:** दूसरे युद्ध के दौरान नेताजी सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में यह फ़ौज बनी।

5. **सेना का आधुनिकीकरण:** युद्ध के बाद भारतीय सेना में बड़े सुधार और पुनर्गठन (Reorganisation) शुरू हुए।

6.2.6. विश्वयुद्धों में भारतीय सेना की स्थिति

पहले विश्वयुद्ध में

लगभग तेरह लाख भारतीयों ने इस युद्ध में हिस्सा लिया। उन्हें फ़्रांस और बेल्जियम के पश्चिमी मोर्चे, मेसोपोटामिया, पूर्वी अफ़्रीका और गैलीपोली जैसे मोर्चों पर लगाया गया। हज़ारों सैनिक शहीद हुए और कई को विक्टोरिया क्रॉस जैसा सर्वोच्च सम्मान मिला। भारतीयों को उम्मीद थी कि इस सेवा के बदले उन्हें स्वशासन मिलेगा, पर 1919 के रॉलेट एक्ट और जलियाँवाला बाग़ हत्याकांड ने इस उम्मीद को गहरी चोट दी।

दूसरे विश्वयुद्ध में

लगभग पच्चीस लाख भारतीयों ने इस युद्ध में हिस्सा लिया, और यह इतिहास की सबसे बड़ी स्वैच्छिक सेना थी। भारतीय सैनिकों ने उत्तरी अफ़्रीका, इटली, बर्मा, मध्य-पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया में बहादुरी दिखाई। इसी दौरान सुभाषचंद्र बोस ने जापान की मदद से आज़ाद हिन्द फ़ौज खड़ी की, जिसमें बहुत से भारतीय युद्धबंदी (Prisoners of War) सैनिक शामिल हुए। युद्ध के बाद इस फ़ौज के सैनिकों पर चले लाल किले के मुक़दमों ने पूरे देश में राष्ट्रीय भावना जगा दी।

6.2.7. भारतीय सेना के युद्धों के मुख्य कारण

विश्वयुद्धों में भारतीय सेना जिन मोर्चों पर लड़ी, उनके पीछे की वजहें संक्षेप में ये थीं: उपनिवेश होने के कारण ब्रिटिश साम्राज्य के लिए लड़ने की मजबूरी, मित्र राष्ट्रों के गठबंधन के प्रति प्रतिबद्धता, साम्राज्यवादी ताक़तों के इलाक़ाई और औपनिवेशिक हितों का टकराव, दुनिया के व्यापार-मार्गों और संसाधनों पर क़ब्ज़े की होड़, और राष्ट्रवाद, सैन्यवाद तथा गठबंधनों जैसे गहरे ढाँचागत कारण।

6.2.8. पहले विश्वयुद्ध के मुख्य मोर्चे और भारतीय सेना

(क) पश्चिमी मोर्चा (फ़्रांस और बेल्जियम)

युद्ध शुरू हुए दो महीने भी नहीं बीते थे कि सितंबर-अक्टूबर 1914 में लाहौर और मेरठ डिवीज़नों वाली **भारतीय कोर** जहाज़ों से मार्सेई पहुँच गई। अंग्रेज़ी सेना उस समय भारी क्षति उठा चुकी थी और मोर्चे में दरारें पड़ रही थीं; भारतीय सैनिकों ने आते ही उन दरारों को भरा। यहाँ की लड़ाई को खाई युद्ध (Trench Warfare) कहा जाता है, क्योंकि दोनों सेनाएँ ज़मीन में खोदी गई लंबी खाइयों में आमने-सामने बैठी रहती थीं। सैनिकों को ऐसी सर्दी, ऐसे कीचड़, मशीनगनों की ऐसी बौछार और ज़हरीली

गैस जैसी चीज़ का पहले कोई अनुभव नहीं था। फिर भी वाईप्रेस, फ़ेस्टुबर्ट, न्यूव शैपेल (मार्च 1915) और लूस में वे पीछे नहीं हटे।

इसी मोर्चे पर भारत को पहला विक्टोरिया क्रॉस मिला। अक्टूबर 1914 के आख़िर में बेल्जियम के वाईप्रेस इलाक़े में 129वीं बलूची के **ख़ुदादाद ख़ान** अपनी मशीनगन पर अकेले डटे रहे, जबकि उनके साथी एक-एक कर गिरते गए। गढ़वाल राइफ़ल्स के दो नेगी भी इस सम्मान से जुड़े: नायक **दरवान सिंह नेगी** ने नवंबर 1914 में इसे जीता, और राइफ़लमैन **गब्बर सिंह नेगी** को न्यूव शैपेल की लड़ाई के बाद मरणोपरांत (Posthumously) दिया गया। 1915 के अंत तक भारतीय पैदल डिवीज़नें फ़्रांस छोड़कर मेसोपोटामिया चली गईं; घुड़सवार दस्ते 1918 तक वहीं रहे।

(ख) मेसोपोटामिया (आज का इराक़)

मेसोपोटामिया का अभियान (Campaign) लगभग पूरी तरह भारतीय सेना ने लड़ा। शुरुआती सफलता के बाद जनरल टाउनशेंड की छठी (पूना) डिवीज़न बग़दाद की ओर बढ़ी, पर हारकर **कूट-अल-अमारा** में घिर गई। लगभग पाँच महीने (दिसंबर 1915 से अप्रैल 1916) की घेराबंदी (Siege) के बाद भूख और बीमारी से टूटी इस सेना को हथियार डालने पड़े। बाद में नए सिरे से गठित सेना ने जनरल मॉड के नेतृत्व में मार्च 1917 में **बग़दाद** पर क़ब्ज़ा कर लिया।

(ग) गैलीपोली, पूर्वी अफ़्रीका और फ़िलिस्तीन

तुर्की के गैलीपोली प्रायद्वीप पर 1915 में 14वीं सिख और गोरखा पलटनों ने खड़ी चट्टानों पर चढ़कर लड़ाई लड़ी। पूर्वी अफ़्रीका में शुरुआत बुरी रही; नवंबर 1914 में टांगा पर हमला नाकाम हुआ, पर बाद के वर्षों में भारतीय टुकड़ियाँ जर्मन पूर्वी अफ़्रीका के जंगलों में लंबे अभियान में लगी रहीं। सबसे रोमांचक कहानी फ़िलिस्तीन की है। 23 सितंबर 1918 को जोधपुर और मैसूर लांसर्स ने, जिनके हाथ में भाले और तलवारें भर थीं, मशीनगनों वाली तुर्की-जर्मन चौकियों पर घोड़े दौड़ा दिए और **हाइफ़ा** शहर छीन लिया। इस हमले में मेजर दलपत सिंह शहीद हुए, जिन्हें 'हाइफ़ा का नायक' कहा जाता है। भारतीय सेना इसी तारीख़ को हाइफ़ा दिवस मनाती है, और दिल्ली के तीन मूर्ति चौक की प्रतिमाएँ इन्हीं घुड़सवारों की याद दिलाती हैं।

(घ) पहले विश्वयुद्ध में भारत का योगदान: एक नज़र में

- लगभग तेरह लाख भारतीयों ने सैनिक और सहायक कर्मियों के रूप में सेवा दी, जिनमें से लगभग 74,000 शहीद हुए।

- सैनिकों के अलावा पैसा और सामान भी भारत से गया। लगभग दस करोड़ पाउंड की रक़म ब्रिटेन को 'भेंट' के तौर पर दी गई, और अनाज, कपड़े, घोड़ों तथा युद्ध के दूसरे सामान से भरे जहाज़ लगातार रवाना होते रहे।
- दिल्ली में राजपथ के छोर पर खड़ा **इंडिया गेट** इन्हीं शहीदों का स्मारक है। एडविन लुटियंस के बनाए इस मेहराब पर उन भारतीय सैनिकों के नाम खुदे हैं जो पहले विश्वयुद्ध और तीसरे अफ़गान युद्ध में मारे गए।

6.2.9. दूसरे विश्वयुद्ध के मुख्य मोर्चे और भारतीय सेना

दूसरा युद्ध शुरू होते ही, सितंबर 1939 में, वायसराय (Viceroy) लिनलिथगो ने एक घोषणा से भारत को भी युद्ध में खड़ा कर दिया; किसी भारतीय नेता से राय तक नहीं ली गई। नाराज़ कांग्रेस ने प्रांतों की अपनी सरकारों से इस्तीफ़ा दिलवा दिया। इसके बावजूद भर्ती (Recruitment) केंद्रों पर भीड़ कम नहीं हुई। युद्ध शुरू होते समय सेना में क़रीब दो लाख जवान थे; अंत तक यह गिनती पच्चीस लाख के आसपास पहुँच गई। इस युद्ध ने लगभग 87,000 भारतीय सैनिकों की जान ली।

मोर्चा	समय	भारतीय सेना की भूमिका
पूर्वी अफ़्रीका (केरेन, इरिट्रिया)	1941	चौथी और पाँचवीं भारतीय डिवीज़नों ने इतालवी सेना को हराया
उत्तरी अफ़्रीका	1940 से 1943	सीदी बर्रानी, टोब्रुक और अल-अलामीन में चौथी भारतीय डिवीज़न आगे रही
मध्य-पूर्व	1941	इराक़, सीरिया और ईरान में अभियान
मलाया और सिंगापुर	1941 से 1942	जापानी हमले के सामने हार; फ़रवरी 1942 में बहुत से भारतीय सैनिक युद्धबंदी बने
इटली	1943 से 1945	चौथी, आठवीं और दसवीं भारतीय डिवीज़न; मोंटे कैसिनो की लड़ाई (1944)
बर्मा और पूर्वोत्तर भारत	1942 से 1945	अराकान, इम्फाल-कोहिमा (1944), मेकतिला और मांडले (1945); रंगून फिर से जीता

इम्फाल और कोहिमा की लड़ाइयाँ (मार्च से जुलाई 1944) एशिया के मोर्चे पर दूसरे विश्वयुद्ध का निर्णायक मोड़ थीं। जापानी सेना ने भारत में घुसकर इम्फाल और कोहिमा को घेर लिया था। जनरल

विलियम स्लिम की 14वीं सेना ने, जिसके ज़्यादातर सैनिक भारतीय थे, हवाई रास्ते से रसद (Logistics) पाते हुए डटकर मुक़ाबला किया और जापानियों को भारी नुक़सान के साथ पीछे धकेल दिया। ब्रिटेन के राष्ट्रीय सेना संग्रहालय के एक सर्वेक्षण में इन लड़ाइयों को ब्रिटेन की 'सबसे बड़ी लड़ाइयों' में गिना गया।

6.2.10. आज़ाद हिन्द फ़ौज

आज़ाद हिन्द फ़ौज की कहानी हार से शुरू होती है। फ़रवरी 1942 में सिंगापुर जापान के हाथ गया, और हज़ारों भारतीय सैनिक युद्धबंदी बन गए। इन्हीं में से कैप्टन **मोहन सिंह** ने पहली बार एक भारतीय राष्ट्रीय सेना खड़ी करने का बीड़ा उठाया। जापान में बरसों से रह रहे पुराने क्रांतिकारी **रासबिहारी बोस** ने इंडियन इंडिपेंडेंस लीग बनाकर इसे राजनीतिक आधार दिया। पर जापानियों से तालमेल नहीं बैठा, और साल ख़त्म होते-होते मोहन सिंह गिरफ़्तार हो गए तथा फ़ौज लगभग बिखर गई।

फ़ौज में नई जान तब आई जब जुलाई 1943 में **सुभाषचंद्र बोस** पनडुब्बी से लंबी यात्रा करके सिंगापुर पहुँचे। उन्होंने बिखरे सैनिकों को फिर से जोड़ा और ख़ुद सर्वोच्च सेनापति बने। 21 अक्टूबर 1943 को सिंगापुर में **आज़ाद हिन्द की अस्थायी सरकार** (Provisional Government) का एलान हुआ। 'दिल्ली चलो', 'जय हिन्द' और 'तुम मुझे ख़ून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा', ये नारे इसी दौर से निकले और पूरे देश में गूँजे। ब्रिगेडों को गांधी, नेहरू, आज़ाद और सुभाष के नाम दिए गए, और कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन (बाद में सहगल) ने औरतों की **रानी झाँसी रेजिमेंट** की कमान सँभाली।

1944 के इम्फाल-कोहिमा अभियान में आज़ाद हिन्द फ़ौज जापानियों के साथ भारत की सीमा में दाख़िल हुई। 14 अप्रैल 1944 को मणिपुर के मोइरांग में पहली बार भारत की धरती पर इस फ़ौज का तिरंगा लहराया। लेकिन जापानी आक्रमण टूटा, रसद ख़त्म हुई और बारिश ने रास्ते बंद कर दिए, तो फ़ौज को भी लौटना पड़ा। इससे पहले अंडमान और निकोबार को आज़ाद हिन्द सरकार ने 'शहीद' और 'स्वराज' द्वीप नाम दिए थे।

युद्ध के बाद नवंबर 1945 में दिल्ली के लाल किले में फ़ौज के तीन अफ़सरों, **शाहनवाज़ ख़ान, प्रेम कुमार सहगल और गुरबख़्श सिंह ढिल्लों**, पर मुक़दमा चला। भूलाभाई देसाई, जवाहरलाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू और आसफ़ अली ने उनकी पैरवी की। इन मुक़दमों ने हिंदू, मुसलमान और सिख, तीनों को एक साथ खड़ा कर दिया और देश भर में व्यापक जन-आक्रोश उठा। दबाव में कमांडर-इन-चीफ़ ऑकिनलेक को उनकी सज़ाएँ माफ़ करनी पड़ीं। इतिहासकार मानते हैं कि इन मुक़दमों और

1946 के नौसेना विद्रोह (Revolt) ने अंग्रेज़ों को समझा दिया कि अब भारतीय सेना पर पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता।

6.2.11. युद्धों का भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर असर

युद्ध का ख़र्च, बढ़े हुए कर और महँगाई आम लोगों पर भारी पड़े। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान 1943 का **बंगाल का अकाल** इसका सबसे दर्दनाक नतीजा था, जिसमें लाखों लोग मारे गए। दूसरी ओर युद्ध के सामान की माँग से भारत में कपड़ा, इस्पात, सीमेंट और रसायन उद्योग फैले। विदेश में लड़कर लौटे सैनिक नए विचारों और जीवन-शैली से परिचित हो चुके थे, जिससे गाँवों तक जागरूकता पहुँची। राजनीति में भी हलचल रही: पहले युद्ध के बाद होमरूल आंदोलन, रॉलेट सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन हुए, और दूसरे युद्ध के बीच 1942 का **भारत छोड़ो आंदोलन**।

6.2.12. सैनिकों के अपने अनुभव: पत्र, अस्पताल और स्मारक

पहले विश्वयुद्ध में फ़्रांस गए भारतीय सैनिकों के लिए सब कुछ नया था: बर्फ़ीली सर्दी, अनजानी भाषा, खाइयों का कीचड़ और मशीनगनों की लगातार गोलाबारी। ये सैनिक अपने घर चिट्ठियाँ लिखते थे, ज़्यादातर पढ़े-लिखे साथियों से लिखवाकर। अंग्रेज़ी सेंसर विभाग इन चिट्ठियों को पढ़कर उनके अंश दर्ज करता था। इन्हीं दर्ज अंशों से आज हम जान पाते हैं कि सैनिक क्या सोचते थे। इनमें घर की याद, मौसम की तकलीफ़, साथियों की मौत का दुख, और फ़्रांस के लोगों के अच्छे व्यवहार की तारीफ़, सब कुछ मिलता है।

घायल भारतीय सैनिकों के इलाज के लिए इंग्लैंड के ब्राइटन शहर में कई अस्पताल बनाए गए, जिनमें शाही रॉयल पैवेलियन भवन भी शामिल था। सैनिकों के धर्म और खान-पान का ध्यान रखते हुए वहाँ अलग रसोई और प्रार्थना की जगहें बनाई गईं। जिन हिंदू और सिख सैनिकों की वहाँ मृत्यु हुई, उनका अंतिम संस्कार ब्राइटन के पास की पहाड़ियों पर किया गया, जहाँ आज 'छतरी' नाम का स्मारक खड़ा है।

फ़्रांस में न्यूव शैपेल का भारतीय स्मारक और दिल्ली का इंडिया गेट उन हज़ारों सैनिकों की याद दिलाते हैं जिनकी क़ब्रें कहीं नहीं हैं। लंबे समय तक भारत में इन सैनिकों को उतना याद नहीं किया गया जितना उन्होंने कमाया था, क्योंकि उनकी सेवा एक विदेशी साम्राज्य के लिए थी। पिछले कुछ दशकों में इतिहासकारों ने इनकी कहानियों को फिर से सामने लाने का काम किया है, और अब इन्हें भारत के सैन्य इतिहास (Military History) का एक गौरवशाली, पर पीड़ा भरा, अध्याय माना जाता है।

6.3: भारतीय सेना के सुधार (Reforms of the Indian Army)

विश्वयुद्धों के अनुभवों ने साफ़ कर दिया कि सेना को आधुनिक बनाना और नए सिरे से गढ़ना ज़रूरी है। युद्धों के बाद ढाँचे, तकनीक और प्रशासन में कई सुधार हुए, जिन्होंने आज़ाद भारत की सेना की पृष्ठभूमि तैयार की।

6.3.1. सुधार का अर्थ

सुधार का अर्थ है किसी व्यवस्था, संस्था या नीति में ऐसा बदलाव जिससे वह ज़्यादा असरदार, आधुनिक और समय के अनुकूल बने। सेना के संदर्भ में इसका मतलब है संगठन, प्रशिक्षण, हथियार, अफ़सरों की भर्ती और प्रशासन में ऐसे बदलाव जिनसे सेना ज़्यादा सक्षम, आधुनिक और आत्मनिर्भर बने।

6.3.2. सेना-सुधार की धारणा

विश्वयुद्धों के बाद के सुधार इस सोच पर टिके थे कि युद्ध के असली अनुभवों के आधार पर सेना को आधुनिक तकनीक, बेहतर प्रशिक्षण और भारतीयकरण (Indianisation) की ओर ले जाया जाए। इसमें सबसे अहम माँग थी भारतीयों को अफ़सर बनाना, क्योंकि अब तक यह पांत लगभग पूरी तरह यूरोपीयों की थी।

6.3.3. सुधारों के कारण

1. युद्ध के अनुभवों से सामने आई सेना की कमियों को दूर करना।
2. आधुनिक तकनीक और मशीनी युद्ध-पद्धति को अपनाना।
3. भारतीय सैनिकों के योगदान और बलिदान के अनुरूप उन्हें सही प्रतिनिधित्व और सम्मान देना।
4. राष्ट्रीय आंदोलन के दबाव में सेना के भारतीयकरण की शुरुआत करना।
5. आगे की सुरक्षा चुनौतियों के लिए सेना को ज़्यादा सक्षम और आत्मनिर्भर बनाना।

6.3.4. सुधारों का दायरा

सुधारों में सेना का संगठन और प्रशासन, अफ़सरों के रूप में भारतीयों की भर्ती और प्रशिक्षण, आधुनिक हथियार और मशीनीकरण (टैंक, वायुसेना, संचार-तंत्र, Mechanisation), सैन्य शिक्षा संस्थान (जैसे 1932 में देहरादून की भारतीय सैन्य अकादमी), और सेना का वित्त तथा रसद, ये सब शामिल थे।

6.3.5. सुधारों के मुख्य पहलू

1. **भारतीयकरण:** भारतीयों को धीरे-धीरे अफ़सर पदों पर रखा जाने लगा; 1932 में देहरादून में भारतीय सैन्य अकादमी बनी।

2. **आधुनिक हथियार:** पुराने हथियारों की जगह टैंक, आधुनिक तोपख़ाना (Artillery) और विमान आए।

3. **वायुसेना और नौसेना का विकास:** भारतीय वायुसेना और रॉयल इंडियन नेवी का विस्तार हुआ।

4. **प्रशिक्षण में सुधार:** युद्ध के अनुभवों के आधार पर आधुनिक युद्ध-कौशल और तकनीकी शिक्षा पर ज़ोर दिया गया।

5. **संगठन का पुनर्गठन:** पैदल सेना (Infantry), तोपख़ाना, इंजीनियर कोर जैसी शाखाओं को नए सिरे से गढ़ा और आधुनिक बनाया गया।

6.3.6. सुधारों के प्रकार

संगठन से जुड़े सुधार सेना की बनावट और कमान बदलने वाले थे। **तकनीक और हथियारों से जुड़े सुधारों** में आधुनिक हथियार, टैंक और विमान आए। **भर्ती और भारतीयकरण से जुड़े सुधारों** ने भारतीयों के लिए अफ़सर बनने का रास्ता खोला। **शिक्षा और प्रशिक्षण से जुड़े सुधारों** में सैन्य शिक्षा संस्थान बने और आधुनिक प्रशिक्षण अपनाया गया। **प्रशासनिक और वित्तीय सुधारों** ने सेना के प्रबंधन, रसद और वित्त को सुधारा।

6.3.7. सुधारों के बाद सेना की स्थिति

इन सुधारों के बाद भारतीय सेना एक आधुनिक, मशीनी और प्रशिक्षित सेना के रूप में विकसित हुई। भारतीयकरण धीमा था पर रुका नहीं; आज़ादी तक भारतीय अफ़सरों की संख्या काफ़ी बढ़ चुकी थी। थल सेना, वायुसेना और नौसेना, तीनों का अलग और संगठित विकास हुआ। यही आधुनिक और अनुभवी सेना आज़ादी के बाद भारत की राष्ट्रीय सेना का आधार बनी, और विश्वयुद्धों के अनुभव ने उसे दुनिया भर में एक पेशेवर और सक्षम सेना के रूप में पहचान दिलाई।

6.3.8. भारतीयकरण का क्रमिक इतिहास

सेना के अफ़सरों का भारतीयकरण धीमी और संघर्ष भरी प्रक्रिया थी। नीचे की सारणी इसे क्रम से दिखाती है:

वर्ष	मुख्य घटना
1917	मॉन्टेग्यू घोषणा के बाद भारतीयों को किंग्स कमीशन का हक़दार माना गया
1918	इंग्लैंड के सैंडहर्स्ट में भारतीयों के लिए हर साल दस जगहें; इंदौर में अस्थायी कैडेट कॉलेज
1919	इंदौर से पहले भारतीय अफ़सरों को किंग्स कमीशन (इनमें के.एम. करियप्पा भी थे)
1922	देहरादून में प्रिंस ऑफ़ वेल्स रॉयल इंडियन मिलिट्री कॉलेज (आज का राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज)
1923	'आठ इकाई योजना': भारतीय अफ़सर केवल आठ इकाइयों में रखे गए
1925-26	स्कीन समिति (इंडियन सैंडहर्स्ट कमेटी) ने भारत में सैन्य अकादमी की सिफ़ारिश की
1931	चेटवुड समिति की सिफ़ारिशें
1 अक्टूबर 1932	भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून का उद्घाटन
1932	भारतीय वायुसेना की स्थापना (8 अक्टूबर)
1934	रॉयल इंडियन मरीन बनी रॉयल इंडियन नेवी
1939 से 1945	युद्ध की ज़रूरतों से भारतीय अफ़सरों की संख्या में तेज़ बढ़ोतरी

अकादमी से निकले पहले बैच को 'पायनियर्स' कहा गया, और इस बैच के कई नाम इतिहास में दर्ज हुए। सैम मानेकशॉ भारत के पहले फ़ील्ड मार्शल बने। उसी बैच के मुहम्मद मूसा आगे चलकर पाकिस्तान के और स्मिथ डन बर्मा के सेना-प्रमुख बने।

आठ इकाई योजना के पीछे की सोच को राष्ट्रवादियों ने तुरंत पकड़ लिया: भारतीय अफ़सरों को कुछ पलटनों में अलग रखो, ताकि किसी अंग्रेज़ को कभी भारतीय की कमान में काम न करना पड़े। इसी नाराज़गी के माहौल में स्कीन समिति बनी, जिसमें मोतीलाल नेहरू और मुहम्मद अली जिन्ना भी शामिल थे।

6.3.9. वायुसेना और नौसेना का विकास

भारतीय वायुसेना 8 अक्टूबर 1932 को बनी। इसकी पहली उड़ान, यानी नंबर 1 स्क्वाड्रन की पहली टुकड़ी, 1 अप्रैल 1933 को तैयार हुई, जिसमें केवल छह अफ़सर और कुछ वायुसैनिक थे। दूसरे विश्वयुद्ध में, ख़ासकर बर्मा अभियान में, शानदार सेवा के लिए 1945 में इसे 'रॉयल' उपाधि मिली और यह रॉयल इंडियन एयर फ़ोर्स कहलाई। हर साल 8 अक्टूबर को **वायुसेना दिवस** मनाया जाता है।

नौसेना का इतिहास और भी पुराना है। इसकी शुरुआत 1612 में ईस्ट इंडिया कंपनी के छोटे जंगी जहाज़ों से मानी जाती है, जो आगे बॉम्बे मरीन और फिर रॉयल इंडियन मरीन कहलाए। 1934 में इसे पूरी नौसेना का दर्जा मिला और नाम हुआ **रॉयल इंडियन नेवी**। दूसरे युद्ध में इसके जहाज़ों की संख्या तेज़ी से बढ़ी, और ये अटलांटिक से भूमध्य सागर और बंगाल की खाड़ी तक मालवाहक जहाज़ों की रक्षा और तटीय हमलों में लगे रहे।

6.3.10. चैटफ़ील्ड समिति और मशीनीकरण

दूसरे विश्वयुद्ध से पहले भारतीय सेना आधुनिक युद्ध के लिए ठीक से तैयार नहीं थी। 1938-39 में लॉर्ड **चैटफ़ील्ड** की अध्यक्षता में बनी समिति ने इसके आधुनिकीकरण की सिफ़ारिश की। इसके बाद घुड़सवार रेजिमेंटों में घोड़ों की जगह बख़्तरबंद गाड़ियाँ और टैंक आने लगे, पैदल सेना को मोटर-गाड़ियाँ मिलीं और तोपख़ाना आधुनिक हुआ। इस आधुनिकीकरण का ज़्यादातर ख़र्च ब्रिटिश सरकार ने उठाया, क्योंकि भारतीय सेना को साम्राज्य की रक्षा में लगना था।

6.3.11. विश्वयुद्धों से मिली सीख

विश्वयुद्धों ने कई सबक़ दिए। आधुनिक युद्ध में पैदल सेना, तोपख़ाना, टैंक और वायुसेना का आपसी तालमेल ज़रूरी है; इस मिले-जुले प्रयोग को संयुक्त शस्त्र (Combined Arms) की पद्धति कहा जाता

है। रसद और आपूर्ति युद्ध का नतीजा तय कर देती है, और इम्फाल-कोहिमा में हवाई रास्ते से पहुँचाई गई रसद इसका उदाहरण है। जंगल, पहाड़ और रेगिस्तान जैसी अलग-अलग ज़मीनों पर लड़ने के लिए ख़ास प्रशिक्षण चाहिए। और आख़िर में, सैनिकों का मनोबल (Morale), नेतृत्व का स्तर और राष्ट्रीय लक्ष्य से जुड़ाव ही किसी सेना की असली ताक़त है।

इन्हीं अनुभवों से तपी भारतीय सेना ने आज़ादी के तुरंत बाद 1947-48 के जम्मू-कश्मीर अभियान में अपनी पेशेवर क्षमता का परिचय दिया।

6.4: अपनी प्रगति जाँचिए (Check Your Progress)

1. पहला और दूसरा विश्वयुद्ध किन वर्षों में लड़े गए?
2. पहले विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?
3. दूसरे विश्वयुद्ध में कितने भारतीय सैनिकों ने हिस्सा लिया?
4. आज़ाद हिन्द फ़ौज की कमान किसने सँभाली?
5. भारतीयकरण से आप क्या समझते हैं?

6.5: सारांश (Summary)

बीसवीं सदी के दोनों विश्वयुद्धों ने भारत और भारतीय सेना के इतिहास पर गहरी छाप छोड़ी। उपनिवेश होने के कारण भारत को इन युद्धों में उतरना पड़ा और लाखों भारतीय सैनिकों ने फ़्रांस, मेसोपोटामिया, हाइफ़ा, केरेन, अल-अलामीन, मोंटे कैसिनो और इम्फाल-कोहिमा जैसे मोर्चों पर बहादुरी दिखाई। इन युद्धों ने भारतीय सेना को दुनिया भर में पहचान दिलाई, पर साथ ही बंगाल के अकाल जैसा दर्द भी दिया और लोगों में आज़ादी की चाह को और तेज़ किया। दूसरे युद्ध में बनी आज़ाद हिन्द फ़ौज और लाल किले के मुक़दमे इसी चेतना का सबूत थे। युद्धों के बाद सेना में बड़े सुधार हुए: आठ इकाई योजना से भारतीय सैन्य अकादमी तक भारतीयकरण का सफ़र, वायुसेना और नौसेना का विकास, और चैटफ़ील्ड समिति के बाद मशीनीकरण। इन्हीं सुधारों ने आज़ाद भारत की राष्ट्रीय सेना की मज़बूत नींव रखी।

6.6: शब्दावली (Key Terminology)

- **विश्वयुद्ध** (World War) : दुनिया के ज़्यादातर बड़े देशों को शामिल करने वाला बड़ा सैन्य संघर्ष।
- **मित्र राष्ट्र** (Allied Powers) : दोनों विश्वयुद्धों में ब्रिटेन, फ़्रांस आदि का गठबंधन।
- **धुरी राष्ट्र** (Axis Powers) : दूसरे विश्वयुद्ध में जर्मनी, इटली और जापान का गठबंधन।
- **भारतीय कोर** (Indian Corps) : पहले विश्वयुद्ध में फ़्रांस भेजी गई लाहौर और मेरठ डिवीज़नों की सेना।
- **खाई युद्ध** (Trench Warfare) : पहले विश्वयुद्ध का वह तरीका जिसमें सेनाएँ खाइयों में रहकर लंबे समय तक लड़ती थीं।
- **पश्चिमी मोर्चा** (Western Front) : पहले विश्वयुद्ध में फ़्रांस और बेल्जियम का युद्धक्षेत्र।
- **कूट-अल-अमारा** (Kut-al-Amara) : मेसोपोटामिया की वह जगह जहाँ 1916 में छठी (पूना) डिवीज़न ने हथियार डाले।
- **हाइफ़ा** (Battle of Haifa) : 23 सितंबर 1918 को जोधपुर और मैसूर लांसर्स का हाइफ़ा पर क़ब्ज़ा।
- **तीन मूर्ति** (Teen Murti Memorial) : नई दिल्ली में हाइफ़ा के भारतीय घुड़सवारों की याद में बना स्मारक।
- **इंडिया गेट** (All India War Memorial) : पहले विश्वयुद्ध और तीसरे आंग्ल-अफ़गान युद्ध के भारतीय शहीदों का स्मारक।
- **इम्फाल-कोहिमा** (Battles of Imphal and Kohima) : 1944 में जापानी हमले के ख़िलाफ़ लड़ी गई निर्णायक लड़ाई।
- **14वीं सेना** (Fourteenth Army) : जनरल विलियम स्लिम की बर्मा मोर्चे वाली सेना, जिसमें ज़्यादातर भारतीय सैनिक थे।
- **मोंटे कैसिनो** (Monte Cassino) : इटली की वह जगह जहाँ 1944 में भारतीय डिवीज़नें भीषण लड़ाई में उतरीं।
- **आज़ाद हिन्द फ़ौज** (Indian National Army) : सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व वाली सेना।
- **अस्थायी सरकार (आज़ाद हिन्द, Provisional Government of Free India)** : 21 अक्टूबर 1943 को बोस की सिंगापुर में बनाई सरकार।
- **रानी झाँसी रेजिमेंट** (Rani of Jhansi Regiment) : आज़ाद हिन्द फ़ौज की महिला रेजिमेंट, जिसकी नायक कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन थीं।

- **इंडियन इंडिपेंडेंस लीग** (Indian Independence League) : रासबिहारी बोस का दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीयों का आज़ादी संगठन।
- **दिल्ली चलो** (March to Delhi) : आज़ाद हिन्द फ़ौज का मशहूर नारा।
- **भारतीयकरण** (Indianisation) : सेना के अफ़सरों में भारतीयों को धीरे-धीरे शामिल करने की प्रक्रिया।
- **किंग्स कमीशन** (King's Commission) : ब्रिटिश सम्राट का दिया पूरा अफ़सर पद, जो 1917 के बाद भारतीयों के लिए खुला।
- **आठ इकाई योजना** (Eight Units Scheme) : 1923 की योजना, जिसमें भारतीय अफ़सर केवल आठ इकाइयों तक सीमित रहे।
- **स्कीन समिति** (Skeen Committee) : 1925 की इंडियन सैंडहर्स्ट कमेटी, जिसने भारत में सैन्य अकादमी की सिफ़ारिश की।
- **भारतीय सैन्य अकादमी** (Indian Military Academy) : 1932 में देहरादून में बना अफ़सर-प्रशिक्षण संस्थान।
- **पायनियर्स** (The Pioneers) : भारतीय सैन्य अकादमी के पहले बैच के कैडेट।
- **चैटफ़ील्ड समिति** (Chatfield Committee) : 1938-39 की समिति, जिसने सेना के आधुनिकीकरण की सिफ़ारिश की।
- **मशीनीकरण** (Mechanisation) : सेना में आधुनिक तकनीक, गाड़ियों और मशीनी हथियारों का आना।
- **संयुक्त शस्त्र** (Combined Arms) : सेना की अलग-अलग शाखाओं का मिल-जुलकर इस्तेमाल।
- **युद्ध की भेंट** (War Gift) : पहले विश्वयुद्ध में भारत की ओर से ब्रिटेन को दी गई लगभग दस करोड़ पाउंड की राशि।
- **बंगाल का अकाल (1943, Bengal Famine)** : दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान बंगाल में पड़ा भयंकर अकाल।
- **वायुसेना दिवस** (Air Force Day) : 8 अक्टूबर, भारतीय वायुसेना के बनने का दिन।
- **हाइफ़ा दिवस** (Haifa Day) : 23 सितंबर, हाइफ़ा की लड़ाई की याद में भारतीय सेना का दिवस।

6.7: स्व-मूल्यांकन परीक्षण (Self-Assessment Test)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. पहले और दूसरे विश्वयुद्ध में भारतीय सेना की भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. विश्वयुद्धों के बाद भारतीय सेना में हुए सुधारों की विवेचना कीजिए।
3. विश्वयुद्धों के परिणामों का भारत की राजनीतिक चेतना पर क्या असर पड़ा? मूल्यांकन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. विश्वयुद्धों के कोई चार कारण लिखिए।
2. भारतीय सेना के भारतीयकरण की प्रक्रिया संक्षेप में समझाइए।
3. आज़ाद हिन्द फ़ौज के गठन का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: हर प्रश्न के नीचे चार विकल्प दिए गए हैं। इनमें से सही विकल्प चुनिए।

1. पहले विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?
(अ) पोलैंड पर हमला
(ब) फ़्रांज़ फ़र्डिनांड की हत्या
(स) वर्साय संधि
(द) पर्ल हार्बर पर हमला

2. दूसरे विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण क्या था?
(अ) जर्मनी का पोलैंड पर हमला
(ब) साराजेवो हत्याकांड
(स) राष्ट्र संघ का बनना
(द) रूसी क्रांति

3. पहले विश्वयुद्ध में लगभग कितने भारतीयों ने हिस्सा लिया?

(अ) 5 लाख (ब) 13 लाख

(स) 25 लाख (द) 40 लाख

4. फ़्रांस भेजी गई भारतीय कोर किन डिवीज़नों से बनी थी?

(अ) लाहौर और मेरठ (ब) पूना और मद्रास

(स) दिल्ली और अंबाला (द) क्वेटा और पेशावर

5. विक्टोरिया क्रॉस पाने वाले पहले भारतीय सैनिक कौन थे?

(अ) ख़ुदादाद ख़ान (ब) दरवान सिंह नेगी

(स) गब्बर सिंह नेगी (द) मीर दस्त

6. दरवान सिंह नेगी किस रेजिमेंट के थे?

(अ) सिख रेजिमेंट (ब) गढ़वाल राइफ़ल्स

(स) गोरखा राइफ़ल्स (द) बलूच रेजिमेंट

7. कूट-अल-अमारा की घेराबंदी किस मोर्चे की घटना है?

(अ) पश्चिमी मोर्चा (ब) मेसोपोटामिया

(स) गैलीपोली (द) पूर्वी अफ़्रीका

8. हाइफ़ा की लड़ाई किस तारीख़ को हुई?

(अ) 23 सितंबर 1918 (ब) 11 नवंबर 1918

(स) 28 जून 1914 (द) 1 जुलाई 1916

9. हाइफ़ा पर क़ब्ज़ा करने वाली घुड़सवार इकाइयाँ कौन-सी थीं?

(अ) जोधपुर और मैसूर लांसर्स

(ब) स्किनर्स हॉर्स और हडसन्स हॉर्स

(स) पूना हॉर्स और सेंट्रल इंडिया हॉर्स

(द) डेक्कन हॉर्स और गाइड्स

10. इंडिया गेट की रूपरेखा किसने बनाई?

(अ) हर्बर्ट बेकर (ब) एडविन लुटियंस

(स) रॉबर्ट चिशोल्म (द) जॉर्ज विटेट

11. 1939 में भारत को युद्ध में शामिल घोषित करने वाला वायसराय कौन था?

(अ) लॉर्ड इरविन (ब) लॉर्ड लिनलिथगो

(स) लॉर्ड वेवेल (द) लॉर्ड माउंटबेटन

12. दूसरे विश्वयुद्ध में भारतीय सेना लगभग कितनी बड़ी हो गई?

(अ) 13 लाख (ब) 20 लाख

(स) 25 लाख (द) 50 लाख

13. केरेन की लड़ाई (1941) किस देश में हुई?

(अ) लीबिया (ब) इरिट्रिया

(स) इटली (द) बर्मा

14. मोंटे कैसिनो की लड़ाई किस देश में हुई?

(अ) फ़्रांस (ब) इटली

(स) ग्रीस (द) मिस्र

15. इम्फाल-कोहिमा की लड़ाइयाँ किस साल हुईं?

(अ) 1942 (ब) 1943

(स) 1944 (द) 1945

16. बर्मा मोर्चे पर 14वीं सेना के सेनापति कौन थे?

(अ) विलियम स्लिम (ब) ऑकिनलेक

(स) मोंटगोमरी (द) वेवेल

17. पहली आज़ाद हिन्द फ़ौज किसने बनाई?

(अ) सुभाषचंद्र बोस (ब) मोहन सिंह

(स) रासबिहारी बोस (द) शाहनवाज़ ख़ान

18. आज़ाद हिन्द की अस्थायी सरकार कब बनी?

(अ) 21 अक्टूबर 1943 (ब) 15 अगस्त 1942

(स) 4 जुलाई 1943 (द) 14 अप्रैल 1944

19. आज़ाद हिन्द फ़ौज ने भारत की धरती पर तिरंगा कहाँ फहराया?

(अ) कोहिमा (ब) मोइरांग

(स) इम्फाल (द) पोर्ट ब्लेयर

20. रानी झाँसी रेजिमेंट की नायक कौन थीं?

(अ) अरुणा आसफ़ अली (ब) लक्ष्मी स्वामीनाथन

(स) सुचेता कृपलानी (द) सरोजिनी नायडू

21. लाल किला मुक़दमे में इनमें से कौन अभियुक्त नहीं था?

(अ) शाहनवाज़ ख़ान (ब) प्रेम कुमार सहगल

(स) गुरबख़्श सिंह ढिल्लों (द) मोहन सिंह

22. लाल किला मुक़दमे में अभियुक्तों के मुख्य वकील कौन थे?

(अ) भूलाभाई देसाई (ब) सरदार पटेल

(स) राजेंद्र प्रसाद (द) सी. राजगोपालाचारी

23. भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून कब बनी?

(अ) 1922 (ब) 1928

(स) 1932 (द) 1947

24. भारत में सैन्य अकादमी की सिफ़ारिश करने वाली इंडियन सैंडहर्स्ट कमेटी किस नाम से जानी जाती है?

(अ) चैटफ़ील्ड समिति (ब) स्कीन समिति

(स) पील आयोग (द) ईडन आयोग

25. 'आठ इकाई योजना' किस साल लागू हुई?

(अ) 1918 (ब) 1923

(स) 1932 (द) 1939

26. भारतीय वायुसेना किस तारीख़ को बनी?

(अ) 8 अक्टूबर 1932 (ब) 1 अप्रैल 1933

(स) 15 जनवरी 1949 (द) 4 दिसंबर 1934

27. रॉयल इंडियन मरीन को रॉयल इंडियन नेवी कब बनाया गया?

(अ) 1612 (ब) 1892

(स) 1934 (द) 1950

28. 1938-39 में सेना के आधुनिकीकरण के लिए कौन-सी समिति बनी?

(अ) स्कीन समिति (ब) चैटफ़ील्ड समिति

(स) चेटवुड समिति (द) साइमन आयोग

29. भारतीय सैन्य अकादमी के पहले बैच के कैडेट क्या कहलाते हैं?

(अ) पायनियर्स (ब) पैट्रियट्स

(स) कैडेट्स ऑफ़ ऑनर (द) ब्रेव्स

30. बंगाल का भयंकर अकाल किस साल पड़ा?

(अ) 1919 (ब) 1931

(स) 1943 (द) 1946

(ब) रिक्त स्थान भरिए

1. पहला विश्वयुद्ध _____ से 1918 तक चला।

2. न्यूव शैपेल में मरणोपरांत विक्टोरिया क्रॉस पाने वाले राइफ़लमैन _____ थे।

3. कूट-अल-अमारा में हथियार डालने वाली डिवीज़न _____ डिवीज़न थी।

4. मेजर दलपत सिंह को '_____ का नायक' कहा जाता है।

5. दूसरे विश्वयुद्ध में लगभग _____ भारतीय सैनिक शहीद हुए।

6. सुभाषचंद्र बोस का नारा था: 'तुम मुझे ख़ून दो, मैं तुम्हें _____ दूँगा'।

7. आज़ाद हिन्द सरकार ने अंडमान का नाम _____ द्वीप रखा।

8. भारतीय सैन्य अकादमी का उद्घाटन _____ 1932 को हुआ।

9. सैम मानेकशॉ आगे चलकर भारत के पहले _____ बने।

10. भारतीय वायुसेना को 'रॉयल' उपाधि _____ में मिली।

(स) सही या गलत बताइए

1. पहले विश्वयुद्ध में भारत मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ा।

2. दूसरे विश्वयुद्ध के धुरी राष्ट्रों में जर्मनी, इटली और जापान थे।

3. भारतीय पैदल डिवीज़नें पहले विश्वयुद्ध के अंत तक फ़्रांस में ही रहीं।

4. दूसरे विश्वयुद्ध की भारतीय सेना इतिहास की सबसे बड़ी स्वैच्छिक सेना थी।

5. इम्फाल-कोहिमा में जापानी सेना जीती।

6. आज़ाद हिन्द की अस्थायी सरकार टोक्यो में बनी।

7. लाल किला मुक़दमों ने देश में राष्ट्रीय एकता की भावना को बल दिया।

8. भारतीय सैन्य अकादमी बनने से पहले भारतीयों को अफ़सर प्रशिक्षण के लिए सैंडहर्स्ट जाना पड़ता था।

9. चैटफ़ील्ड समिति ने घुड़सवार सेना को घोड़ों पर ही रखने की सिफ़ारिश की।

10. वायुसेना दिवस हर साल 8 अक्टूबर को मनाया जाता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

(अ) बहुविकल्पीय प्रश्न:

1. (ब) फ़्रांज़ फ़र्डिनांड की हत्या	2. (अ) जर्मनी का पोलैंड पर हमला	3. (ब) 13 लाख
4. (अ) लाहौर और मेरठ	5. (अ) ख़ुदादाद ख़ान	6. (ब) गढ़वाल राइफ़ल्स
7. (ब) मेसोपोटामिया	8. (अ) 23 सितंबर 1918	9. (अ) जोधपुर और मैसूर लांसर्स
10. (ब) एडविन लुटियंस	11. (ब) लॉर्ड लिनलिथगो	12. (स) 25 लाख
13. (ब) इरिट्रिया	14. (ब) इटली	15. (स) 1944
16. (अ) विलियम स्लिम	17. (ब) मोहन सिंह	18. (अ) 21 अक्टूबर 1943
19. (ब) मोइरांग	20. (ब) लक्ष्मी स्वामीनाथन	21. (द) मोहन सिंह
22. (अ) भूलाभाई देसाई	23. (स) 1932	24. (ब) स्कीन समिति
25. (ब) 1923	26. (अ) 8 अक्टूबर 1932	27. (स) 1934
28. (ब) चैटफ़ील्ड समिति	29. (अ) पायनियर्स	30. (स) 1943

(ब) रिक्त स्थान:

1. 1914	2. गब्बर सिंह नेगी
3. छठी (पूना)	4. हाइफ़ा
5. 87,000	6. आज़ादी
7. शहीद	8. 1 अक्टूबर
9. फ़ील्ड मार्शल	10. 1945

(स) सही या गलत:

1. सही	2. सही	3. गलत	4. सही	5. गलत
6. गलत	7. सही	8. सही	9. गलत	10. सही

6.8: अपनी प्रगति जाँचिए के उत्तर (Answers to Check Your Progress)

1. पहला विश्वयुद्ध 1914 से 1918 तक और दूसरा 1939 से 1945 तक लड़ा गया।
2. 1914 में साराजेवो में ऑस्ट्रिया के युवराज फ़्रांज़ फ़र्डिनांड की हत्या।
3. लगभग पच्चीस लाख, जो इतिहास की सबसे बड़ी स्वैच्छिक सेना थी।
4. नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने।
5. सेना के अफ़सरों में भारतीयों को धीरे-धीरे भर्ती और नियुक्त करने की प्रक्रिया, जबकि पहले ये पद लगभग केवल यूरोपीयों के पास थे।

6.9: संदर्भ एवं सहायक पुस्तकें (References and Suggested Readings)

1. बिपिन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास।
2. सुमित सरकार, मॉडर्न इंडिया: 1885 से 1947।
3. स्टीफ़न पी. कोहेन, द इंडियन आर्मी: इट्स कॉन्ट्रिब्यूशन टू द डेवलपमेंट ऑफ़ अ नेशन।

4. पर्सिवल स्पीयर, अ हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, खंड 2।

5. यास्मीन ख़ान, द राज एट वॉर: अ पीपल्स हिस्ट्री ऑफ़ इंडियाज़ सेकंड वर्ल्ड वॉर।

6. सुगत बोस, हिज़ मैजेस्टीज़ अपोनेंट: सुभाषचंद्र बोस।

7. भारतीय सेना का आधिकारिक इतिहास, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

NOTES